36वाँ राष्ट्रीय फिल्म समारोह 1989

36TH NATIONAL FILM FESTIVAL 1989

विषय सूची

पृष्ठ संख्या
Page No

CONTENTS

दादा साहेब फाल्के पुरस्कार	5	Dada Saheb Phalke Award for 1988
निर्णायक मण्डल	8	The Juries
कथाचित्र पुरस्कार	11	**AWARDS FOR FEATURE FILMS**
सर्वोत्तम कथाचित्र	12	Best Feature Film
निर्देशक की सर्वोत्तम प्रथम फिल्म के लिए इंदिरा गांधी पुरस्कार	14	Indira Gandhi Award for Best First Film of a Director
लोकप्रिय एवं स्वस्थ मनोरंजन प्रदान करने वाली सर्वोत्तम कथाचित्र पुरस्कार	16	Best Film Providing Popular and Wholesome Entertainment
राष्ट्रीय एकता पर सर्वोत्तम कथाचित्र के लिए नरगिस दत्त पुरस्कार	18	Nargis Dutt Award for Best Film on National Integration
सामाजिक विषयों पर सर्वोत्तम कथाचित्र पुरस्कार	20	Best Film on Other Social Issues...
सर्वोत्तम बाल फिल्म	22	Best Children's Film
सर्वोत्तम निर्देशन	24	Best Director
सर्वोत्तम अभिनेता	26	Best Actor
सर्वोत्तम अभिनेत्री	28	Best Actress
सर्वोत्तम सह-अभिनेता	30	Best Supporting Actor
सर्वोत्तम सह-अभिनेत्री	32	Best Supporting Actress
सर्वोत्तम बाल कलाकार	34	Best Child Artiste
सर्वोत्तम पार्श्व गायक	36	Best Male Playback Singer
सर्वोत्तम पार्श्व गायिका	38	Best Female Playback Singer
सर्वोत्तम छायांकन	40	Best Cinematography
सर्वोत्तम पटकथा	42	Best Screenplay
सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन	44	Best Audiography
सर्वोत्तम संपादन	46	Best Editing
सर्वोत्तम कला निर्देशन	48	Best Art Direction
सर्वोत्तम वेशभूषा	50	Best Costume Designing
सर्वोत्तम संगीत निर्देशन	52	Best Music Direction
सर्वोत्तम गीत	54	Best Lyric
विशेष निर्णायक मण्डल पुरस्कार	56	Special Jury Award
सर्वोत्तम असमिया फिल्म	58	Best Assamese Film
सर्वोत्तम हिन्दी फिल्म	60	Best Hindi Film
सर्वोत्तम कन्नड़ फिल्म	62	Best Kannada Film
सर्वोत्तम मलयालम फिल्म	64	Best Malayalam Film
सर्वोत्तम उड़िया फिल्म	66	Best Oriya Film
सर्वोत्तम तेलुगु फिल्म	68	Best Telugu Film
सर्वोत्तम अंग्रेजी भाषा फिल्म	70	Best Film in English Language
विशेष उल्लेख	72	Special Mention
पुरस्कार जो नहीं दिए गए	74	Awards Not Given

गैर-कथाचित्र पुरस्कार	75	**AWARDS FOR NON-FEATURE FILMS**
सर्वोत्तम गैर-कथाचित्र	76	Best Non-Feature Film
सर्वोत्तम मानवशास्त्रीय/मानवजातीय फिल्म	78	Best Anthropological/Ethnographic Film
सर्वोत्तम कला/सांस्कृतिक फिल्म	80	Best Arts/Cultural Film
सर्वोत्तम वैज्ञानिक फिल्म (पर्यावरण तथा परिस्थिति विज्ञान सहित)	82	Best Scientific (including Environment and Ecology) Film
सर्वोत्तम औद्योगिक फिल्म	84	Best Industrial Film
सर्वोत्तम कृषि फिल्म	86	Best Agricultural Film
सामाजिक मुद्दों पर सर्वोत्तम फिल्म	88	Best Film on Social Issues
सर्वोत्तम शैक्षिक/अभिप्रेरक फिल्म	90	Best Educational/Motivational Film
सर्वोत्तम समाचार चित्र	92	Best News Film
निर्णायक मण्डल विशेष पुरस्कार	94	Special Jury Award
सर्वोत्तम लघु कल्पित फिल्म	96	Best Short Fiction Film
सर्वोत्तम परिवार कल्याण फिल्म	98	Best Family Welfare Film
विशेष उल्लेख	102	Special Mention
पुरस्कार जो नहीं दिए गए	104	Awards Not Given
सिनेमा पर सर्वोत्तम लेखन पुरस्कार	105	**AWARDS FOR THE BEST WRITING ON CINEMA**
सर्वोत्तम सिनेमा पुस्तक	106	Best Book on Cinema
सर्वोत्तम सिनेमा पत्रकार	108	Best Film Journalist
कथासार : कथाचित्र	111	**Synopses: Feature Films**
बन्नडा वेशा (कन्नड़)	112	Bannada Vesha (Kannada)
दासी (तेलुगु)	113	Dasi (Telugu)
एक दिन अचानक (हिन्दी)	114	Ek Din Achanak (Hindi)
इन विच एन्नी गिव्स इट दोज वन्स (अंग्रेजी)	115	In Which Annie Gives It Those Ones (English)
किचि स्मृति किचि अनुभूति (उड़िया)	116	Kichi Smruti Kichi Anubhuti (Oriya)
कोलाहल (असमिया)	117	Kolahal (Assamese)
मैं जिन्दा हूं (हिन्दी)	118	Main Zinda Hoon (Hindi)
मनु अंकल (मलयालम)	119	Manu Uncle (Malayalam)
पिरवी (मलयालम)	120	Piravi (Malayalam)
कयामत से कयामत तक (हिन्दी)	121	Qayamat Se Qayamat Tak (Hindi)
राख (हिन्दी)	122	Raakh (Hindi)
रूद्र वीणा (तेलुगु)	123	Rudra Veena (Telugu)
रूगमिणी (मलयालम)	124	Rugmini (Malayalam)
सलाम बाम्बे (हिन्दी)	125	Salaam Bombay (Hindi)
तृषाग्नि (हिन्दी)	126	Trishagni (Hindi)
वैशाली (मलयालम)	127	Vaisali (Malayalam)
वसुन्धरा (हिन्दी)	128	Vasundhra (Hindi)

कथासार : गैर-कथाचित्र	129	**Synopses: Non-Feature Films**
बिफोर माई आईज	130	Before My Eyes
चिट्ठी	130	Chitthi
डिस्पोजेशन	131	Dispossession
द ड्यो	131	The Duo
कनक पुरन्दर	132	Kanaka-Purandara
लछमी	132	Lacchmi
मा उरू	133	Maa Ooru
मोर दैन ए सक्सैस स्टोरी (समाचार चित्र सं.-129)	133	More Than A Success Story (News Magazine No. 129)
निर्णय	134	Nirnay
रिकन्सट्रक्टीव सर्जरी लेपरोसी (हैंड)	134	Reconstructive Surgery Leprosy (Hand)
स्क्रोल पेन्टर्ज आफ बीरभूम (पटुआ)	135	Scroll Painters of Birbhum (Patua)
सीड्स आफ होप	135	Seeds of Hope
द स्टोरी आफ टिबल्यू	136	The Story of Tiblu
वाईसिज फरोम बलियापल	136	Voices From Baliapal

दादा साहेब फाल्के पुरस्कार

DADA SAHEB PHALKE AWARD

दादा साहेब फाल्के पुरस्कार 1988:

अशोक कुमार

स्वर्ण कमल, एक लाख रुपये का नकद पुरस्कार और एक शॉल।

अशोक कुमार को सदाबहार हीरो कहा जाता है। हिन्दी सिनेमा के इस लोकप्रिय अभिनेता का जन्म 13 अक्तूबर 1911 को बिहार में भागलपुर में हुआ। उनके पिता मध्य प्रदेश के एक प्रसिद्ध वकील थे। बचपन में उनका नाम कुमुद लाल रखा गया।

उच्च शिक्षा के लिए उन्होंने जबलपुर के राबटसन कालेज में प्रवेश लिया। उस समय उनकी खेल कूद और फोटोग्राफी में गहरी रूचि थी। स्नातक की परीक्षा पास करने के बाद वे न्यू थिएटर स्टूडियो में प्रयोगशाला में सहायक के रूप में काम करने लगे। कुछ समय बाद उनके जीजा शशधर मुखर्जी ने जो उस समय बम्बई टाकीज में ध्वनि आलेखक थे, उन्हें हिमांशु राय्य की देख-रेख में प्रयोगशाला सहायक के रूप में काम दिलाया। हिमांशु राय ने उन्हें एक बार गाना गाते सुना तो उन्हें स्क्रीन टैस्ट देने को कहा। अपने पिता के डर के मारे कुमुद लाल ने फिल्म में अभिनय करने से बचने की कोशिश की लेकिन 1936 में वे **जीवन-नैया** फिल्म के नायक बने। फ्रैंच ओस्टन के निर्देशन में बनी इस फिल्म में उन्होंने देविका रानी के साथ कार्य किया और अपने गाने खुद गाये। इस फिल्म के साथ ही वे अशोक कुमार के नाम से हिन्दी फिल्मों के लोकप्रिय अभिनेता के रूप में सामने आये। इसके बाद फिल्मी क्षेत्र में उनके कदम सदा आगे बढ़ते रहे। उस युग में अशोक कुमार और देविका रानी की जोड़ी अत्यन्त सफल हुई और उन्होंने **जन्मभूमि, इज्जत, अछूत कन्या, सावित्री, प्रेम कहानी, कंगन, निर्मला, वचन, बन्धन, झूला** और **अंजान** फिल्मों में शानदार अभिनय किया।

1942 में अशोक कुमार बाम्बे टाकिज को छोड़कर फिल्मिस्तान में काम करने लगे। **शिकारी** और **साजन** फिल्मों की सफलता ने अशोक कुमार को श्रेष्ठ योग्यता वाला अभिनेता बना दिया। कमाल अमरोही द्वारा निर्देशित फिल्म **महल** की अपार सफलता से अशोक कुमार हिन्दी सिनेमा के सर्वाधिक लोकप्रिय अभिनेता के रूप में चमक उठे।

अपने 55 वर्ष के फिल्मी जीवन में अशोक कुमार ने फिल्म जगत की सर्वाधिक सुन्दर और प्रतिभाशाली अभिनेत्रियों के साथ काम किया है। उन्होंने युवा नायक, खलनायक और बाद में चरित्र भूमिकाओं में अपनी स्वस्थ अभिनय क्षमता का परिचय दिया है। 1960 के दशक तक अशोक कुमार लोकप्रिय हीरो के रूप में प्रतिष्ठित रहे। 1963 में बनी बिमल राय की फिल्म **बन्दिनी** अशोक कुमार की अभिनय-क्षमता की उच्चता की प्रतीक है। 1972 में **विक्टोरिया 203** फिल्म ने सफलता के नये रिकार्ड बनाये, जिसमें उन्होंने प्राण के साथ बड़ी उम्र के दो ठगों की भूमिकायें निभायीं। बम्बई फिल्म जगत में दादा मणि नाम से विख्यात अशोक कुमार ने अनेक पुरस्कार प्राप्त किये है। आशीर्वाद फिल्म के लिए उन्हें सर्वोत्तम अभिनेता का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। ज्योतिष, होम्योपैथी और संगीत में अशोक कुमार की विशेष रूचि है।

DADA SAHEB PHALKE AWARD FOR 1988:

ASHOK KUMAR

Swarna Kamal, a Cash Prize of Rs. 1,00,000 and a Shawl

Ashok Kumar, variously described as the evergreen hero, the veteran thespian, a living legend, was born on October 13, 1911, in Bhagalpur, Bihar. The son of an eminent and prosperous lawyer from Madhya Pradesh, he was named Kumudlal.

By the time he joined Robertson College in Jabalpur he was a handsome young lad with a keen interest in photography and sports. After graduation, he joined the New Theatres studio as an assistant in the laboratory. After a while his brother-in-law, Shashadhar Mukherjee, the well known producer, who was then a sound recordist at Bombay Talkies, got him employed as a laboratory assistant, this time in Himanshu Rai's empire. Himanshu Rai once heard him singing a song and insisted on giving him a screen test. Fearing his father's wrath, Kumudlal tried to wriggle out of a film role, but ultimately became the hero of **Jeevan Naiya** (1936), directed by Franz Osten, wherein he acted opposite Devika Rani and sang his own songs, and was transformed in the process into the ever-young, much-loved actor of the Hindi screen—Ashok Kumar. From then on there was no looking back in his career. Devika Rani and Ashok Kumar presented the most successful pair of the era in films like **Janmabhoomi, Izzat,** the record-breaking **Achhut Kanya, Savitri, Prem Kahani, Kangan, Nirmala, Vachan, Bandhan, Jhoola** and **Anjan**.

In 1942, Ashok Kumar left Bombay Talkies to join Filmistan, run by S. Mukherjee. **Shikari** and **Sajan** soon established him as an actor of outstanding ability. **Mahal**, directed by Kamal Amrohi, was a huge success, and Ashok Kumar became the most coveted actor on the Hindi screen.

In his screen career spanning five decades and a half, Ashok Kumar has acted with the most beautiful and the most talented of actresses in filmdom. As an actor he has excelled equally in the roles of the young hero, a villain, or as in later years as a character actor of great versatility. Till the sixties, Ashok Kumar remained a popular hero. Bimal Roy's **Bandini,** made in 1963, remains an example of his vivacity and range as an actor. In 1972 came the unusual box office success, **Victoria No. 203** wherein he and Pran performed as two elderly crooks.

Known as Dadamoni in the Bombay film industry, Ashok Kumar is an universally popular personality. Having won a number of awards as an actor including the Best Actor Award for his role in **Ashirwad** in the National Film Festival, he has retained his personal interest in astronomy, homeopathy and music, a rather off-beat collection of hobbies.

कथाचित्र निर्णायक मण्डल सूची

JURY FOR FEATURE FILMS

श्री तपन सिन्हा, अध्यक्ष
Shri Tapan Sinha, Chairman

श्री बालू महेन्द्रा
Shri Balu Mahendra

श्री भारती राजा
Shri Bharathi Rajaa

श्री भास्कर चन्दावकर
Shri Bhaskar Chandavarkar

श्री बिमल दत्त
Shri Bimal Dutt

श्री चारु कमल हजारिका
Shri Charu Kamal Hazarika

श्री धीरा बिस्वाल
Shri Dhira Biswal

श्री जतिन दास
Shri Jatin Das

डॉ॰ जे.पी. दास
Dr. J.P. Das

श्रीमती जयू पटवर्धन
Smt. Jayoo Patwardhan

श्री लक्ष्मी दीपक
Shri Lakshmi Deepak

श्री एन. लक्ष्मीनारायन
Shri N. Lakshmi Narayan

श्री निरंजन राय
Shri Niranjan Roy

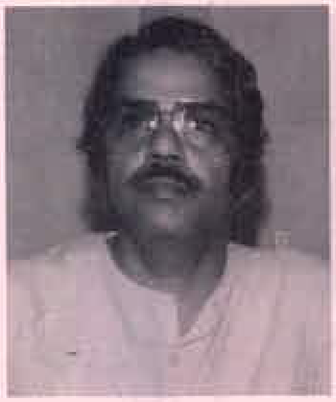

श्री सी. राधाकृष्णन्
Shri C. Radhakrishnan

डॉ॰ वी. राजकृष्णन
Dr. V. Raj Krishnan

श्री वसन्त चौधरी
Shri Vasant Chaudhury

गैर-कथाचित्र

JURY FOR NON-FEATURE FILMS

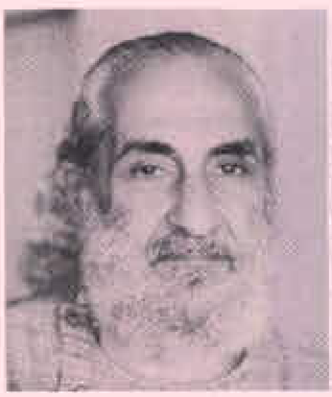

श्री होमी डी. सेठाना, अध्यक्ष
Shri Homi D. Sethna, Chairman

श्री जगमोहन
Shri Jag Mohan

श्री समिरन दत्त
Shri Samiran Dutta

श्री राम मोहन
Shri Ram Mohan

श्री राजीव मेहरोत्रा
Shri Rajiv Mehrotra

सर्वोत्तम सिनेमा लेखन

JURY FOR THE BEST WRITING ON CINEMA

श्री चिदानन्द दासगुप्ता, अध्यक्ष
Shri Chidananda Dasgupta, Chairman

श्री एम.एफ. थामस
Shri M.F. Thomas

श्री विनोद तिवारी
Shri Vinod Tiwari

कथाचित्र पुरस्कार

AWARDS FOR FEATURE FILMS

सर्वोत्तम कथाचित्र पुरस्कार

पिरवी (मलयालम)

निर्माता **एस. जयचन्द्रन नायर** को स्वर्ण कमल तथा 50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।
निर्देशक **शाजी एन. करुण** को स्वर्ण कमल और 25,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम कथाचित्र का 1988 का पुरस्कार मलयालम फिल्म **पिरवी** को मानवीय पीड़ा की गहरी संवेदना के साथ सृजनात्मक अभिव्यक्ति के लिए दिया गया है।

award for the best feature film

PIRAVI

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 50,000 to the Producer, S. Jayachandran Nair.

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 25,000 to the Director, Shaji N. Karun.

citation

The Award for the Best Feature Film of 1988 is given to the Malayalam Film PIRAVI for the creative evocation of human pathos with refined cinematic sensitivity.

एस. जयचन्द्रन नायर कला कौमुदी प्रकाशन समूह में त्रिवेन्द्रम में संपादक के रूप में काम करते हैं, इन्होंने **पिरवी** फिल्म की कहानी लिखी और इसकी पटकथा लिखने में रघुनाथ पलेरी और शाजी एन. करुण को सहयोग दिया।

शाजी एन. करुण जाने माने छायाकार हैं। 38 वर्ष के शाजी एन. करुण ने जी. अरविन्दन की फिल्मों का छायांकन किया है। इन्हें छायांकन के लिए अनेक राज्य और राष्ट्रीय पुरस्कार मिले हैं। निर्देशक के रूप में **पिरवी** उनकी पहली फिल्म है। इस समय वे केरल राज्य फिल्म विकास निगम के त्रिवेन्द्रम स्थित चित्रांजली फिल्म स्टूडियो में प्रबन्धक के रूप में काम कर रहे हैं।

S. JAYACHANDRAN NAIR is editor with the Kala Kaumudi group of publications, Trivandrum. Wrote the story of PIRAVI, and collaborated in writing the script with Raghunath Paleri and Shaji N. Karun.

SHAJI N. KARUN, 38, is a wellknown cinematographer who has photographed G. Aravindan's films. Won many National and State awards for cinematography. PIRAVI is his first feature film as director. Presently working as manager, Chitranjali Film Studio (Trivandrum) of the Kerala State Film Development Corporation.

निर्देशक की सर्वोत्तम प्रथम फिल्म के लिए इंदिरा गांधी पुरस्कार

तृषाग्नि (हिन्दी)

निर्माता **नबेन्दु घोष** को स्वर्ण कमल और 25,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।
निर्देशक **नबेन्दु घोष** को स्वर्ण कमल और 25,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

निर्देशक की सर्वोत्तम प्रथम फिल्म के लिए 1988 का पुरस्कार हिन्दी फिल्म **तृषाग्नि** को भारतीय सिनेमा में एक जटिल दार्शनिक विषय को पहली बार सुन्दरता के साथ प्रस्तुत करने के लिए दिया गया है।

indira gandhi award for the best first film of a director

TRISHAGNI

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 25,000 to the Producer, Nabendu Ghosh.

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 25,000 to the Director, Nabendu Ghosh.

citation

The Indira Gandhi Award for the Best First Film of a Director of 1988 is given to the Hindi Film TRISHAGNI for excellent exploration of a complex philosophical theme for the first time in Indian cinema.

नबेन्दु घोष अंग्रेजी साहित्य में एम.ए. हैं। वे बिहार सरकार में नौकरी करते थे लेकिन भारत छोड़ो आंदोलन के बारे में उपन्यास लिखने के बारे में उन्हें नौकरी छोड़नी पड़ी। उन्होंने बिमल राय, गुरु दत्त, राज खोसला, ऋषिकेश मुखर्जी, बासु भट्टाचार्य, दुलाल गुहा, असित सेन, मोहन सहगल, सत्येन बोस, और सुभाष घई जैसे फिल्मकारों के लिए साठ से अधिक हिन्दी फिल्मों की पटकथा लिखी है। **मझली दीदी** और **तीसरी कसम** के लिए उन्हें अनेक पुरस्कार तथा सम्मान मिले। नबेन्दु घोष के लगभग एक दर्जन उपन्यास और कहानी संग्रह प्रकाशित हुए हैं। इनमें से अनेक पुस्तकों का हिन्दी, उर्दू, गुजराती, मराठी और कन्नड़ भाषा में अनुवाद हुआ है। वे 1983 के राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार निर्णायक मण्डल के सदस्य रह चुके हैं। उन्होंने फिल्म संगठनों में जिम्मेदारी के कई पदों पर कार्य किया है।

NABENDU GHOSH is a post-graduate in English literature. Lost his job in Bihar Secretariat when he wrote a novel on the Quit India movement. Has scripted over 60 Hindi films for Bimal Roy, Guru Dutt, Raj Khosla, Hrishikesh Mukherjee, Basu Bhattacharya, Dulal Guha, Asit Sen, Mohan Sehgal, Satyen Bose and Subhash Ghai. MAJHLI DIDI and TEESRI KASAM have brought him many awards and honours. Has written about a dozen novels and a dozen collections of short stories, many of which have been translated into Hindi, Urdu, Gujarati, Marathi and Kannada. Was a member of the 1983 National Awards Jury and held many responsible positions in film organisations.

लोकप्रिय एवम् स्वस्थ मनोरंजन प्रदान करने वाले सर्वोत्तम कथाचित्र का पुरस्कार

कयामत से कयामत तक (हिन्दी/उर्दू)

निर्माता **मैसर्स नासिर हुसैन फिल्मस** को स्वर्ण कमल और 40,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।
निर्देशक **मन्सूर खान** को स्वर्ण कमल और 20,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

लोकप्रिय एवम् स्वस्थ मनोरंजन प्रदान करने वाले सर्वोत्तम कथाचित्र का 1988 का पुरस्कार हिन्दी/उर्दू फिल्म **कयामत से कयामत तक** को सजीव कल्पना के साथ फिल्मी पर्दे पर प्रेम को नये अंदाज में प्रस्तुत करने के लिए दिया गया है।

award for the best film providing popular and wholesome entertainment

QAYAMAT SE QAYAMAT TAK

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 40,000 to the Producer, M/s. Nasir Husain Films.

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 20,000 to the Director, Mansoor Khan.

citation

The Award for the Best Feature Film providing popular and wholesome entertainment for 1988 is given to the Hindi/Urdu Film QAYAMAT SE QAYAMAT TAK for presenting fresh and clean charm on celluloid with discerning imagination.

नासिर हुसैन फिल्मस की स्थापना जाने माने लेखक निर्देशक नासिर हुसैन खान ने की। उन्होंने 1947 में फिल्मिस्तान स्टूडियो में काम करना शुरू किया और 6 फिल्में लिखी और बाद में उन्होंने दो अत्यन्त लोकप्रिय फिल्मों-**तुम सा नहीं देखा** (फिल्मिस्तान के लिए) और **दिल दे के देखो** (फिल्मालय के लिए) की पटकथा लिखी और उनका निर्देशन भी किया। मैसर्स नासिर हुसैन फिल्म ने दस फिल्मों का निर्माण किया है। ये हैं **जब प्यार किसी से होता है, फिर वही दिल लाया हूँ, तीसरी मंजिल, बहारों के सपने, प्यार का मौसम, यादों की बारात, हम किसी से कम नहीं, जमाने को दिखाना है, मंजिल मंजिल,** और **कयामत से कयामत तक।**

मन्सूर हुसैन खान ने बम्बई के भारतीय टैक्नोलोजी संस्थान में इंजीनियरी की पढ़ाई की। उन्होंने कोरनिल विश्वविद्यालय इथाका एफ.आई.टी में कंप्यूटर इंजीनियरी की शिक्षा ली। उन्होंने वीडियो कम्पनी शुरू की और **अन्दर बाहर** फिल्म तथा एक दूरदर्शन धारावाहिक का निर्माण किया। उन्होंने टैली फिल्म **अम्बैरटो** की पटकथा, निर्माण और निर्देशन किया। **कयामत से कयामत तक** निर्देशक के रूप में उनका पहला कथाचित्र है।

NASIR HUSAIN FILMS was started by Nasir Husain Khan, the wellknown writer-director, who joined Filmistan studios in 1947 and wrote six films. Later he wrote and directed two run-away hits—TUMSA NAHIN DEKHA (for Filmistan) and DIL DEKE DEKO (for Filmalaya). NASIR HUSAIN FILMS has produced ten films—JAB PYAR KISISE HOTA HAI, PHIR WOHI DIL LAYAA HOON, TEESRI MANZIL, BAHARON KE SAPNE, PYAR KA MAUSAM, YAADON KI BAARAAT, HUM KISISE KUM NAHIN, ZAMANE KO DIKHANA HAI, MANZIL MANZIL and QAYAMAT SE QAYAMAT TAK.

MANSOOR HUSAIN KHAN studied engineering at IIT, Bombay, and computer engineering at Cornell University—Ithaca and MIT. Started a video company for production and post-production facilities; produced ANDHAR BAHAR, and a TV serial; wrote, produced and directed UMBERTO, a telefilm. QAYAMAT SE QAYAMAT TAK is his first feature film as director.

राष्ट्रीय एकता पर सर्वोत्तम कथाचित्र का नर्गिस दत्त पुरस्कार

रुद्र वीणा (तेलुगु)

निर्माता **के. नगेन्द्र बाबू** को रजत कमल और 30,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **के. बालचन्दर** को रजत कमल और 15,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

राष्ट्रीय एकता का सर्वोत्तम कथाचित्र का 1988 का पुरस्कार तेलुगु फिल्म **रुद्र वीणा** को संगीत के माध्यम से सामाजिक अखंडता लाने और इस प्रकार सांस्कृतिक क्रान्ति को ग्रामीण लोगों की भिन्नताओं के समाधान के रूप में प्रस्तुत करने के लिए दिया गया है।

nargis dutt award for the best feature film on national integration

RUDRA VEENA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 30,000 to the Producer, K. Nagendra Babu.

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 15,000 to the Director, K. Balachander.

citation

The Nargis Dutt Award for the Best Feature Film on National Integration of 1988 is given to the Telugu Film RUDRA VEENA for presenting vertical as well as horizontal social integration on a musical plane and thus offering a cultural revolution as solution to maladies of the rural population.

के. नगेन्द्र बाबू ने कानून की स्नातक डिग्री प्राप्त की है। उन्होंने अपना फिल्मी जीवन एक तेलुगु फिल्म में अभिनेता के रूप में आरम्भ किया। अब तक उन्होंने तीन फिल्मों में अभिनय किया है। उनके भाई चिरंजीवी ने, जो तेलुगु सिनेमा के सुपर स्टार हैं, उन्हें अच्छी और सार्थक फिल्म बनाने के लिए प्रोत्साहित किया। के. नगेन्द्र बाबू ने **रूद्र वीणा** सहित इस तरह की दो तेलुगु फिल्मों का निर्माण किया है।

के. बालचन्दर अपनी फिल्म **नीरकुमिझी** (1965) से ही प्रसिद्ध हो गये थे। उन्होंने तमिल, तेलुगु, कन्नड़, और हिन्दी फिल्मों का लेखन और निर्देशन किया है। उनकी चार फिल्मों **इरूकोडुगल, अपूर्व रांगल, तन्नीर-तन्नीर और अच्चेमिल्ले अच्चेमिल्ले** को क्रमशः वर्ष 1970, 1974, 1981, 1984 को तमिल फिल्मों के लिए राष्ट्रीय रजत पुरस्कार प्रदान किये गये। **तन्नीर तन्नीर** को सर्वोत्तम पटकथा के लिए भी रजत कमल मिला। उनकी हिन्दी फिल्म **एक दूजे के लिए** अपने दशक की सर्वाधिक सफल हिन्दी फिल्मों में थी। 1983 के राष्ट्रीय फिल्म समारोह में वे कथाचित्र निर्णायक मण्डल के अध्यक्ष रह चुके हैं। उन्हें पद्मश्री से सम्मानित किया गया है।

K. NAGENDRA BABU, a graduate in law, started his career as an actor in a Telugu film and has acted in three films so far. His brother, Chiranjeevi, a superstar of Telugu cinema, encouraged him to make purposeful quality films and has produced two such films in Telugu, including RUDRA VEENA.

K. BALACHANDER, who shot into fame with his very first film NEERKUMIZHI (1965), has written and directed over 80 feature films in Tamil, Telugu, Kannada and Hindi. Four of his films IRUKODUGAL, APOORVA RAAGANGAL, THANNEER THANNEER and ACHAMILLAI ACHAMILLAI have won Silver Lotuses for the Best Tamil Films for the years 1970, 1974, 1981 and 1984. THANNEER THANNEER also bagged the Silver Lotus for the best screenplay. EK DEUJE KE LIYE is one of the most successful Hindi films of the decade. He served as chairman of the Feature Film Jury of the 1983 National Film Festival. Honoured with Padmashri.

सामाजिक विषयों पर सर्वोत्तम फिल्म पुरस्कार

मैं ज़िंदा हूँ (हिन्दी)

निर्माता **राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम लि. और दूरदर्शन** को रजत कमल और 30,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **सुधीर मिश्र** को रजत कमल और 15,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सामाजिक विषयों पर सर्वोत्तम फिल्म का 1988 का पुरस्कार हिन्दी फिल्म **मैं ज़िंदा हूँ** को मध्य वर्गीय कामकाजी महिला के दुखों की गाथा को अत्यन्त कौशल के साथ चित्रित करने के लिए दिया गया है।

award for the best film on other social issues such as prohibition, women and child welfare, anti-dowry, drug abuse, etc.

MAIN ZINDA HOON

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 30,000 to the Producer, M/s. National Film Development Corporation Limited and Doordarshan.

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 15,000 to the Director, Sudhir Mishra.

citation

The Award for the Best Feature Film on other social issues of 1988 is given to the Hindi Film MAIN ZINDA HOON for portraying with redeeming finesse the saga of the agony of the middle class working woman.

सुधीर मिश्र ने विनोद चौपड़ा, कुन्दन शाह और सईद मिर्ज़ा के साथ क्रमशः **सजा-ए मौत, जाने भी दो यारो** और **मोहन जोशी हाजिर हो** फिल्मों में मुख्य सहायक निर्देशक के रूप में काम किया है। उन्होंने इनमें से दो फिल्मों की पटकथा संयुक्त रूप से लिखी है। **ये वो मंजिल तो नहीं** निर्देशक के रूप में उनकी पहली फिल्म थी।

SUDHIR MISHRA has worked as chief assistant director with Vinod Chopra, Kundan Shah and Saeed Mirza for SAZAAYE MAUT, JAANE BHI DO YAARO and MOHAN JOSHI HAAZIR HO, respectively, and has jointly written the scripts for two of them. YEH WOH MANZIL TO NAHIN was his first independent directorial venture.

सर्वोत्तम बाल फिल्म पुरस्कार

मनु अंकल (मलयालम)

निर्माता **जॉय थामस** को स्वर्ण कमल और 30,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **डैनिस जोसेफ** को स्वर्ण कमल और 15,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम बाल फिल्म का 1988 का पुरस्कार मलयालम फिल्म **मनु अंकल** को ऐसे सुन्दर और साहसिक चित्रण के लिए दिया गया है, जिससे बच्चों में साहसिक कार्य करने की भावना पैदा होती है।

award for the best children's film

MANU UNCLE

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 30,000 to the Producer, Joy Thomas.

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 15,000 to the Director, Dennis Joseph.

citation

The Award for the Best Children's Film of 1988 is given to the Malayalam film MANU UNCLE for endearing and hilarious picturisation which promotes a sense of adventure among children.

जॉय थामस कोट्टायम के रहने वाले है। उन्होंने अपना फिल्मी जीवन 1977 में फिल्म वितरक के रूप में आरंभ किया और मलयालम भाषा में डब फिल्म **पन्नीर पुष्पांगल** प्रदर्शित की। अब तक वे 13 फिल्मों का निर्माण कर चुके हैं। इनमें से प्रमुख है **आरत्री, एंटे उपसन, माकन एंटे माकन, निरक्कोट्टे, श्यामा, प्रणामम, न्यू दिल्ली, भूमियिल्ले राजक्कनमर।**

डैनिस जोसेफ भी कोट्टायम जिले के हैं। उन्होंने 1985 में मलयालम फिल्म **निरक्कोट्टे** की पटकथा और संवाद लिखे। पिछले चार वर्षों में उन्होंने 17 फिल्मों की पटकथा लिखी है। फिल्म निर्देशक बनने के लिए उन्होंने फिल्म पत्रकारिता को छोड़ दिया है।

JOY THOMAS, hailing from Kottayam, started his career as a film distributor in 1977 and released the dubbed version PANNEER PUSHPANGAL in Malayalam. He has produced 13 feature films so far, some of which are AARATHRI, ENTE UPSANA, MAKAN ENTE MAKAN, NIRAKKOTTE, SHYAMA, PARANAMAM, NEW DELHI and BHOOMIYILE RAJAKKANMAR.

DENNIS JOSEPH, also from Kottayam district, wrote the story and dialogue for the Malayalam feature film NIRAKKOTTE in 1985, and during the last four years has written 17 films. To become a film director, he quit film journalism.

सर्वोत्तम निर्देशन पुरस्कार

शाजी एन. करुण

निर्देशक **शाजी एन. करुण** को स्वर्ण कमल और 50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम निर्देशन का 1988 का पुरस्कार **शाजी एन. करुण** को मलयालम फिल्म **पिरवी** में विभिन्न तत्वों के सुन्दर मेल और फिल्मी सौन्दर्य चेतना की ऊँचाइयां पैदा करने में सफलता के लिए दिया गया है।

award for the best direction

SHAJI N. KARUN

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 50,000.

citation

The Award for the Best Direction of 1988 is given to SHAJI N. KARUN for the remarkable success in accomplishing fusion of various elements and creating new heights of cinematic aesthetics in the Malayalam Film PIRAVI.

शाजी एन. करुण जाने माने छायाकार हैं। 38 वर्ष के शाजी एन. करुण ने जी. अरविन्दन की फिल्मों का छायांकन किया है। इन्हें छायांकन के लिए अनेक राज्य और राष्ट्रीय पुरस्कार मिले हैं। निर्देशक के रूप में **पिरवी** उनकी पहली फिल्म है। इस समय वे केरल राज्य फिल्म विकास निगम के त्रिवेन्द्रम स्थित चित्रांजली फिल्म स्टूडियो में प्रबन्धक के रूप में काम कर रहे हैं।

SHAJI N. KARUN, 38, is a wellknown cinematographer who has photographed G. Aravindan's films. Won many National and State Awards for cinematography. PIRAVI is his first feature film as director. Presently working as manager, Chitranjali Film Studio (Trivandrum) of the Kerala State Film Development Corporation.

सर्वोत्तम अभिनेता पुरस्कार

प्रेमजी

अभिनेता **प्रेमजी** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम अभिनेता का 1988 का पुरस्कार **प्रेमजी** को मलयालम फिल्म **पिरवी** में उनके संयत अभिनय में श्रेष्ठता का परिचय देने के लिए दिया गया है।

award for the best actor

PREMJI

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000.

citation

The Award for the Best Actor of 1988 is given to PREMJI for excellence in restrained performance in the Malayalam Film PIRAVI.

प्रेमजी का पूरा नाम मुल्लमंगलातु परमेश्वरन भट्टाश्रिपाद उर्फ प्रेमजी है। वे लगभग 6 दशक से अभिनय कर रहे हैं और अभिनय अब उनके लिए जीवन का सामान्य अंग बन चुका है। 20 वर्ष की उम्र में उन्होंने नाटकों में काम करना शुरू कर दिया था। संयोग की बात है कि उन्होंने सबसे पहले एक वृद्ध पुरुष की भूमिका की थी और आज 60 वर्ष बाद 81 साल की उम्र में उन्हें एक वृद्ध पुरुष की भूमिका के लिए सर्वोत्तम अभिनेता का पुरस्कार मिला है। इसी तरह की भूमिका के लिए उन्हें पहले केरल राज्य का सर्वोत्तम अभिनेता का पुरस्कार मिल चुका है। प्रेमजी बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं। यद्यपि वे तिरचुर में पूनकुन्नन में एक प्रिन्टिंग प्रेस में संपादक के रूप में काम करते हैं लेकिन वे एक अच्छे कवि, नाटककार, समाजसुधारक भी हैं। वे नारी मुक्ति के प्रबल समर्थक रहे हैं। जब वे 20/22 साल के थे तभी उन्होंने नंबूदरी समुदाय में महिलाओं के शोषण और उन्हें शिक्षा न देने की प्रथा का विरोध किया था। प्रचलित परम्परा का उल्लंघन करते हुए उन्होंने 40 वर्ष की उम्र में एक विधवा से शादी की।

Acting for the last six eventful decades has almost become a way of life with Mullamangalathu Parameswaran Bhattathiripad alias PREMJI. At the age of 20, he made his stage debut as an old man in a stage play Adukkalayil Ninnu Arangatheku '("From Kitchen to Stage") and now at the age of 81, after 60 years, his career is crowned with the best actor award for the role of an aged man in the Malayalam Feature Film PIRAVI. The same role earlier got him the Kerala State Government's best actor award. PREMJI is a man of many parts—though he works as a book-editor in a printing press at Poonkunnan, Trichur (Kerala), he has distinguished himself as a poet, playwright and social reformer. He was and is an ardent advocate of women's emancipation. In his 20s he questioned the oppression of women among the Namboodiris, especially the discontinuance of their education after they attain puberty. Rebelling against tradition, he married a widow at 40 following the example set by his brother Mullamangalathu Raman Bhattathiripad, the first in the Namboodiri community to do so.

सर्वोत्तम अभिनेत्री पुरस्कार

अर्चना

अभिनेत्री **अर्चना** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम अभिनेत्री का 1988 का पुरस्कार **अर्चना** को तेलुगु फिल्म **दासी** में सन् 1925 के ज़माने की एक ऐसी तेलंगाना दासी कन्या के जीवन को प्रभावशाली रूप से चित्रित करने के लिए दिया गया है, जो पूरी तरह शोषण का शिकार है।

award for the best actress

ARCHANA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000.

citation

The Award for the Best Actress of 1988 is given to ARCHANA for the convincing portrayal of a 1925 Telengana Dasi girl who was subject to total exploitation in the Telugu Film DASI.

पंकज कपूर ने नई दिल्ली के राष्ट्रीय नाटकीय विद्यालय से अभिनय का स्नातक पाठ्यक्रम पूर्ण किया। वे नाटकों, फिल्मों तथा टेलीविज़न कार्यक्रमों में अभिनय करते रहे हैं। टी.वी सीरियल **कर्मचन्द** में अपनी भूमिका के लिए वे बहुत लोकप्रिय हुये। उनकी कुछ उल्लेखनीय फिल्में हैं **खंडहर, जलवा, जाने भी दो यारो** और **ये वो मंजिल तो नहीं।**

PANKAJ KAPUR completed his graduation course from the National School of Drama, New Delhi. Has been very active on the Indian stage, screen and television. He became a household name as the carrot-chewing inspector on the TV detective serial KARAMCHAND. Some of his important films are: KHANDAR, JALWA, JAANE BHI DO YAARO and YEH WOH MANZIL TO NAHIN.

सर्वोत्तम सह-अभिनेत्री पुरस्कार

उत्तरा बावकर

सह-अभिनेत्री **उत्तरा बावकर** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम सह-अभिनेत्री का 1988 का पुरस्कार **उत्तरा बावकर** को हिन्दी फिल्म **एक दिन अचानक** में एक पत्नी की कठिन भूमिका को निभाने के लिए दिया गया है, जो सामाजिक और मनोवैज्ञानिक द्वंद्व में फंस जाती है।

award for the best supporting actress

UTTARA BAOKAR

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000.

citation

The Award for the Best Supporting Actress of 1988 is given to UTTARA BAOKAR for essaying the difficult role of a wife caught in the midst of unique social and psychological predicament in the Hindi Film EK DIN ACHANAK.

उतरा बावकर नई दिल्ली के राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय की नाटक कम्पनी की एक वरिष्ठ अभिनेत्री हैं। उन्होंने लगभग 50 नाटकों में अभिनय किया है। अभिज्ञान शाकुन्तलम में प्रियंवदा औथेलो मे डैसडेमोना, दि काकेशियन चाकसरकल में गुरशा, द थ्री पैनी ओपरा में पोली, लुक बैक ऐट एंगर में ऐलेना सूर्य की अन्तिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक में शैलवती, बिवियों का मदरसा में कम्मो, बेगम का तकिया में रौनक बेगम, आधे-अधूरे में बिन्नी और अन्धा युग में गान्धारी की उनकी भूमिका बहुत सराही गई है। उन्होंने संध्या छाया का निर्देशन किया। उतरा बावकर ने दो मराठी नाटकों का हिन्दी में अनुवाद भी किया। उन्होंने कई नाटकों के लिए वेशभूषाकार का काम भी किया। 1984 में उन्हें अभिनय के लिए संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार प्रदान किया गया। उन्होंने **तमस, यात्रा, उड़ान, कभी दूर कभी पास** जैसे दूरदर्शन धारावाहिकों और टैली फिल्म होश में अभिनय किया। उन्होंने पूर्व जर्मनी के नाटक विद्यालय में अभिनय और अध्यापन विधियों पर अध्ययन किया। वे इस समय नई दिल्ली में राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय में सहायक प्रोफेसर के रूप में काम कर रही हैं। उन्होंने 1982 में लंदन में भारत महोत्सव में भाग लिया।

UTTARA BAOKAR is one of the senior actresses of the NSD Repertory Company. She has performed in about 50 plays. Some of the prominent roles essayed by her are: Priyamvada in Abhigyana Shakuntalam, Desdemona (Othello), Grusha (The Caucasian Chalk Circle), Polly (The Three Penny Opera), Helena (Look Back At Anger), Sheelvati (Surya Ki Antim Kiran Se Surya Ki Pehli Kiran Tak), Kammo (Bivion Ka Madarsa), Raunaq Begum (Begum Ka Takia), Binni (Adhe-Adhure), Lady Macbtech (Barnam Vana) and Gandhari (Andha Yug). Directed Sandhya Chhaya. Designed costumes for a number of plays and translated two plays from Marathi into Hindi. Awarded the Sangeet Natak Akademi Award for stage acting (Hindi) in 1984. Acted in many tele-serials: Tamas, Yatra, Udan, Kabhi Door Kabhi Pas, and telefilm Hosh. Studied octing teaching techniques at GDR Drama School, Berlin. Presently working as associate professor for voice, speech and acting at the National School of Drama, New Delhi. Participated at the India Festival, London (1982).

सर्वोत्तम बाल कलाकार पुरस्कार

शफीक सैयद

बाल कलाकार **शफीक सैयद** को रजत कमल और 5,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम बाल कलाकार का 1988 का पुरस्कार शफीक सैयद को हिन्दी फिल्म **सलाम बाम्बे** में गन्दी बस्ती के एक बच्चे की भूमिका सहज और स्वाभाविक ढंग से निभाने के लिए दिया गया है।

award for the best child artiste

SHAFIQ SYED

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 5,000.

citation

The Award for the Best Child Artiste of 1988 is given to SHAFIQ SYED for the natural ease with which he has portrayed a slum child in the Hindi Film SALAAM BOMBAY.

शफ़ीक सैयद का जन्म बगंलौर के निकट एक गांव में एक मजदूर परिवार में हुआ। चार पांच साल पहले वह गांव से भाग आए। उस समय वे साइकिल की एक दुकान पर काम करते थे।
दो साल तक बगंलौर की सड़कों पर घूमने के बाद वे अक्टूबर 1986 में बम्बई पहुंचे और चर्च गेट स्टेशन के पास कुछ और लोगों के साथ मिलकर पुराने कागज और कपड़े बीनने का काम करने लगे। जून 1987 में मंच निर्देशक बेरी जान ने **सलाम बाम्बे** फिल्म की तैयारी के दौरान जिन सौ बच्चों को चुना उनमें शफीक सैयद भी थे। फिल्म की निर्देशक मीरा नायर शफीक सैयद के अभिनय और उसमें सुधार लाने की क्षमता से इतनी प्रभावित हुई कि उन्होंने उसे फिल्म के मुख्य पात्र चैपो की भूमिका सौंप दी।

Born into a construction workers' family, in a village near Bangalore, SHAFIQ SYED ran away from home when working in a village cycle shop, over four and a half years ago.

After two years on the streets in Bangalore, he came to Bombay in October 1986 and became a rag-picker, hanging around with a gang near Churchgate station. In June 1987 he was selected, along with over 100 other children, for the workshop conducted by theatre director Barry John in preparation for SALAAM BOMBAY. So impressed was MIRA NAIR, the film's director, with his skill at acting and improvising ability that when the shooting began, she cast him as the main character, Chaipau, in SALAAM BOMBAY.

सर्वोत्तम पार्श्व गायक पुरस्कार

एस.पी. बालसुब्रह्मण्यम

पार्श्व गायक **एस.पी. बालसुब्रह्मण्यम** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम पार्श्व गायक का 1988 का पुरस्कार **एस.पी. बालसुब्रह्मण्यम** को तेलुगु फिल्म **रुद्र वीणा** में शास्त्रीय संगीत पर अपने अधिकार के बल पर पार्श्व गायन को भावना की अदभुत गहराई तक ले जाने के लिए दिया गया है।

award for the best male playback singer

S.P. BALASUBRAHMANIAM

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000.

citation

The Award for the Best Male Playback Singer of 1988 is given to S.P. BALASUBRAHMANIAM for bringing to playback singing a rare depth of emotion adorned by his command of classical idiom in the Telugu Film RUDRA VEENA.

एस.पी. बालसुब्रह्मण्यम दक्षिण भारतीय फिल्म उद्योग का अभिन्न अंग बन गये हैं, 1966 में तेलुगु फिल्म **श्री-श्री मर्यादा रमन्ना** में गीत गाने के बाद से वे अब तक 7500 से अधिक फिल्मी गाने गा चुके हैं और उन्हें अनेक पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुये हैं। उन्होंने अनेक भाषाओं — तेलुगु, तमिल, कन्नड़, मलयालम, उड़िया और हिन्दी में गाने गाये हैं। उन्हें इससे पहले तीन बार सर्वोत्तम पार्श्व गायक का राष्ट्रीय पुरस्कार मिल चुका है। ये पुरस्कार उन्हे **शंकरभरणम, एक दूजे के लिए** और **सागर संगमम्** फिल्मों के लिए मिले हैं।

S.P. BALASUBRAHMANIAM has become almost an integral part of the South Indian film industry. Since his debut as a playback singer in 1966 with the Telugu film SRI SRI MARYADA RAMANNA, he has set an unexcelled record of over 7,500 songs in films and bagged an impressive array of awards and honours. He has sung in many languages—Telugu, Tamil, Kannada, Malayalam, Oriya and Hindi. Thrice he has received the National Awards for the Best Male Playback Singer before for his soulful renderings in SANKARABHARANAM, EK DEUJE KE LIYE and SAAGARA SANGAMAM.

सर्वोत्तम पार्श्व गायिका पुरस्कार

चित्रा

पार्श्व गायिका **चित्रा** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम पार्श्व गायिका का 1988 का पुरस्कार **चित्रा** को मलयालम फिल्म **वैशाली** में स्पष्ट और लयपूर्वक गीत गाने के लिए दिया गया है।

award for the best female playback singer

CHITHRA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000.

citation

The Award for the Best Female Playback Singer of 1988 is given to CHITHRA for her clear and tuneful rendering of the song in the Malayalam Film VAISALI.

चित्रा, त्रिवेन्द्रम की रहने वाली हैं। उन्होंने शास्त्रीय और लोक शैली में गीत गाए हैं। वे मंच तक यशुदास के साथ गीत गाया करती थीं। उन्होंने सबसे पहले पार्श्व गायन मलयालम फिल्मों में शुरू किया। **इलया राजा** ने उनसे तमिल फिल्मों में गाने गवाये। इससे पहले भी वे श्रेष्ठ गायन के लिए दो बार सर्वोत्तम पार्श्व गायिका का राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त कर चुकी हैं। 1985 में तमिल फिल्म **सिन्धु भैरवी** के लिए और 1986 में मलयालम फिल्म **नखक्षतगल** के लिए उन्हें पार्श्व गायन का पुरस्कार प्रदान किया गया।

CHITHRA, hailing from Trivandrum, sings both in the folk and the classical moulds and used to sing along with K.J. Yesudass on the stage. She got a break in playback singing in Malayalam films and Ilaiya Raja introduced her to Tamil films. Her mellifluous rendering has earlier brought her two National Awards for the Best Female Playback Singer—in the Tamil film SINDHU BHAIRAVI (1985) and in the Malayalam film NAKHAKSHATHANGAL (1986).

सर्वोत्तम छायांकन पुरस्कार

ए.के. बीर

छायाकार **ए.के. बीर** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम छायाकार का 1988 का पुरस्कार **ए.के. बीर** को तेलुगु फिल्म **दासी** में मूल कथ्य को उभारने में सृजनात्मक कौशल तथा उच्च स्तर की तकनीकी श्रेष्ठता का परिचय देने के लिए दिया गया है।

award for the best cinematography

A.K. BIR

Raját Kamal and a cash prize of Rs. 10,000.

citation

The Award for the Best Cinematography of 1988 is given to A.K. BIR for high technical excellence and creative participation in evolving the basic statement of the Telugu film DASI.

ए.के. बीर का जन्म 1948 में हुआ। उन्होंने 1970 में पूना के भारतीय फिल्म तथा टेलीविजन संस्थान से छायांकन का पाठ्यक्रम पूरा किया। उन्हें अपनी फिल्म **27 डाउन** में ही सर्वोत्तम छायांकन (ब्लेक एन्ड व्हाइट) का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। उन्होंने **चित्रभंग** और **आशीर्वाद** जैसे अनेक फिल्मों के लिए छायांकन किया है और काफी प्रशंसा प्राप्त की है। उन्होने रिचर्ड एटनब्रो द्वारा निर्देशित फिल्म **गांधी** में कैमरा मैन के रूप में काम किया। वे नियमित रूप से वृत्त चित्रों, विज्ञापन फिल्मों और कम्पनियों की फिल्मों का निर्माण करते रहते हैं। वे पूना के भारतीय फिल्म तथा टेलीविजन संस्थान में अतिथि अध्यापक के रूप में काम करते हैं।

A.K. BIR, born in 1948, completed his cinematography course at the FTII, Pune, in 1970. Won the National Award for Best Cinematography (black and white) for his debut film 27 DOWN. Has photographed several highly acclaimed films like CHATRABHANG and ASHIRWAD. Worked as operative cameraman of IInd Panavision camera of the 1st Unit of GANDHI, directed by Richard Attenborough. Regularly makes documentaries,ad films, corporate films and is a visiting lecturer at the FTII, Pune.

सर्वोत्तम पटकथा पुरस्कार

अरुन्धती राय

पटकथा लेखक **अरुन्धती राय** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम पटकथा का 1988 का पुरस्कार **अरुन्धती राय** को अंग्रेजी फिल्म **इन विच एनी गिव्स इट दोज़ वन्स** में व्यावसायिक संस्थानों के छात्रों में विद्यमान क्षोभ को कुशलता के साथ चित्रित करने के लिए दिया गया है।

award for the best screenplay

ARUNDHATI ROY

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000.

citation

The Award for the Best Screenplay of 1988 is given to ARUNDHATI ROY for capturing the anguish prevailing among students of professional institutions in the English Film IN WHICH ANNIE GIVES IT THOSE ONES.

अरून्धती राय पहले वास्तुकला विशेषज्ञ थीं लेकिन 1984 में पूर्ण रूप से लेखिका बनने के लिए उन्होंने वास्तुकला व्यवसाय छोड़ दिया। उन्होंने 15 घटों के टी.वी. सीरियल **बरगद** की कहानी और पटकथा लिखो। **इन विच एन्नी गिव्स इट दोज वन्स** फिल्म के सभी पात्र यद्यपि काल्पनिक है लेकिन इनमें दिल्ली के वास्तुकला विद्यालय में उनके अनुभव की झलक मिलती है। **मैसी साहेब** फिल्म उन्होंने एक जन जातीय लड़की के पात्र की रचना की थी जो **इन विच एन्नी गिव्स इट दोज वन्स** के आधुनिक युवा छात्र के पात्र से एक दम भिन्न है।

ARUNDHATI ROY gave up Architecture to become a full-time writer in 1984. She wrote the story and screenplay of the 15-hour television serial, BARGAD. Though all the characters in IN WHICH ANNIE GIVES IT THOSE ONES are fictional, the milieu and settings are drawn from her experience at the Architecture School, Delhi. In MASSEY SAHIB, she essayed the role of a tribal girl, which is in sharp contrast to her part of a brash young student in IN WHICH ANNIE GIVES IT THOSE ONES.

सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन पुरस्कार

कृष्णन ऊन्नी

ध्वनि आलेखक **कृष्णन ऊन्नी** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन का 1988 का पुरस्कार **कृष्णन ऊन्नी** को मलयालम फिल्म **पिरवी** के सूक्ष्म भावात्मक प्रभाव को ग्रहण करने और उसे बनाये रखने में सृजनात्मक ढंग से सहायता करने के लिए दिया गया है।

award for the best audiography

KRISHNAN UNNI

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000.

citation

The Award for the Best Audiography of 1988 is given to KRISHNAN UNNI for creatively helping to capture and sustain the delicate seasonal and emotional mood of the Malayalam Film PIRAVI.

टी. कृष्णन उन्नी ने पूना के फिल्म तथा टेलीविजन संस्थान से ध्वनि आलेखन में स्नातक की डिग्री प्राप्त की। उन्होंने अहमदाबाद खेड्डा संचार प्रयोजना में ध्वनि आलेखक के रूप में काम किया। इस समय वे केरल राज्य फिल्म विकास निगम के चित्रांजली फिल्म स्ट्डियों में ध्वनि आलेखक के पद पर काम कर रहे हैं। पिछले वर्ष उन्हें मलयालम फिल्म **अनन्तरम** के लिए सर्वोत्तम ध्वनि आलेखक का राष्ट्रीय पुरस्कार संयुक्त रूप से मिला था।

T. KRISHNAN UNNI, who graduated in sound recording and sound engineering from the FTII, Pune, worked as a recordist for the Khedda Communications Project, Ahmedabad. Presently working as a sound recordist at the Chitranjali Film Studio (Trivandrum) of the Kerala State Film Development Corporation. Shared the best audiography award for the Malayalam Feature Film ANANTARAM, in the 35th National Film Festival.

सर्वोत्तम संपादन पुरस्कार

ए. श्रीकर प्रसाद

संपादक ए. **श्रीकर प्रसाद** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम संपादन का 1988 का पुरस्कार **ए. श्रीकर प्रसाद** को हिन्दी फिल्म **राख** में आधुनिक युवकों के आन्तरिक उद्वेलन को सृजनात्मक तरीके से व्यक्त करने में समय और परिस्थितियों का सटीक उपयोग करने के लिए दिया गया है।

award for the best editing

A. SREEKAR PRASAD

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000.

citation

The Award for the Best Editing of 1988 is given to A. SREEKAR PRASAD for his precise use of time and juxtaposition in bringing out creatively the internal turmoil of a modern youth in the Hindi Film RAAKH.

ए. श्रीकर प्रसाद ने मद्रास विश्वविद्यालय से साहित्य में स्नातक की डिग्री प्राप्त की है। उनका जन्म 1963 में हुआ। उन्होंने संपादन कार्य अपने पिता ए.संजीवी से सीखा। उन्होंने बीस कथाचित्रों में अपने पिता के साथ काम किया। उड़िया, असमिया, तेलुगु, और नेपाली की पन्द्रह फीचर फिल्मों का उन्होंने स्वतंत्र रूप से संपादन किया है। **राख** उनकी पहली हिन्दी फ़ीचर फिल्म है।

A. SREEKAR PRASAD, born in 1963, is a graduate in literature from the University of Madras. He learnt editing from his father, A. Sanjeevi, and was associated with him on 20 feature films. He has edited independently 15 feature films in Oriya, Assamese, Telugu and Nepali. RAAKH is his first Hindi feature film.

सर्वोत्तम कला निर्देशन पुरस्कार

टी. वैकुंठम

कला निर्देशक **टी. वैंकुठम** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम कला निर्देशन का 1988 का पुरस्कार **टी. वैकुंठम** को तेलुगु फिल्म **दासी** में दृश्यों की रचना में सभी बारीकियों का ध्यान रखने और एक निश्चित काल के वातावरण के सृजन के लिए दिया गया है जो फिल्म का अनिवार्य अंग बन जाता है और उसके सौन्दर्य-चेतना सम्बन्धी महत्व में वृद्धि करता है।

award for the best art direction

T. VAIKUNTHAM

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000.

citation

The Award for the Best Art Direction of 1988 is given to T. VAIKUNTHAM for his minute care and concern for detail of prop and decor, creating a period locale which becomes an amalgamated part of the film enhancing its aesthetic value in the Telugu Film DASI.

थोटा वैकुंठम ने जवाहरलाल नेहरू टैक्नालोजी विश्व-विद्यालय हैदराबाद से चित्रकला में डिप्लोमा किया। वे हैदराबाद के बाल भवन में चित्रकला के प्राध्यापक हैं। इससे पहले उन्होंने **मा भूमि** (1979), **रंगूला कला** (1983) और **द सिटी** (1987) के लिए कला निर्देशन किया है।

THOTA VAIKUNTHAM, who earned his diploma in painting from the Jawaharlal Nehru Technological University, Hyderabad, is a painting lecturer at Balabhavan, Hyderabad. Earlier he had done art direction for MAA BHOOMI (1979), RANGULA KALA (1983) and THE CITY (1987).

सर्वोत्तम वेशभूषा पुरस्कार

सुदर्शन

वेशभूषाकार **सुदर्शन** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम वेशभूषा का 1988 का पुरस्कार **सुदर्शन** को तेलुगु फिल्म **दासी** में प्रामाणिक और सही प्रकार के वस्त्रों तथा आभूषणों के सफल इस्तेमाल के लिए दिया गया है।

award for the best costume designing

SUDARSHAN

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000.

citation

The Award for the Best Costume Designing of 1988 is given to SUDARSHAN for his tender handling of warped fabric and jewellery with correct hues and authenticity in the Telugu Film DASI.

पी. सुदर्शन कला अध्यापक हैं। उनका जन्म आंध्रप्रदेश के नलगौंडा जिले में मिरयालगुडा गांव में 1952 में हुआ। उन्होंने **मा उरू** सहित तीन वृत्त चित्रों और एक कथाचित्र **दासी** के लिए वेशभूषाकार के रूप में काम किया है।

P. SUDARSHAN, an art teacher, was born in 1952 at Miryalaguda, Nalgonda district (Andhra Pradesh). He has done costume designing for three documentary films, including MAA OORU, and feature film DASI.

सर्वोत्तम संगीत निर्देशन पुरस्कार

इलयाराजा

संगीत निर्देशक **इलयाराजा** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम संगीत निर्देशन का 1988 का पुरस्कार **इलयाराजा** को तेलुगु फिल्म **रुद्र वीणा** में नई तरह की धुन की रचना करने के लिए दिया गया है जो शास्त्रीय परम्परा की गरिमा को सामने लाने के साथ-साथ उसे आधुनिक चेतना से जोड़ती है।

award for the best music direction

ILAIYA RAJA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000.

citation

The Award for the Best Music Direction of 1988 is given to ILAIYA RAJA for creating an innovative score which brings out the splendour of classical tradition and blends it beautifully with modern sensibilities in the Telugu Film RUDRA VEENA.

इलयाराजा को अपनी पहली फिल्म **अन्नक्किली** से ही प्रसिद्ध मिल गई। अब तक वे तीन सौ फिल्मों में संगीत दे चुके हैं। इससे पहले उन्हे दो बार 1983 में तेलुगु फिल्म **सागर संगमम्** और 1986 में तमिल फिल्म **सिन्धु भैरवी** के लिए सर्वोत्तम संगीत निर्देशन का राष्ट्रीय पुरस्कार मिल चुका है। इलयाराजा ने अपना संगीत जीवन गीटार वादक के रूप में आरम्भ किया था। उन्होंने कई नये गायक गायिकाओं को अवसर दिये जिनमें चित्रा भी शामिल है। इलयाराजा की विशेषता राष्ट्रीय संगीत और लोक संगीत के मिश्रण से नई धुनें निकालना है। उन्होंने हिन्दी फिल्मों **सदमा** और **महादेव** के लिए भी संगीत निर्देशन किया है।

Winning fame and popularity with his very first film, ANNAKKILI, ILAIYA RAJA has more than 300 films to his credit. Earlier he had won twice National Awards for the Best Music Direction—in 1983 for the Telugu film SAAGARA SANGAMAM and in 1985 for the Tamil film SINDHU BHAIRAVI. Chithra is one among the many new singers introduced by ILAIYA RAJA, who started his career as a guitarist. Known for innovative blending of the folk and the classical, he made his debut in Hindi film music also by scoring for SADMA and the latest is MAHAADEV.

सर्वोत्तम गीत पुरस्कार

ओ.एन.वी. कुरूप

गीतकार **ओ.एन.वी.कुरूप** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम गीत का 1988 का पुरस्कार **ओ.एन.वी. कुरूप** को मलयालम फिल्म **वैशाली** में सभी गीतों में अदभुत काव्यात्मक ऊंचाइयों को छूने के लिए दिया गया है।

award for the best lyric

O.N.V. KURUP

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000.

citation

The Award for the Best Lyric of 1988 is given to O.N.V. KURUP for the rare poetic heights reached in all the lyrics in the Malayalam Film VAISALI.

ओ.एन.वी. कुरूप मलयालम के सुप्रसिद्ध कवि हैं। उनकी कविता और गीत काफी लोकप्रिय रहे हैं और उन्हें अनेक पुरस्कार भी मिले हैं।

O.N.V. KURUP is a wellknown Malayalam poet and has won several awards and public acclaim for his poetry and lyrics.

निर्णायक मण्डल विशेष पुरस्कार

अशोक आहूजा

अशोक आहूजा को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

1988 का विशेष निर्णायक मण्डल पुरस्कार **अशोक आहूजा** को हिन्दी फिल्म **वसुन्धरा** में पर्यावरण के प्रति लोगों के मन में प्रेम जागृत करने और मानवता तथा प्रकृति को विनाश से बचाने में लोगों की भूमिका को परिभाषित करने के लिए दिया गया है।

special jury award

ASHOK AHUJA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000.

citation

The Special Jury Award of 1988 is given to ASHOK AHUJA for the sensitive and compulsive evolution of the much needed love for the eco-system and for defining the role of humanity in saving mankind and nature from devastation in the Hindi Film VASUNDHARA.

अशोक आहूजा ने पुणे के भारतीय फिल्म तथा टेलीविजन संस्थान से फिल्म निर्देशन में स्नातक डिग्री प्राप्त की। उनकी पहली फिल्म **आधारशिला** निर्देशक की सर्वोत्तम प्रथम फिल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त कर चुकी है। इस फिल्म को मैनहैम अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में भी पुरस्कार प्राप्त हुआ। **वसुन्धरा** उनकी दूसरी फिल्म है।

ASHOK AHUJA graduated in film direction from the Films and Television Institute of India, Pune. His first film, AADHARSHILA, won the National Award for the Best First Film of a Director and the Filmducaten Award at the Mannheim international film festival. VASUNDHRA is his second film.

सर्वोत्तम असमिया फिल्म पुरस्कार

कोलाहल

निर्माता **भबेन्द्र नाथ सैकिया** को रजत कमल और 20,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **भबेन्द्र नाथ सैकिया** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम असमिया कथाचित्र का 1988 का पुरस्कार **कोलाहल** को ऐसी परित्यक्त महिला के संघर्ष जैसे साहसपूर्ण विषय को चित्रित करने के लिए दिया गया है जो परम्परा के निर्वाह तथा जीने की इच्छा के द्वंद्व से घिरी है।

award for the best film in Assamese

KOLAHAL

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000 to the Producer, Bhabendra Nath Saikia.

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director, Bhabendra Nath Saikia.

citation

The Award for the Best Feature Film in Assamese for 1988 is given to KOLAHAL for taking up the bold theme of the struggle of a deserted woman caught between convention and the desire to live.

डा॰ भबेन्द्र नाथ सैकिया असम के प्रमुख लेखक हैं। उन्होंने कला, विज्ञान, संस्कृति, शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया है। वे साहित्य अकादमी पुरस्कार से भी सम्मानित किये जा चुके हैं। उनकी प्रथम फिल्म **संध्या राग** को 1977 में रजत कमल मिला। उनकी दूसरी फिल्म **अनिरबान** को 1981 में रजत कमल दिया गया। उनकी तीसरी फिल्म **अग्नि स्नान** को 1986 की सर्वोतम असमिया फिल्म के लिए रजत कमल और डा॰ सैकिया को इस फिल्म की सर्वोत्तम पटकथा के लिए पुरस्कार मिला। डा॰ सैकिया ने लंदन विश्वविद्यालय से भौतिकी में डाक्टरेट की डिग्री प्राप्त की है। इस समय वे असम राज्य फिल्म वित्त और विकास निगम के अध्यक्ष हैं। वे एक वार्षिक पत्रिका **प्रांतिक** के मुख्य संपादक और बच्चों की मासिक पत्रिका **सोफुरा** के संपादक हैं।

A major creative writer of Assam and a Sahitya Akademi award winner, DR BHABENDRA NATH SAIKIA has a most distinctive record of achievements in art, science, culture and education. His first film, SANDHYARAG, was given the Rajat Kamal in 1977. His second film, ANIRBAN, won the Rajat Kamal in 1981. AGNISNAN, the third, bagged the best screenplay award for DR SAIKIA and the Rajat Kamal as the best Assamese film of 1986. DR SAIKIA has a doctoral degree in Physics from the London University and is at present Chief Editor, Prantik (fortnightly magazine), and Editor, Sofura (children's monthly magazine), besides being the Chairman of the Assam State Film (Finance and Development) Corporation.

सर्वोत्तम हिन्दी फिल्म पुरस्कार

सलाम बाम्बे

निर्माता **राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम मैसर्स मीरा बाई फिल्म्स,** और **दूरदर्शन** को रजत कमल और 20,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **मीरा नायर** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम हिन्दी कथाचित्र का 1988 का पुरस्कार **सलाम बाम्बे** को बेघर बच्चों और महिलाओं तथा नशीले पदार्थों की लत के शिकार लोगों के जीवन की दुखद वास्तविकताओं को चित्रित करने के लिए दिया गया है।

award for the best film in Hindi

SALAAM BOMBAY

Rajat Kamal to the Producers, National Film Development Corporation Limited, M/s. Mirabai Films and Doordarshan and a cash prize of Rs. 20,000 to be divided among the three producers.

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director, Mira Nair.

citation

The Award for the Best Feature Film in Hindi for 1988 is given to SALAAM BOMBAY for exploring the tragic realities of life for the homeless children and women and those enmeshed by drugs.

मीरा नायर का जन्म 1957 में हुआ। उन्होंने दिल्ली में एक नाटक कम्पनी में अभिनेत्री के रूप में काम किया और अमेरिका में हारवर्ड विश्वविद्यालय में दृश्य और पर्यावरण विज्ञान का अध्ययन किया। उन्होंने छात्र के रूप में पुरानी दिल्ली के बारे में 1974 में दो रीलों की एक लघु फिल्म **जामा मस्जिद स्ट्रीट जर्नल** का निर्माण किया। तीन वर्ष बाद उन्होंने न्यूयार्क में अखबार बेचने वाले एक भारतीय व्यक्ति के बारे में एक घंटे का वृत्त चित्र **सो फार फ्राम इंडिया** बनाया। इसके बाद उन्होंने भारत की कैब्रे डान्सरों के सम्बन्ध में 6 रीलों की फिल्म **इंडिया कैबरे** बनाई। इसके बाद मीरा नायर ने महिलाओं के विकास के बारे में 6 भागों का एक दूरदर्शन धारावाहिक तैयार किया जिसका नाम था **ब्वाय आर गर्ल**। **सलाम बाम्बे** को पिछले साल केन्स अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में पुरस्कृत किया गया और इसे आस्कर पुरस्कार के लिए 5 श्रेष्ठ विदेशी फिल्मों में शामिल किया गया। मीरा नायर के सभी वृत्त चित्रों की सराहना हुई है और उन्हें पुरस्कार मिले हैं।

MIRA NAIR, born in 1957, worked as a stage actress in a repertory company in Delhi and studied Visual and Environmental Studies at Harvard University, Cambridge (USA). Her student film-thesis was a two-reel portrait of old Delhi, JAMA MASJID STREET JOURNAL (1974). Three years later she made SO FAR FROM INDIA, an hour-long documentary film about an Indian emigrant newsstand worker in New York subway. Then came a six-reel film on cabaret dancers in India, INDIA CABARET. BOY OR GIRL?, on amniocentesis in India, was one of the six-part tele-serial on "Women and Development." SALAAM BOMBAY won the prestigious Palme D'Or at Cannes (1988) and was nominated among the five best foreign films for Oscar. All her documentary films have been acclaimed and awarded.

सर्वोत्तम कन्नड़ फिल्म पुरस्कार

बन्नडा वेशा

निर्माता **दूरदर्शन केन्द्र, बंगलौर** को रजत कमल और 20,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।
निर्देशक **गिरीश कासरवल्ली** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम कन्नड़ कथाचित्र का 1988 का पुरस्कार **बन्नडा वेशा** को एक कलाकार के मानसिक द्वंद्व और अलग पहचान की लालसा को सूक्ष्मता और सहजता के साथ व्यक्त करने के लिए फिल्म निर्माण के विभिन्न पक्षों के अत्यन्त सुन्दर मिश्रण के लिए दिया गया है।

award for the best feature film in Kannada

BANNADA VESHA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000 to the Producer, Doordarshan Kendra, Bangalore.

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director, Girish Kasaravalli.

citation

The Award for the Best Feature Film in Kannada for 1988 is given to BANNADA VEṢHA for superb blend of different departments of film-making to bring out lyrically the predicament of a performing artiste and his quest for identity.

गिरीश कासरवल्ली ने पूना के भारतीय फिल्म तथा टेलीविजन संस्थान से फिल्म निर्देशन में डिप्लोमा प्राप्त किया। उनकी डिप्लोमा फिल्म **अवशेष** को 1976 की सर्वोत्तम प्रयोगिक फिल्म के लिए रजत पदक दिया गया। उनकी फिल्म **घटश्राद** को 1978 के सर्वोत्तम कथाचित्र का स्वर्ण कमल प्रदान किया गया। ये फिल्म मैनहैम फिल्म समारोह में भी पुरस्कृत हुई। **तबर्ना कथे** को भी 1986 की सर्वोत्तम फिल्म का स्वर्ण कमल मिला। इस फिल्म में चारूहासन को सर्वोत्तम अभिनेता का पुरस्कार मिला। इसके अलावा इसे सात कर्नाटक राज्य पुरस्कार प्राप्त हुये। 1980 में उनकी फिल्म **आक्रमण** को जकार्ता में एशियाई फिल्म समारोह में पुरस्कार मिला। इसी फिल्म में वैशाली कासरवल्ली को कर्नाटक राज्य का सर्वोत्तम अभिनेत्री का पुरस्कार दिया गया। 1981 में उनकी फिल्म **मरू दारिगालु** को सर्वोत्तम छायांकन का राष्ट्रीय पुरस्कार तथा 6 राज्य पुरस्कार मिले।

GIRISH KASARAVALLI did his diploma in film direction at FTII, Pune, and AVASHESH, his diploma film, won Silver Medal as the best experimental film of 1976. GHATASHRADDHA got the Golden Lotus as the best feature film of 1977 and won awards at the Mannheim festival. TABARANA KATHE also won the Golden Lotus as the best feature film of 1986 and the best actor award for Charuhassan and seven Karnataka State awards. AKRAMANA (1980) bagged "Moitra" award at the Asian Festival, Djakarta, and best actress award to Vaishali Kasaravalli in the Karnataka State awards. MOORU DARIGALU (1981) bagged the National Award for best photography and six State awards.

सर्वोत्तम मलयालम फिल्म पुरस्कार

रुग्मिणी

निर्माता **एस.सी. पिल्लै** और **गिगी अब्राहम** को रजत कमल और 20,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **के.पी. कुमारन** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम मलयालम कथाचित्र का 1988 का पुरस्कार **रुग्मिणी** को सामाजिक परम्पराओं की कुरूप वास्तविकताओं पर छा जाने वाली मानवीय स्थिति को करुणापूर्ण ढंग से चित्रित करने के लिए दिया गया है।

award for the best feature film in Malayalam

RUGMINI

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000 to the Producers, S.C. Pillai and Gigy Abraham.

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director, K.P. Kumaran.

citation

The Award for the Best Feature Film in Malayalam for 1988 is given to RUGMINI for compassionate depiction of the human condition permeating the dark realities of a social evil.

एस.सी. पिल्लै ने केरल विश्वविद्यालय से वाणिज्य विषय में स्नातक की डिग्री प्राप्त की है। वे व्यापार करते हैं। निर्माता के रूप में **रूगमिणी** उनकी पहली फिल्म है।

गिगी अब्राहम ने केरल विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में स्नातक की डिग्री प्राप्त की है। वे व्यापारी हैं। निर्माता के रूप में **रूगमिणी** उनकी पहली फिल्म है।

के.पी. कुमारन केरल मे रंग मंच, साक्षरता और फिल्म सोसाइटी आंदोलन से सक्रिय रूप से जुड़े हुये हैं। वे त्रिवेन्द्रम में चित्र लेखा फिल्म सहकारी समिति के निदेशक मंडल के सदस्य हैं। उन्होंने अडूर गोपालकृष्णन की फिल्म **स्वयंवरम्** की पटकथा संयुक्त रूप से लिखी। इस फिल्म को 1973 में 4 राष्ट्रीय पुरस्कार मिले। वे राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम की मलयालम फिल्मों की पटकथा समिति के भी सदस्य हैं। उन्होंने अनेक वृत्त-चित्र और कथाचित्र बनाये हैं जिनमें **द राक** और **अतिथि** विशेष उल्लेखनीय हैं।

S.C. PILLAI, a graduate in commerce from the Kerala University, is a businessman. RUGMINI is his first venture as a film producer.

GIGY ABRAHAM, a graduate in economics from the Kerala University, is a businessman. RUGMINI is his first film as a producer.

K.P. KUMARAN is actively associated with theatre, literary and film society movements in Kerala. Member of the board of directors of Chitralekha Film Cooperative, Trivandrum. Co-authored SWAYAMWARAM, directed by Adoor Gopalakrishnan, that won four National Awards in 1973. Member of script committee for Malayalam films of the NFDC. Made several documentaries and feature films, among them THE ROCK and ATHITHI are the best known.

सर्वोत्तम उड़िया फिल्म पुरस्कार

किचि स्मृति किचि अनुभूति

निर्माता **के. जगदेश्वरी** को रजत कमल और 20,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **मनमोहन महापात्र** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम उड़िया कथाचित्र का 1988 का पुरस्कार **किचि स्मृति किचि अनुभूति** को उड़ीसा के एक गांव के अतीत, वर्तमान तथा भविष्य को बढ़िया ढंग से चित्रित करने के लिए दिया गया है।

award for the best feature film in Oriya

KICHI SMRUTI KICHI ANUBHUTI

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000 to the Producer, K. Jagadeswari.

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director, Manmohan Mahapatra.

citation

The Award for the Best Feature Film in Oriya for 1988 is given to KICHI SMRUTI KICHI ANUBHUTI for the cinematic depiction of the past, present and future of the psyche of a representative village in Orissa.

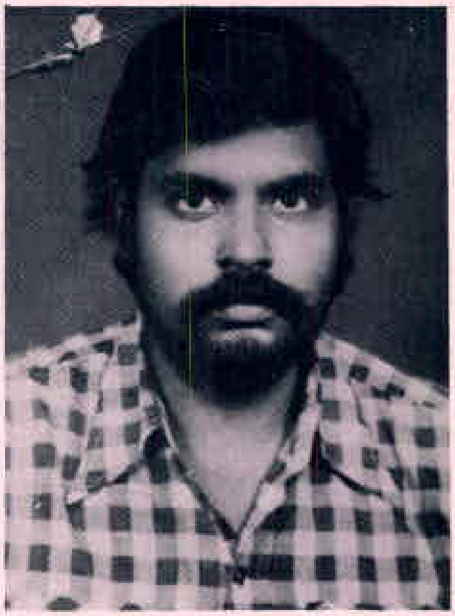

के. जगदेश्वरी फिल्म वितरक हैं और कला के प्रति उनकी गहरी रूचि है। **किचि स्मृति किचि अनुभूति** फिल्म निर्माता के रूप में उनकी पहली फिल्म है। वे दूसरी फीचर फिल्म बनाने की योजना तैयार कर रही हैं।

मनमोहन महापात्र ने भारतीय फिल्म तथा टेलीविजन संस्थान से फिल्म निर्देशन का प्रशिक्षण प्राप्त किया। उन्होंने अब तक 7 कथाचित्र बनाये हैं उनमें से 5— **सीताराती, नीरवझाड़, कलान्त अपराह्न, माजी पहाचा, निसिद्ध स्वप्न** को क्षेत्रीय वर्ग में राष्ट्रीय पुरस्कार मिले है। उनकी छठी फिल्म **त्रिसंध्या** को उड़िया राज्य के 4 पुरस्कार मिले। **किचि स्मृति किचि अनुभूति** उनकी 7वीं फिचर फिल्म है। उन्होंने 3 वृत्त चित्र भी बनाये हैं। ये हैं **वाइसिस ऑफ साइलेंस, कोणार्क द सन टैम्पल** और **ओड़िसी-ए-गिलंप्स।** इस समय वे राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम की सहायता से बन रही फिल्म **अन्ध दिगन्त** के निर्माण में लगे हुये हैं।

K. JAGADESWARI, a film distributor, has a flair for art. KICHI SMRUTI KICHI ANUBHUTI is her first feature film as producer and she is planning her second feature film.

MANMOHAN MAHAPATRA, who completed his film direction course at the Films and Television Institute of India, has made seven feature films till now. Five of them—SEETA RAATI, NEERABA JHADA, KLANTA APARANHA, MAJHI PAHACHA, NISIDHA SWAPNA—have won the National Awards in the regional categoty. TRISANDHYA, the sixth, won four major Orissa State awards. KICHI SMRUTI KICHI ANUBHUTI is his seventh feature film. He has also made three documentary films—VOICES OF SILENCE, KONARK—THE SUN TEMPLE and ODISSI—A GLIMPSE. Currently he is busy completing ANDHA DIGANTA, an NFDC-financed film.

सर्वोत्तम तेलुगु फिल्म पुरस्कार

दासी

निर्माता **बी. रामचन्द्र राव** को रजत कमल और 20,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **बी. नरसिंग राव** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम तेलुगु कथाचित्र का 1988 का पुरस्कार **दासी** को फिल्मी भाषा के मौलिक तथा अद्भुत उपयोग के माध्यम से सामन्ती जीवन की एक कटु वास्तविकता को चित्रित करने के लिए दिया गया है।

award for the best feature film in Telugu

DASI

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000 to the Producer, B. Ramachandra Rao:

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director, B. Narasinga Rao.

citation

The Award for the Best Feature Film in Telugu of 1988 is given to DASI for portraying the grim reality of a feudal milieu through original and rare use of film language.

बी. रामचन्द्र राव कृषि विशेषज्ञ के रूप में प्रसिद्ध हैं। 1959 में उन्हें आंध्र प्रदेश की ओर से राज्य का सर्वश्रेष्ठ कृषि विशेषज्ञ घोषित किया गया। उन्होंने 35 वर्ष तक राजस्व अधिकारी के रूप में काम किया। इससे पहले उन्होंने **'द सिटी'** फिल्म के तेलुगु (96 मिनट) और उर्दू (18 मिनट) संस्करणों का निर्माण किया।

बी. नरसिंह राव फिल्म निर्माण के साथ-साथ संगीत, साहित्य, फोटोग्राफी और चित्रकला में भी रुचि रखते हैं। 1979 में उन्होंने प्रसिद्ध तेलुगु फिल्म **'मा भूमि'** बनाई, जिसका निर्देशन गौतम घोष ने किया। 1983 में उन्होंने **रंगुल्ला कला** फिल्म का निर्माण और निर्देशन किया और उसे सर्वोत्तम तेलुगु कथाचित्र का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। उन्होंने इन दोनों फिल्मों का संगीत निर्देशन भी किया तथा **रंगुल्ला कला** में मुख्य अभिनेता के रूप में काम किया। उनकी अन्य फिल्में हैं **दा कार्निवाल, द सिटी, मा उरू**। उनके 4 कविता संग्रह प्रकाशित हुए हैं, उन्होंने रंगमंच सिनेमा और कला के बारे में भी पुस्तकें लिखी हैं।

B. RAMACHANDRA RAO, 74, is an agriculturist and received a commendation from the Andhra Pradesh Government as the best agriculturist in 1959. He worked for 35 years as revenue village officer. Earlier he produced two versions of THE CITY (96 mins.—Telugu and 18 mins.—Urdu).

B. NARASINGA RAO has multi-faceted interests ranging from music, literature, photography and painting to film-making. In 1979 he produced MAA BHOOMI, directed by Goutam Ghose, a much acclaimed Telugu film. In 1983 he produced and directed RANGULA KALA that received National Award for the Best Telugu Feature Film. He also composed the music for both the feature films, and played the lead role in RANGULA KALA. Other films: THE CARNIVAL, THE CITY and MAA OORU. Published four volumes of poetry and wrote extensively on theatre, cinema and art.

संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल भाषाओं से भिन्न भाषा का सर्वोत्तम पुरस्कार

इन विच एनी गिव्स इट दोज़ वन्स (अंग्रेजी)

निर्माता **प्रदीप कृष्ण** को रजत कमल और 20,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **प्रदीप कृष्ण** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल भाषाओं से भिन्न भाषा का सर्वोत्तम कथाचित्र का 1988 का पुरस्कार अंग्रेजी फिल्म **इन विच एनी गिव्स इट दोज़ वन्स** को आज के छात्रों की पीड़ा तथा आकांक्षा को सुन्दर ढंग से चित्रण करने के लिए दिया गया है।

award for the best feature film in other languages than those specified in schedule VIII of the constitution.

IN WHICH ANNIE GIVES IT THOSE ONES

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000 to the Producer, Pradip Krisheh.

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director, Pradip Krishen.

citation

The Award for the Best Feature Film in other languages than those specified in Schedule VIII of the Constitution for 1988 is given to the English Film IN WHICH ANNIE GIVES IT THOSE ONES for portrayal of the agonies and aspiration of the present-day student community in excellent cinematic language.

प्रदीप कृष्ण ने वृत्त चित्रों के निर्देशक-कैमरा मैन के रूप में अपना फिल्मी जीवन शुरू किया। 1980 में फिल्म वित्त निगम की पहली पटकथा प्रतियोगिता में उन्हें प्रथम पुरस्कार मिला। 1985 में उन्होंने अपनी पहली फिल्म 'मैसी साहेब' बनाई। इस फिल्म को 1986 में वीनस फिल्म समारोह में पुरस्कार मिला। 1987 में नई दिल्ली में भारतीय अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में रघुवीर यादव को इस फिल्म में भूमिका के लिए सर्वोत्तम अभिनेता का पुरस्कार दिया गया। 1987 में ही भारतीय निर्देशक संघ की ओर से प्रदीप कृष्ण को वर्ष का श्रेष्ठ निर्देशक घोषित किया गया।

PRADIP KRISHEN started his career as a director-cameraman in documentary films. He won the top prize in the first script competition of the Film Finance Corporation in 1980 and made his first feature film MASSEY SAHIB in 1985. The film won the FIPRESCI prize at the Venice Film Festival in 1986 and the Best Actor Award for Raghuvir Yadav at the 1987 International Film Festival of India, New Delhi. He was voted the Director of the Year by the Indian Directors' Association for 1987.

विशेष उल्लेख

आमिर खान

कथाचित्र निर्णायक मण्डल ने **कयामत से कयामत तक** और **राख** फिल्मों में **आमिर खान** के कल्पनाशील, अभिनव तथा उदीयमान अभिनय के लिए विशेष उल्लेख किया है।

special mention

AAMIR KHAN

citation

The Jury desires to highlight the imaginative, innovative and promising performance of character roles in QAYAMAT SE QAYAMAT TAK and RAAKH by Aamir Khan.

आमिर खान विख्यात फिल्म निर्माता ताहिर हुसैन का बेटा है। पहली फिल्म **कयामत से कयामत तक** की अपूर्व सफलता से आमिर खान को बहुत प्रसिद्धि मिली है और युवक युवतियों में बहुत लोकप्रिय हुए। **राख** उनकी दूसरी फिल्म है और इससे आमिर खान का नाम और प्रसिद्ध हुआ है। वे केतन मेहता की फिल्म **होली** और आदित्य भट्टाचार्य की एक लघु फिल्म में भी अभिनय कर चुके हैं। आमिर खान ने अपने चाचा नासिर हसैन की दो फिल्मों **मंजिल-मंजिल** और **जबरदस्त** में सहायक निर्देशक के रूप में भी काम किया है।

AAMIR KHAN is the son of Tahir Husain, the eminent film producer. The phenomenal success of his debut-making feature film QAYAMAT SE QAYAMAT TAK catapulted him to fame and popularity and he became a rage with young people. RAAKH, his second feature film, has won him more acclaim. He has acted in Ketan Mehta's feature film HOLI and a short film by Aditya Bhattacharya. He was assistant director on two of his uncle Nasir Husain's films—MANZIL MANZIL and ZABARDAST.

पुरस्कार जो नहीं दिये गए

(1) सर्वोत्तम परिवार कल्याण फिल्म पुरस्कार।
(2) सर्वोत्तम बंगला कथाचित्र पुरस्कार।
(3) सर्वोत्तम मराठी कथाचित्र पुरस्कार।
(4) सर्वोत्तम तमिल कथाचित्र पुरस्कार।

निम्नलिखित भाषाओं में प्रविष्टियां प्राप्त नहीं हुई

(1) कश्मीरी
(2) गुजराती
(3) पंजाबी
(4) सिन्धी
(5) संस्कृत
(6) उर्दू

awards not given

The Feature Film Jury did not give the following awards:

1. Best Feature Film on Family Welfare
2. Best Feature Film in Bengali
3. Best Feature Film in Marathi
4. Best Feature Film in Tamil

There were no entries in the following languages:

1. Gujarati
2. Kashmiri
3. Punjabi
4. Sanskrit
5. Sindhi
6. Urdu

गैर-कथाचित्र पुरस्कार

AWARDS FOR NON-FEATURE FILMS

सर्वोत्तम गैर-कथा चित्र पुरस्कार

कनक-पुरन्दर

निर्माता **गिरीश कर्नाड** (फिल्म प्रभाग के लिए) को स्वर्ण कमल और 15,000/-रुपये का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **गिरीश कर्नाड** को स्वर्ण कमल और 15,000/-रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम गैर-कथाचित्र का 1988 का पुरस्कार **कनक पुरन्दर** को फिल्म कला के विभिन्न तत्वों का अनोखा मिश्रण करके **कनक दास** और **पुरन्दर दास** के जीवन-चरित्र के माध्यम से भक्ति के विभिन्न रूपों को अभिव्यक्त करने के लिए दिया है जो जाति सम्प्रदाय की सीमाओं को लांघ कर इंसान के, इंसान के प्रति और इंसान के ईश्वर के प्रति प्रेम का संदेश देती है।

award for the best non-feature film

KANAKA-PURANDARA

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 15,000 to the Producer, Girish Karnad (for Films Division).

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 15,000 to the Director, Girish Karnad.

citation

The Award for the Best Non-Feature Film of 1988 is given to KANAKA-PURANDARA for communicating, through the lives of Kanakadas and Purandaradas, the many facets of Bhakti, transcending all barriers of caste and creed, encompassing the love of man for man and man for God, using an unique fusion of different elements of cinema of the documentary genre.

गिरीश कर्नाड ने उच्च शिक्षा प्राप्त की है। वे 1974-1975 में पुणे के भारतीय फिल्म तथा टेलीविजन संस्थान के निदेशक रहे। उन्हें 1974 में पद्मश्री से सम्मानित किया गया। 1976 से 1978 तक वे कर्नाटक संगीत नाटक अकादमी और 1988-1989 में संगीत नाटक अकादमी के अध्यक्ष रहे। उन्होंने अनेक नाटक लिखे हैं जिनमें ययाति, तुगलक, हाय वदन, अंजुमलिज, हितिनाहुंजा और नाग मण्डला हैं जिनका विभिन्न भाषाओं में अनुवाद हुआ तथा प्रसिद्ध निर्देशकों ने इनका निर्देशन किया है। वे फिल्मों में अभिनेता, निर्देशक तथा कहानी और पटकथा लेखक सभी रूपों में काम करते हैं। उन्होंने कन्नड़ में **समस्कारा, वंशवृक्ष, काडू, तबल्यु नीनाड मागने, ओंडा नेंडू कालाडल्ली,** हिन्दी में **गोधुली** और **उत्सव** तथा दूरदर्शन के लिए हिन्दी नाटक **वो घर** का निर्देशन किया है। उनकी अनेक फिल्मों को राष्ट्रीय पुरस्कार मिले हैं तथा उन्हें अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में दिखाया गया है। 1977 में वे नई दिल्ली में भारतीय अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में निर्णायक मण्डल के सदस्य थे। उन्होंने रंगमंच, संस्कृति और सिनेमा के सम्बन्ध में कई आलेख भी लिखे हैं।

GIRISH R. KARNAD had a brilliant academic career. Was director, FTII, Pune (1974, 1975). Awarded Padma Shri (1974). President Karnataka Sangeet Natak Akademi (1976-1978). Chairman, Sangeet Natak Akademi, New Delhi (1988-1989). Original plays: YAYATI (1961), TUGHLAQ (1964), HAYAVADANA (1971), ANGUMALLIGE (1977); HITTINA HUNJA (1980), and NAGAMANDALA (1988). Most of them translated into many languages, both Indian and foreign, and directed by eminent directors. Cine star, director, scriptwriter and story writer. Films: SAMSKARA, VAMSHA VRIKSHA, KAADU, TABBALIYU NEENADE MAGANE, ONDANONDU KAALADALLI (all in Kannada), GODHULI, UTSAV (Hindi) WOH GHAR (television play in Hindi). Many of the films have won National Awards and shown at international film festivals. KAADU and ONDANONDU KAALADALLI were Indian entries at the International Film Festival of India (New Delhi) in 1975 and 1979. Was a Jury member of the 1977 IFFI, New Delhi. Wrote papers on a variety of subjects like theatre, culture and cinema.

सर्वोत्तम मानवशास्त्रीय/मानवजातीय फिल्म पुरस्कार

मा ऊरू

निर्माता **बी. रामचन्द्र राव** को रजत कमल और 10,000/-रुपये का नकद पुरस्कार।
निर्देशक **बी. नरसिंह राव** को रजत कमल और 10,000/-रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम मानवशास्त्रीय/मानवजातीय फिल्म का 1988 का पुरस्कार **मा ऊरू** को दिया गया है, जिसमें तेलंगाना में 1950 के दशक के समय के एक गांव के लोगों के जीवन को गहरी संवेदना और मनोरम ढंग से चित्रित किया गया है।

award for the best anthropological/ ethnographic film

MAA OORU

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Producer, B. Ramachandra Rao.

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director, B. Narasinga Rao.

citation

The Award for the Best Anthropological/Ethnographic Film of 1988 is given to MAA OORU which recalls with nostalgia the life of a village community of the fifties in Telengana and does so with sensitivity and a graphic lyricism.

बी. रामचन्द्र राव कृषि विशेषज्ञ के रूप में प्रसिद्ध हैं। 1959 में उन्हें आंध्र प्रदेश की ओर से राज्य का सर्वश्रेष्ठ कृषि विशेषज्ञ घोषित किया गया। उन्होंने 35 वर्ष तक राजस्व अधिकारी के रूप में काम किया। इससे पहले उन्होंने **'द सिटी'** फिल्म के तेलुगु (96 मिनट) और उर्दू (18 मिनट) संस्करणों का निर्माण किया।

बी. नरसिंह राव फिल्म निर्माण के साथ-साथ संगीत, साहित्य, फोटोग्राफी और चित्रकला में भी रुचि रखते हैं। 1979 में उन्होंने प्रसिद्ध तेलुगु फिल्म **'मा भूमि'** बनाई, जिसका निर्देशन गौतम घोष ने किया। 1983 में उन्होंने **रंगुल्ला कला** फिल्म का निर्माण और निर्देशन किया और उसे सर्वोत्तम तेलुगु कथाचित्र का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। उन्होंने इन दोनों फिल्मों का संगीत निर्देशन भी किया तथा **रंगुल्ला कला** में मुख्य अभिनेता के रूप में काम किया। उनकी अन्य फिल्में हैं **दा कार्निवाल, द सिटी, मा उरू**। उनके 4 कविता संग्रह प्रकाशित हुए हैं, उन्होंने रंगमंच सिनेमा और कला के बारे में भी पुस्तकें लिखी हैं।

B. RAMACHANDRA RAO, 74, is an agriculturist and received a commendation from the Andhra Pradesh Government as the best agriculturist in 1959. He worked for 35 years as revenue village officer. Earlier he produced two versions of THE CITY (96 mins.—Telugu and 18 mins.—Urdu).

B. NARASINGA RAO has multi-faceted interests ranging from music, literature, photography and painting to film-making. In 1979 he produced MAA BHOOMI, directed by Goutam Ghose, a much acclaimed Telugu film. In 1983 he produced and directed RANGULA KALA that received National Award for the Best Telugu Feature Film. He also composed the music for both the feature films, and played the lead role in RANGULA KALA. Other films: THE CARNIVAL, THE CITY and MAA OORU. Published four volumes of poetry and wrote extensively on theatre, cinema and art.

सर्वोत्तम कला/सांस्कृतिक फिल्म पुरस्कार

स्क्रॉल पेन्टर्स आफ बीरभूम (पटुवा)

निर्माता **दिलीप घोष** और **बिश्वनाथ बोस** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **राजा मित्रा** को रजत कमल और 10,000/-रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम कला/सांस्कृतिक फिल्म का 1988 का पुरस्कार **स्क्रॉल पेंटर्स आफ बीरभूम (पटुवा)** को चित्रकारों की एक समाप्तप्राय मुस्लिम जनजाति का गहरी संवेदना और अन्तर्दृष्टि के साथ चित्रण करने के लिए दिया गया है, जिसकी धर्म निरपेक्ष कला में चित्रकला तथा गायन का अद्भुत संगम दिखाई देता है।

award for the best arts/cultural film

SCROLL PAINTERS OF BIRBHUM (PATUA)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Producers, Dilip Ghosh and Biswanath Bose.

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director, Raja Mitra.

citation

The Award for the Best Arts/Cultural Film of 1988 is given to SCROLL PAINTERS OF BIRBHUM (PATUA) for portraying with sensitivity and insight the vanishing tribe of the Muslim scroll painters whose essentially secular art harmonises painting and singing.

दिलीप घोष का जन्म 1944 में कलकत्ता में हुआ। उन्होंने 1963 में भारतीय गण नाट्य संघ के अन्तर्गत अभिनेता और निर्देशक के रूप में नाटकों में काम करना शुरू किया। निर्माता के रूप में उनकी पहली फिल्म **'एकती जीवान'** (बंगला) को 1988 का निर्देशक की प्रथम सर्वोत्तम फिल्म का इंदिरा गांधी पुरस्कार प्रदान किया गया। ग्रामीण कलाओं में गहरी रुचि के कारण ही उन्होंने **स्क्रोल पेन्टर्स ऑफ बीरभूम** फिल्म बनाई है।

राजा मित्रा कलकत्ता विश्वविद्यालय से स्नातक हैं। वे अनेक साहित्यिक और फिल्मी पत्रिकाओं से जुड़े रहे हैं। 1978-80 में उन्होंने गौतम घोष के सहायक के रूप में काम किया। उन्होंने अनेक वृत्त चित्रों का निर्देशन किया है। इनमें **कोल फार द मासिस** (1978) **इकोनोमी आफ एच.एस. आइल इन रेलवेज** (1980) **कलकत्ता फुटपाथ ड्वेलर** (1981) **कलकत्ता पास्ट एंड परजेंट** (1986) और **ट्राइबल रिजिस्टेंस** (1987) शामिल हैं।

DILIP GHOSH, born in Calcutta in 1944, started his stage career as actor/director with Bharatiya Gana Natya Sangha in 1963. EKTI JIBAN (Bengali), his first feature film as producer, won the Indira Gandhi Award for the Best First Film of a Director in 1988. His keen interest in rural arts prompted him to produce SCROLL PAINTERS OF BIRBHUM (PATUA).

RAJA MITRA, a graduate from Calcutta University, has been associated with several literary and film journals, and assisted Goutam Ghose in 1978-80. EKTI JIBAN, his first feature film, won the National Award. He has directed several documentary films including COAL FOR THE MASSES (1978), ECONOMY OF H.S. OIL IN RAILWAYS (1980), CALCUTTA FOOTPATH DWELLER (1981), CALCUTTA, PAST AND PRESENT (1986) and THE TRIBAL RESISTANCE (1987).

सर्वोत्तम वैज्ञानिक (पर्यावरण तथा परिस्थिति विज्ञान सहित) फिल्म पुरस्कार

रिकंस्ट्रक्टिव सर्जरी लेप्रोसी (हैंड)

निर्माता **जाल मेहता** को रजत कमल और 10,000/-रुपये का नकद पुरस्कार।
निर्देशक **अनिल रेवंकर** को रजत कमल और 10,000/-रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम वैज्ञानिक (पर्यावरण तथा परिस्थिति विज्ञान सहित) का 1988 का पुरस्कार **रिकस्ट्रक्टिव सर्जरी लेप्रोसी (हैंड)** को कोढ़ के कारण खराब और अपंग हो गये हाथों की रिकंस्ट्रक्टिव सर्जरी का अत्यन्त विश्वसनीयता और कुशलता के साथ चित्रण करने के लिए दिया गया है, जिससे इस रोग के इलाज के लिए वैज्ञानिक तरीकों और स्वदेशी प्रयासों में लोगों का विश्वास बढ़ता है।

award for the best scientific film (including environment and ecology)

RECONSTRUCTIVE SURGERY LEPROSY (HAND)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Producer, Jal Mehta.

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director, Anil Revankar.

citation

The Award for the Best Scientific Film (including Environment and Ecology) of 1988 is given to RECONSTRUCTIVE SURGERY LEPROSY (HAND) for its meticulous and credible account of the reconstructive surgery on disfigured and disabled hands, evoking confidence in the scientific method and in indigenous endeavour.

डॉ जाल मेहता ने बम्बई विश्वविद्यालय से एम.बी.बी.एस. किया है और वे 20 वर्ष से अधिक समय से कुष्ठ रोग के इलाज से जुड़े हैं। पुणे के बन्दोरा वाला कुष्ठरोग अस्पताल का प्रबन्ध डॉ. जाल ही देखते हैं। इस अस्पताल में 425 रोगियों को रखने की व्यवस्था है। डॉ. जाल भारतीय रेडक्रास सोसाइटी, अन्तर्राष्ट्रीय कुष्ठ रोग कांग्रेस तथा सरकार के कुष्ठ रोग निवारण संगठनों के काम में भी सहयोग देते हैं। उन्होंने कुष्ठरोग के क्षेत्र में रिकंस्ट्रक्टीव और प्लास्टिक सर्जन के रूप में उल्लेखनीय काम किया है। वे अनेक लोगों का मुफ़्त इलाज भी करते हैं। 1982 में डॉ. जाल को पद्‌म भूषण से सम्मानित किया गया। डॉ. जाल द्वारा निर्मित फिल्म **'स्वीकार'** को 32वें राष्ट्रीय फिल्म समारोह में सर्वोत्तम समाज कल्याण फिल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान किया गया था।

अनिल रेवंकर व्यवसाय से इंजीनियर हैं। लेकिन फिल्म निर्माण तथा कम्प्यूटर कार्टून कला में उनकी गहरी रुचि है। इस समय वे कम्प्यूटर और उसके प्रभावों के बारे में शोध कार्य कर रहे हैं। रिकंस्ट्रक्टिव सर्जरी लेपरोसी (हैंड) उनके निर्देशन में बना तीसरा वृत्त चित्र है।

DR JAL MEHTA, MBBS from Bombay University, is connected with leprosy work for more than 20 years. To manage and develop the Dr Bandorawalla Leprosy Hospital, Pune, with 425 indoor patients, is the entire responsibility of DR MEHTA. Connected with Indian Red Cross Society, International Leprosy Congress, leprosy organisations of the Government. Has done pioneering work as a reconstructive and plastic surgeon in the field of leprosy. Does a lot of public charitable work on voluntary basis. Awarded Padma Bhushan in 1982. Is the director of Serum Institute and is in the forefront in the manufacture of viral vaccines and blood products in India. SWEEKER, produced by DR MEHTA, won National Award for the Best Social Welfare Film in the 32nd National Festival.

ANIL REVANKAR, engineer by profession, takes keen interest in film-making and computer animation. Presently he is doing research in "computer and its effects." RECONSTRUCTIVE SURGERY LEPROSY (HAND) is the third documentary directed by him.

सर्वोत्तम औद्योगिक फिल्म पुरस्कार

द डुयो

निर्माता **सनत कुमार दासगुप्ता** को रजत कमल और 10,000/-रुपये का नकद पुरस्कार।
निर्देशक **सनत कुमार दासगुप्ता** को रजत कमल और 10,000/-रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम औद्योगिक फिल्म का 1988 का पुरस्कार **द डुयो** को काँच और शीशे की चीजों के बड़े पैमाने पर उत्पादन को छायांकन कला के कुशल प्रयोग के माध्यम से अत्यन्त सूक्ष्मता तथा सुन्दरता के साथ चित्रित करने के लिए दिया गया है।

award for the best industrial film

THE DUO

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Producer, Sanat Kumar Das Gupta.

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director, Sanat Kumar Das Gupta.

citation

The Award for the Best Industrial Film of 1988 is given to THE DUO for capturing with economy and precision the mass production of ceramic and glassware in exquisite photographic detail.

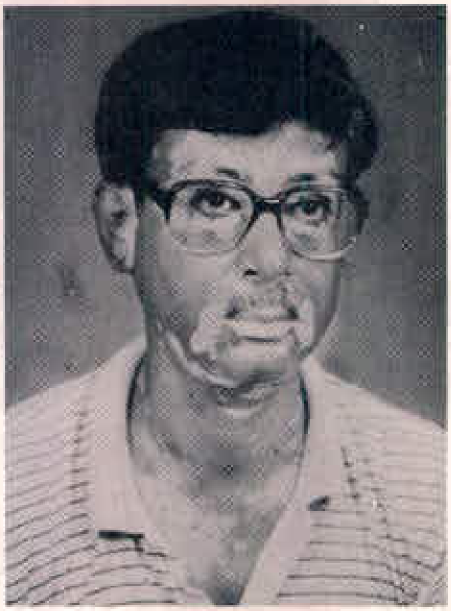

सनत कुमार दास गुप्ता का जन्म 1947 में हुआ। उनकी शिक्षा रीवा और कलकत्ता में हुई। फिल्मों में उनका रुझान 1970 के बाद हुआ। उन्होंने एक वृत्त चित्र **हंगरी ऑट्म** का संयुक्त रूप से निर्माण और निर्देशन किया। जिसे 1977 में लिपजिग फिल्म समारोह और 1978 में ओबर हासन फिल्म समारोह में पुरस्कार मिले। उन्होंने दूरदर्शन धारावाहिक **'बांगला गल्प विचित्र'** का निर्देशन किया। उन्होंने **'मा भूमि'** और **'दखल'** फिल्मों में गौतम घोष के सहायक के रूप में काम किया। इन दोनों फिल्मों को राष्ट्रीय पुरस्कार मिले। उन्होंने लगभग एक दर्जन वृत्त चित्रों का निर्माण और निर्देशन किया है।

SANAT KUMAR DAS GUPTA was born in 1947 and educated at Rewa and Calcutta. Developed interest in film-making in the early 70s. Co-produced and worked as associate director HUNGRY AUTUMN, a documentary which won the main award at the 1978 Oberhausen festival and diploma of merit at the 1977 Leipzig festival. Directed tele-serial "Bangla Galpo Bichitra". Worked as associate director with Goutam Ghose—MAA BHOOMI and DAKHAL, both National Award winners. Produced and directed about a dozen documentary films.

सर्वोत्तम कृषि फिल्म पुरस्कार (पशु पालन डेरी आदि विषय सहित)

सीड्स आफ होप

निर्माता **ईको मीडिया प्राइवेट लिमिटेड** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।
निर्देशक **शेखर दत्तात्री** और **रोम व्हिटाकर** को रजत कमल और 10,000/-रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम कृषि (पशु पालन डेरी आदि विषय सहित) फिल्म का 1988 का पुरस्कार **सीड्स ऑफ होप** को बढ़िया किस्म के बीजों के उत्पादन तथा पौध तैयार करने जैसे पहलुओं पर प्रकाश डाल कर वृक्षारोपण के संदेश के प्रसार के लिए दिया गया है।

award for the best agricultural film (to include subjects related and allied to agriculture like animal husbandry, dairying, etc.)

SEEDS OF HOPE

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Producers, M/s Eco Media (Private) Limited.

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Directors, Shekar Dattatri and Rom Whitaker.

citation

The Award for the Best Agricultural Film (to include subjects related and allied to agriculture like animal husbandry, dairying, etc.) of 1988 is given to SEEDS OF HOPE for its profound and intimate plea for afforestation, transcending the purely instructional aspects of the production of quality seeds and saplings.

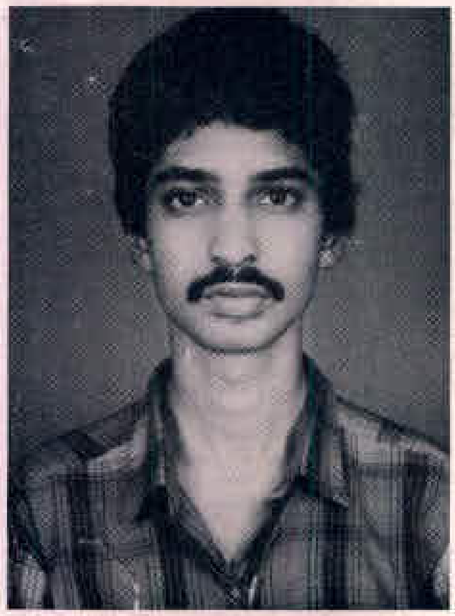

इको मीडिया की स्थापना 1985 में हुई। इसके अन्तर्गत एक दर्जन फिल्मों का निर्माण किया है। इसकी फिल्म **स्नैक बाइट** को तीन अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार मिले। इनमें 1988 में ब्रिटिश मैडिकल एसोसिएशन का स्वर्ण पुरस्कार भी शामिल है। इसकी फिल्म **'ए को-आपरेटिव फॉर स्नैक कैचर्स'** को 1988 का सर्वोत्तम पर्यावरण और परिस्थिति विज्ञान फिल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला।

शेखर दत्तात्री ने लोयोला कालेज मद्रास में प्राणी विज्ञान का अध्ययन किया। वे वन्य प्राणियों के कुशल फोटोग्राफर और प्राकृतिक विषयों के फिल्मकार हैं। उन्हें वन्य जीवन तथा पर्यावरण सम्बन्धी समस्याओं के अध्ययन का कई वर्षों का अनुभव है।

रोमुलुस व्हिटाकर प्रकृति प्रेमी हैं। जो भारतीय नागरिक बन गये हैं। वे जाने माने प्राकृतिक संरक्षण विशेषज्ञ तथा सर्प विशेषज्ञ हैं। उन्हें वन्य जीव जन्तुओं के संरक्षण के लिए अनेक अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार मिले हैं।

ECO MEDIA was started in 1984, and has produced half a dozen documentaries. Its SNAKEBITE has won three international awards, including the British Medical Association's Gold Award in 1988. A COOPERATIVE FOR SNAKE CATCHERS won the 1988 National Award for Best Film on Environment and Ecology.

SHEKAR DATTATRI studied zoology at Loyola College, Madras. Is a keen wildlife photographer and naturalist-filmmaker with many years of serious involvement in wildlife and environmental issues.

ROMULUS WHITAKER, a naturalised Indian citizen, is a wellknown conservationist and herpetologist. Recipient of many international awards for conservation, including the Sir Peter Scott Award, Ridder of the Golden Ark and Rolex Award for Enterprise.

सामाजिक विषयों पर सर्वोत्तम फिल्म

वाईसिज़ फ्रॉम बलियापल

निर्माता मैसर्स **विक्टर प्रोडक्शन्स** को रजत कमल और 10,000/-रुपये का नकद पुरस्कार।
निर्देशक **वसुधा जोशी** तथा **रंजन पालित** को रजत कमल और 10,000/-रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सामाजिक विषयों पर सर्वोत्तम फिल्म का 1988 का पुरस्कार **वायसिज़ फ्रॉम बलियापल** को बलियापल के लोगों द्वारा अपनी उपजाऊ और समृद्ध भूमि पर मिसाइल परीक्षण क्षेत्र बनाने के विरोध में अहिंसक आंदोलन चलाने की कहानी को अत्यन्त स्पष्टता, प्रामाणिकता तथा खोज पूर्ण शैली में प्रस्तुत करने के लिए दिया गया है।

award for the best film on social issues

VOICES FROM BALIAPAL

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Producers, M/s. Vector Productions.

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Directors, Vasudha Joshi and Ranjan Palit.

citation

The Award for the Best Film on Social Issues of 1988 is given to VOICES FROM BALIAPAL for the meticulousness of its investigation and the clarity and conviction with which it carries the story of the non-violent resistance of the people of Baliapal against the establishing of a missile testing range on their rich and fertile lands.

वसुधा जोशी ने समाजशास्त्र की शिक्षा प्राप्त करने के बाद ब्रिटेन में साऊथाल के मानिटरिंग रेसीजिम तथा पुलिस अत्याचार की जानकारी रखने वाले संगठन में कार्य किया। 1985 में उन्होंने बैंडिग प्रोडक्शन्स में चैनल 4 न्यूज के लिए शोध कर्ता/रिपोर्टर के रूप में प्रवेश किया, जो ब्रिटेन में आदिवासी लोगों की समस्याओं पर मुख्य प्रकाश डालती थी। आजकल वे कलकत्ता में रहती हैं, और स्वतन्त्र रूप से रिपोर्टिंग तथा लघु फिल्में बना रहीं हैं।

रंजन पालित ने पूना फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान से छायांकन में डिप्लोमा प्राप्त किया है। छायाकार के रूप में मुख्य फिल्म हैं आनन्द पटवर्धन द्वारा निर्देशित **बम्बई हमारा शहर** है। अन्य मुख्य फिल्में **भोपाल — ए लाइसेंस टू किल** और **द सैकरीफाईस आफ बाबूलाल भुइया।**

After studying sociology, VASUDHA JOSHI worked for an organisation monitoring racism and police atrocities in Southhall, UK. In 1985 she joined Bandung Productions as a researcher/reporter for Channel 4 News, which focused on blacks in the UK. She now lives in Calcutta and is involved in independent documentaries and freelance reporting.

RANJAN PALIT, a diploma holder in cinematography from FTII, Pune, was the main cameraman for Anand Patwardan's BOMBAY— OUR CITY. Other important films photographed by him include BHOPAL — A LICENSE TO KILL and THE SACRIFICE OF BABULAL BHUIYA.

सर्वोत्तम शैक्षणिक/अभिप्रेरक फिल्म पुरस्कार

चिट्ठी

निर्माता **मैसर्स सिनेमार्ट फाउंडेशन** को रजत कमल और 10,000/-रुपये का नकद पुरस्कार।
निर्देशक **सुहासिनी मुले** को रजत कमल और 10,000/-रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम शैक्षणिक/अभिप्रेरक फिल्म का 1988 का पुरस्कार **चिट्ठी** को निरक्षरता की समस्या को प्रेम और हास्य-विनोद के जरिये हल करने के प्रयासों को प्रामाणिक तथा प्रभावशाली ढंग से चित्रित करने के लिए दिया गया है।

award for the best educational/ motivational film

CHITTHI

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Producers, M/s. Cinemart Foundation.

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director, Suhasini Mulay.

citation

The Award for the Best Educational/Motivational Film of 1988 is given to CHITTHI for its authentic and poignant enactment of the problem of illiteracy that is treated with compassion and gentle humour.

सिनेमार्ट फाउंडेशन ने 1979 से अब तक 24 वृत्त चित्र बनाये हैं। जिनमें से 3 को राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुये है। **'एन् इंडियन स्टोरी'** को 1983 में सर्वोत्तम वृत्तचित्र, **मित्र निकेतन, वेल्लानाड,** को 1987 में सर्वोत्तम शैक्षणिक फिल्म और **भोपाल बियानृड जेनोसाइड** को 1988 में सर्वोत्तम वृत्तचित्र का पुरस्कार मिला। इसकी अनेक फिल्में सिडनी, लंदन, टाइनसाइड, लिपजिग, ओबर हासन, मान हाइन तथा अन्य फिल्म समारोह में दिखाई गई हैं।

सुहासिनी मुले पहले अभिनेत्री के रूप में और बाद में निर्देशक के रूप में फिल्मों से जुड़ी रही हैं। उन्होंने सत्यजीत रे और मृणाल सेन के साथ सहायक निर्देशक के रूप में भी काम किया। उन्होंने अब तक वृत्त चित्रों का निर्देशन किया है। जिनमें **भोपाल बियोनृड जैनोसाइड** भी शामिल है।

Out of the 24 documentary films produced by CINEMART FOUNDATION since 1979, three have won National Awards: 1) AN INDIAN STORY—the Best Documentary in 1983; 2) MITRANIKETAN, VELLANAD—the Best Educational Film in 1987; and BHOPAL: BEYOND GENOCIDE—Golden Lotus for the best documentary film in 1988. Many of its films have been shown at Sydney, London, Tyneside, Leipzig, Oberhausen, Mannheim, Upasala and other festivals.

SUHASINI MULAY has been associated as an actress and then as a director with the film industry. She has worked as an assistant director with Satyajit Ray and Mrinal Sen. Has directed five documentary films including BHOPAL: BEYOND GENOCIDE to date.

सर्वोत्तम समाचार चित्र पुरस्कार

मोर दैन ए सक्सैस स्टोरी (समाचार चित्र संख्या 129)

निर्माता **बिरेन दास** (फिल्म प्रभाग) को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

कैमरामैन **के.बी. नायर** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम समाचार चित्र का 1988 का पुरस्कार **मोर दैन ए सक्सैस स्टोरी (समाचार चित्र संख्या 129)** को उन लोगों की प्रेरक और मार्मिक गाथाओं को अत्यन्त प्रभावशाली तथा सुन्दर शैली में चित्रित करने के लिए दिया गया है, जिन्होंने अपनी सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों तथा शारीरिक विकलांगता पर विजय प्राप्त की है।

award for the best news film

MORE THAN A SUCCESS STORY (NEWS MAGAZINE NO. 129)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Producer, Biren Das (for Films Division).

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Cameraman, K.B. Nair.

citation

The Award for the Best News Film of 1988 is given to MORE THAN A SUCCESS STORY (NEWS MAGAZINE NO. 129) which goes beyond the limitations of the news film format to tell the inspiring and moving stories of those who have triumphed over their socio-economic circumstances and physical disabilities.

बिरेन दास ने 1976 में भारतीय फिल्म तथा टेलीविजन संस्थान से फिल्म निर्देशन का पाठयक्रम पूरा किया। वे 1978 से फिल्म प्रभाग में काम कर रहे हैं और उन्होंने 20 वृत्त चित्रों का निर्देशन किया है। वे कवि, नाटककार और कहानीकार भी हैं। बंगला में उनके दो उपन्यास प्रकाशित हुये हैं।

के.बी. नायर ने गुरूदत्त की चार फिल्मों **प्यासा, कागज के फूल, चौदहवीं का चांद** तथा **साहिब बीबी और गुलाम** में सहायक कैमरामैन के रूप में काम किया। 1962 में फिल्म प्रभाग में भरती हुये और उन्होंने 200 से अधिक समाचार चित्रों तथा 10 रंगीन फिल्मों का छायांकन किया है। 70 से अधिक वृत्त चित्रों तथा समाचार चित्रों के लिए उन्होंने कैमरामैन के रूप में काम किया। फिल्म प्रभाग की दो फिल्मों **लाईफ** और **अंब्रेला** को 1971 में राष्ट्रीय पुरस्कार मिले इन फिल्मों में के.बी. नायर ने कैमरामैन के रूप में काम किया। समाचार चित्र संख्या 20-**द पोप मीट्स इंडिया** के लिए कैमरा के जिस दल को श्रेष्ठ घोषित किया गया था, उसमें के.बी. नायर भी शामिल थे।

BIREN DAS did his film direction course at the FTII, Pune, in 1976. Joined the Films Division in 1978 and has directed 20 documentary films. Published two novels in Bengali. Is a poet, playwright and short story writer.

K.B. NAIR worked as assistant cameraman on four Guru Dutt Films—PYASA, KAGAZ KE PHOOL, CHAUDWIN KA CHAND and SAHIB BIBI AUR GHULAM. Joined Films Division in 1962 and photographed more than 200 newsreels and ten colour cartoon films, worked as cameraman on more than 70 documentary films and news magazines. LIFE and UMBRELLA, two Films Division films, on which he worked as operative cameraman, won National Awards in 1971. Adjudged as one of the group of best cameramen for NEWS MAGAZINE NO. 20—THE POPE MEETS INDIA.

निर्णायक-मण्डल विशेष पुरस्कार

मणि कौल

निर्देशक **मणि कौल** को रजत कमल और 8,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

निर्णायक मण्डल का 1988 का विशेष पुरस्कार **मणि कौल** को उनकी फिल्म **बिफोर माई आईज़** के लिए दिया गया है, जिसमें फिल्म-कला पर अद्भुत नियंत्रण के माध्यम से दृश्य विधान तथा ध्वनि के प्रभावशाली सामंजस्य से, बिना किसी कमेन्ट्री के कश्मीर के प्राकृतिक सौन्दर्य का मनोहारी चित्रण किया गया है।

special jury award

Mani Kaul for BEFORE MY EYES

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 8,000 to the Director, Mani Kaul.

citation

The Special Jury Award for 1988 is given to MANI KAUL for his film BEFORE MY EYES which captures the textures of Kashmir's landscape with a rare control over cinematic form that combines visual poetry with an effective use of sound on a track that uses no commentary.

मणि कौल ने निर्देशक के रूप में सबसे पहले **उसकी रोटी** फिल्म बनाई। इसके बाद उन्होंने **'आषाढ़ का एक दिन'** तथा **'दुविधा'** का निर्देशन किया। इन सभी फिल्मों को राष्ट्रीय पुरस्कार मिले और विभिन्न फिल्म समारोह में उनकी फिल्मों का प्रदर्शन किया गया। मणि कौल की अन्य फिल्में हैं। **द नोमैड पपेटियर, हिस्टोरीकल स्केच ऑफ इंडियन वुमेन, चित्रकथा, एराइवल, सतह से उठता आदमी, द डेजर्ट ऑफ ए थाउजैंड लाइव्स** और **ध्रुपद**। ये सभी फिल्में काफी सराही गई। हाल में उन्होंने फिल्म प्रभाग के लिए **आंगन बिरह** और राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम—दूरदर्शन के लिए टैली फिल्म **'नजर'** बनाई है।

MANI KAUL made his debut as a director with USKI ROTI and followed it up with ASHAD KA EK DIN and DUVIDHA, all of which have won National Awards and critical acclaim at many festivals. A Jawaharlal Nehru Fellow, he has had retrospective shows of his films at Rotterdam (1981) and Pesaro (1985). His other films—THE NOMAD PUPPETEER, HISTORICAL SKETCH OF INDIAN WOMEN, CHITRAKATHA, ARRIVAL, SATAH SE UTATHA ADMI, THE DESERT OF A THOUSAND LIVES, and DHRUPAD—have also won acclaim. His current productions are: AANGAN BIRHA for Films Division and NAZAR, a tele-film for NFDC-Doordarshan.

सर्वोत्तम लघु कल्पित फिल्म (70 मिनट की अवधि तक की फिल्में)

द स्टोरी ऑफ टिबल्यू निर्माता **संतोष सिवन** (फिल्म प्रभाग के लिए) को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **संतोष सिवन** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम लघु कल्पित फिल्म का 1988 का पुरस्कार अरुणाचल प्रदेश की इदु भाषा की फिल्म **द स्टोरी ऑफ टिबल्यू** को दिया गया है। इस फिल्म में एक उत्साही जनजातीय लड़की का चित्रण किया गया है, जो शहर के एक स्कूल में एकदम नया वातावरण होने के बावजूद अपने ढंग से काम करती है और प्रकृति के समीप रहने के कारण अपने जीवन में विद्यमान भोलेपन तथा कोमल भावनाओं का परित्याग नहीं करती। इस फिल्म में जनजातीय अभिनेताओं के वास्तविक वातावरण में किए गये अभिनय में ताजगी और स्वाभाविकता झलकती है।

award for short fiction film (films not exceeding 70 minutes duration)

THE STORY OF TIBLU

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Producer, Santosh Sivan (for Films Division).

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director, Santosh Sivan.

citation

The Award for the Best Short Fiction Film of 1988 is given to THE STORY OF TIBLU in the Idu Language of Arunachal Pradesh telling the story of a spirited young tribal girl who comes into her own in the alien environment of an urban school, while retaining the innocence and sensitivity bred of living close to nature; and for capturing the freshness and spontaneity of its tribal actors in real-life locations with enduring simplicity.

सन्तोष सिवन का जन्म 1961 में हुआ। 1984 में भारतीय फिल्म तथा टेलीविजन संस्थान से छायांकन की डिग्री प्राप्त की। उन्होने अनेक फीचर तथा लघु फिल्मों का छायांकन किया है। उन्होंने वृत्त चित्र **स्टोरी ऑफ टिबल्यू** की पटकथा लिखने के साथ छायांकन, निर्माण और निर्देशन किया। इस फिल्म को सर्वोत्तम छायांकन और सर्वोत्तम निर्देशन का भारतीय वृत्त चित्र निर्माता संघ का पुरस्कार दिया गया।

SANTOSH SIVAN, born in 1961, graduated from the FTII, Pune, in 1984. Has photographed numerous short and feature films including RAAKH. Has scripted, produced, photographed and directed STORY OF TIBLU, which has also won two IDPA awards—the best cinematography and the best director.

परिवार कल्याण सम्बन्धी सर्वोत्तम फिल्म

लछमी

निर्णय

निर्माता **के.के. गर्ग,** फिल्म प्रभाग (**लछमी** के लिए) और **बी.आर. शेंड्गे** (**निर्णय** के लिए) को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **ओम प्रकाश शर्मा** (**लछमी** के लिए) और **आर.आर. स्वामी** (**निर्णय** के लिए) को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

परिवार कल्याण सम्बन्धी सर्वोत्तम फिल्म 1988 का पुरस्कार **लछमी** को बहुत सादगी तथा सहजता से की गई सच्ची लगने वाली कहानी के माध्यम से परिवार कल्याण का सशक्त संदेश प्रस्तुत करने के लिए दिया गया है।

परिवार कल्याण सम्बन्धी सर्वोत्तम फिल्म का 1988 का पुरस्कार **निर्णय** को नसबंदी तथा इस प्रक्रिया के प्रति लोगों में विश्वास पैदा करने के लिए कार्टून तथा अभिनय कला का कारगर उपयोग करते हुए स्पष्टता और सादगी के साथ परिवार कल्याण का संदेश प्रस्तुत करने के लिए दिया गया है।

के.के. गर्ग ने 1961 में फिल्म प्रभाग में निर्देशक के सहायक के रूप में काम करना आरंभ किया और उप-निर्देशक तथा निर्माता के पदों पर काम करते हुए इस समय वे संयुक्त मुख्य निर्माता के रूप में काम कर रहे हैं। उन्होंने लगभग 30 वृत्त चित्रों का निर्देशन और करीब 70 वृत्त चित्रों का निर्माण किया है। उन्हें लगभग 30 राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार मिले हैं।

ओम प्रकाश शर्मा 1960 से फिल्म प्रभाग में काम कर रहे हैं। उन्होंने 200 से अधिक लघु फिल्मों का निर्माण और निर्देशन किया है। उन्हें भी 30 से अधिक राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुये हैं। उनकी कुछ उल्लेखनीय लिल्में हैं:- **संदेश, मैरीकलचर, हाइम, क्राफट चाराऊ, मार्कफेड, मार्चिस अ हैड, ईरैडिकेटिंग रैनुडर पेस्ट, डैब्रंर्ट रिक्लेमेशन,** और **प्रोस्पेरिटी इन ड्राउट प्रोन एरियाज।**

बी.आर. शैंड्गे ने ड्राईंग और चित्रकला में डिप्लोमा प्राप्त किया है और वे एक सिद्धहस्त कलाकार हैं। वे 1961 से फिल्म प्रभाग की कार्टून फिल्म इकाई में काम कर रहे हैं। उन्हें अनेक कार्टून फिल्मों के लिए राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार मिले हैं। इनमें उल्लेखनीय हैं — **अम्ब्रेला, सिन्थेसिस, ला ऑफ नेचर, प्रिसियस वाटर और वार्ली पेंटिंग।**

आर.आर. स्वामी का जन्म 1941 में हुआ। उन्होंने बम्बई के जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट्स से व्यावहारिक कला का डिप्लोमा प्राप्त किया। पिछले 22 वर्षों से वे फिल्म प्रभाग और दूरदर्शन के लिए कार्टून तथा ग्राफिक्स का काम कर रहे हैं।

award for the best film on family welfare

LACCHMI and NIRNAY

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Producers, K.K. Garg, Films Division (for LACCHMI) and B.R. Shendge, Films Division (for NIRNAY).

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Directors, Om Prakash Sharma (for LACCHMI) and R.R. Swamy (for NIRNAY).

citation

The Award for the Best Film on Family Welfare of 1988 is given to LACCHMI for weaving a powerful family welfare message into a credible story told simply and gently

The Award for the Best Film on Family Welfare of 1988 is also given to NIRNAY for the clarity and simplicity with which, making effective use of both animation and live action, it communicates aspects of sterilisation, evoking confidence in its procedures.

K.K. GARG, who joined Films Division as assistant to director in 1961, has worked as deputy director, director and producer and presently is Joint Chief Producer. He has directed about 30 documentary films and produced about 70. He has won as many as 30 national and international awards.

OM PRAKASH SHARMA, Producer, Films Division, joined it in 1960 and has produced and directed over 200 short films, which have brought him more than 30 national and international awards. Some of the notable films by him are: SANDESH, MARI CULTURE, HYDRAM, CRAFT CHARAKU, MARKFED MARCHES AHEAD, ERADICATING RENDER PEST, DESERT RECLAMATION, and PROSPERITY IN DROUGHT-PRONE AREAS.

B.R. SHENDGE, a diploma holder in drawing and painting and a qualified Art Master, joined the Cartoon Film Unit of Films Division in 1961 and has scripted, animated, directed and produced various types of short animated films. He has won national and international awards for many of his animated and cartoon films such as UMBRELLA, SYNTHESIS, LAW OF NATURE, PRECIOUS WATER and WARLI PAINTING.

R.R. SWAMY, born in 1941, studied applied art with J.J. School of Arts, Bombay. For the last 22 years he is working in animation and graphics for Films Division and TV.

विशेष उल्लेख

गैर-कथाचित्र निर्णायक मण्डल ने **एन.एच. प्रसाद** को, **डिस्पोजेशन** फिल्म में एक असाधारण विषय को चित्रित करने तथा फिल्म कौशल में नये और अभिनव प्रयोग करने के लिए विशेष उल्लेख किया है।

special mention

The Non-Feature Film Jury makes a Special Mention of N.H. PRASAD for his fresh and innovative experimentation with cinematic form, dealing with an unusual theme in the film DISPOSSESSION.

एन.एच. प्रसाद ने मद्रास विश्वविद्यालय से स्नातक और नार्थ ईस्ट हिल यूनीवर्सिटी शिलांग से स्नातकोत्तर डिग्री प्राप्त की उन्होंने भारतीय फिल्म संस्थान से फिल्म निर्देशन का डिप्लोमा प्राप्त किया। वे प्राध्यापक रहे हैं और उन्होंने रक्षा मंत्रालय में डैस्क आफ़िसर के रूप में भी काम किया है। **डिस्पोजेशन** उनकी डिप्लोमा फिल्म है।

N.H. PRASAD, a graduate from Madras University and a post-graduate from North Eastern Hill University (Shillong), completed his course in film direction at FTII, Pune. He has been a lecturer and worked as a desk officer in the Ministry of Defence. DISPOSSESSION is his diploma film.

पुरस्कार जो नहीं दिए गए

गैर-कथाचित्र निर्णायक मण्डल ने निम्नलिखित पुरस्कार नहीं दिए:

1. सर्वोत्तम जीवनी सम्बन्धी फिल्म पुरस्कार।
2. सर्वोत्तम ऐतिहासिक पुनर्निमाण/संकलन फिल्म पुरस्कार।
3. सर्वोत्तम खोजी/साहसिक (खेल सहित) फिल्म पुरस्कार।
4. सर्वोत्तम कार्टून फिल्म पुरस्कार।

awards not given

The Non-Feature Film Jury did not give the following awards:

1. Best Biographical Film.
2. Best Historical Reconstruction/Compilation Film.
3. Best Exploration/Adventure Film (to include Sports).
4. Best Animation Film.

सिनेमा लेखन पुरस्कार

AWARDS FOR WRITING ON CINEMA

सर्वोत्तम सिनेमा पुस्तक पुरस्कार 1988

द मूविंग इमेज (अंग्रेजी)

लेखक **किशोर वालीचा** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम सिनेमा पुस्तक 1988 का पुरस्कार **किशोर वालीचा** को उनकी पुस्तक **द मूविंग इमेज** (अंग्रेजी) के लिए दिया गया है। ओरियंट लांगमैन द्वारा प्रकाशित इस पुस्तक में नाटकीय शैली का प्रयोग करते हुए गहरा विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

award for the best book on cinema 1988

THE MOVING IMAGE

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the author, Kishore Valicha.

citation

The Award for the Best Book on Cinema for 1988 is given to KISHORE VALICHA for his book THE MOVING IMAGE (English) published by Orient Longman for its analytical insights and its plausible theoretical framework.

किशोर वालिचा एक तेजस्वी लेखक हैं। उन्होंने विज्ञान तथा दार्शनिक जैसे विभिन्न विषयों पर लेखन कार्य किया है। वे बम्बई विश्वविद्यालय में दर्शन विषय पढ़ाते है। वे आजकल बम्बई विश्वविद्यालय के डिस्टैंन्स एज्यूकेशन संस्थान में निदेशक के पद पर हैं, तथा राष्ट्रीय फिल्म संग्राहलय एवं राष्ट्रीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान पूना में अतिथि प्राध्यापक के रूप में भी कार्य कर रहे हैं।

A prolific writer, KISHORE VALICHA has written on various subjects ranging from science and technology to philosophy. Has taught philosophy to PG students at Bombay University. Presently Director of the Distance Education Institute, Bombay University. He is also a guest lecturer at NFAI and FTII, Pune.

सर्वोत्तम फिल्म पत्रकार पुरस्कार 1988

मनमोहन चड्ढा

फिल्म पत्रकार **मनमोहन चड्ढा** को रजत कमल और 5,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम फिल्म पत्रकार का 1988 का पुरस्कार **मनमोहन चड्ढा** को फिल्मों के बारे में हिन्दी में उनके लेखन में दृष्टिकोण की गंभीरता तथा विचारों की व्यापकता के लिए दिया गया है।

award for the best film journalist of 1988

MANMOHAN CHADHA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 5,000.

citation

The Award for the Best Film Journalist of 1988 is given to MANMOHAN CHADHA for his writing on cinema in Hindi, for the seriousness of his approach and the wide compass of his thoughts.

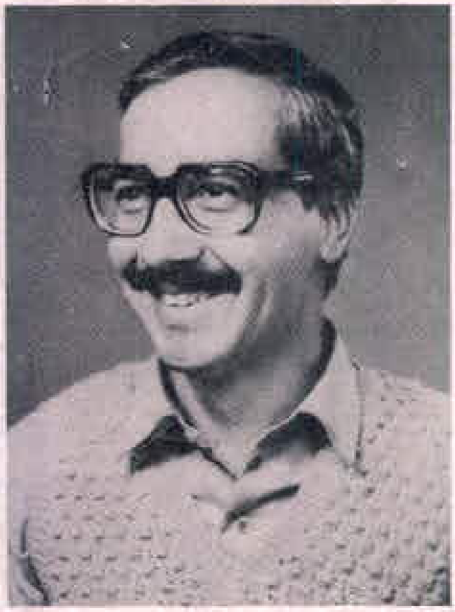

मनमोहन चड्ढा ने 1973 में अर्थशास्त्र में एम.ए. किया। 1976 में उन्होंने भारतीय फिल्म तथा टेलीविजन संस्थान से पटकथा लेखन का डिप्लोमा विशेष योग्यता के साथ प्राप्त किया। 1977 से 1984 तक वे संस्थान में पटकथा लेखन के प्राध्यापक के रूप में काम करते रहे। वे दूरदर्शन पर दिखाए गये लोकप्रिय कार्यक्रम 'हम लोग' में कुमार वासुदेव के सहायक निर्देशक थे। कुमार वासुदेव के निर्देशन में बने एक और दूरदर्शन धारावाहिक **अजूबे** में वे मुख्य सहायक निर्देशक थे। हिन्दी की अनेक प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में उनकी कहानियाँ प्रकाशित हुई हैं। फिल्मों के बारे में भी उन्होंने काफी लिखा है। उनकी पुस्तक **'हिन्दी सिनेमा का इतिहास'** मुद्रणाधीन है।

MANMOHAN CHADHA did his M.A. in Economics in 1973. In 1976 completed his diploma in screenplay writing with distinction from the Films and Television Institute, Pune. From 1977 to 1984 taught screenplay writing at the Institute. Was assistant director, Humlog, the popular TV soap opera, directed by Kumar Vasudev. Chief assistant director, Ajube, another TV serial, directed by Kumar Vasudev. Has published short stories in renowned Hindi magazines. Been writing on cinema in various serious magazines. Book in print: History of Hindi Cinema.

कथासार :
कथाचित्र :

SYNOPSES: FEATURE FILMS

बन्नडा वेशा

कन्नड़/110 मिनट

निर्माण: दूरदर्शन, बंगलौर **निर्देशन/पटकथा:** गिरीश कासरवल्ली **मुख्य अभिनेता:** श्रीधर **मुख्य अभिनेत्री:** समिता कासरवल्ली **सह-अभिनेता:** ए.बी. जयराम/नारायण भट्ट **सह-अभिनेत्री:** शातम्मा **बाल कलाकार:** मन्जुनाथ छायांकन: जी.एस. भास्कर **ध्वनि आलेखन:** पी. श्रीनिवासन **संपादन:** एम.एन. स्वामी **कला निर्देशन:** टी.बी. श्रीनिवास **वेशभूषा:** वैशाली कासरवल्ली **संगीत निर्देशन:** बी.वी. कारन्थ **गीत:** ए.एन. मधस्थ **पार्श्व गायक:** मारियाप्पचर/रामाअचर

शम्भू यक्ष गण अभिनेता है। वह चौदश्वरी मेले को छोड़कर एक यक्ष गण मण्डली में शामिल हो जाता है। वह एक राक्षस जुंजुटि की बन्नडा वेशा भूमिका (मुखौटा पहनकर किया जाने वाला अभिनय) करने को तैयार हो जाता है जिसके लिए दूसरे अभिनेता राजी नहीं होते। बढ़िया अभिनय करने की धुन में वह बहुत थक जाता है और बेहोश होकर मंच पर गिर जाता है। उसे जोर-जोर से साँस लेकर और काँपते हुए देखकर मन्दिर का पुजारी भूत-प्रेत को मनाने की कोशिश करता है।

अब शम्भू प्रतिष्ठित अभिनेता बन जाता है। और लोग उसका बहुत सम्मान करते हैं। उसे लगता है कि इस भूमिका के लिए किसी और को रखना आसान नहीं है। इसलिए वह इस नई भूमिका में रम जाता है। उसे महसूस होने लगता है कि वह सामान्य मानवीय सम्बन्धों से कटता जा रहा है।

नई भूमिका के लिए शम्भू की खोज जारी रहती है।

Kannada/110 mts.

BANNADA VESHA

Producer: Doordarshan, Bangalore **Director/Screenplay Writer:** Girish Kasaravalli **Leading Actor:** Sridhar **Leading Actress:** Smitha Kasaravalli **Supporting Actor:** A.B. Jayaram/Narayan Bhatt **Supporting Actress:** Shatamma **Child Artiste:** Master Manjunath **Cameraman:** G.S. Bhaskar **Audiographer:** P. Srinivasan **Editor:** M.N. Swamy **Art Director:** T.B. Srinivas **Costume Designer:** Vaishali Kasaravalli **Music Director:** B.V. Karanth **Lyricist:** A.N. Madhastha **Male Playback Singer:** Mariappachar/Ramachar

Shambhu, an ambitious Yakshagana player, quits Chowdeshwari Mela to join Yakshagana troupe to make it big. He agrees to play the Bannada Vesha ("The Masked Role") of Junjutti the devil which others are reluctant to do. In his anxiety to excel, he drives himself to exhaustion and collapses on the stage. Seeing him trembling and heaving, the temple caretaker tries to appease the 'spirit'.

Now that Shambhu is a revered player—has achieved public recognition and adoration—and is not easy to replace, he begins to indulge in his new-found role. He begins to realise also the inevitable alienation from normal human relationships. Shambhu continues his search for the role.

दासी

तेलुगु/94 मिनट

निर्माण: बी. रामचन्द्र राव **निर्देशन/पटकथा/संगीत** बी. नरसिंह राव **मुख्य अभिनेता:** भूपाल रेड्डी **मुख्य अभिनेत्री:** अर्चना **सह-अभिनेता:** सुददप्पा नायडू **सह-अभिनेत्री:** रूपा **छायाँकन:** ए.के. बीर **ध्वनि आलेखन:** अरुण शर्मा **सम्पादन:** डी. राजगोपाल, **कला निर्देशन:** टी. वैकुंठन **वेशभूषा:** सुदर्शन

इस फिल्म में इस शताब्दी के आरंभिक वर्षों की एक प्रथा की कहानी चित्रित की गई है जिसमें लड़की की शादी पर दहेज के रूप में किसी गरीब परिवार की लड़की को खरीद कर दिया जाता था। डोरा सानी जानकी नाम की एक लड़की की शादी जैसीमा की गर्द में होती है तो कमलाक्षी नाम की एक दासी उसके साथ भेजी जाती है, जैसा कि रिवाज था, कमलाक्षी घर का काम काज करने के साथ-साथ परिवार के पुरुषों की काम वासना तृप्त करने का भी साधन बन जाती है। कुछ समय बाद वह गर्भवती हो जाती है। जब कमलाक्षी अपने पेट के बच्चे को जन्म देने की इच्छा प्रकट करती है तो उसे पता चलता है कि नौकरानी को अपना बच्चा पैदा करने का कोई अधिकार नहीं है, डोरा सानी उसे गर्भपात कराने का आदेश देती है।

Telugu/94 mts.

DASI

Producer: B. Ramachandra Rao **Director/Screenplay Writer/Music Director:** B. Narasinga Rao **Leading Actor:** Bhoopal Reddy **Leading Actress:** Archana **Supporting Actor** Siddappa Naidu **Supporting Actress:** Roopa **Cameraman:** A.K. Bir **Audiographer:** Arun Sharma **Editor:** D. Rajagopal **Art Director:** T. Vaikunthan **Costume Designer:** Sudarshan.

Set in the early part of the century, the film spotlights the ethos of an era and a decadent custom that provided for purchase of girls from poor peasant parents, to be sent as part of dowry along with the daughter of the household. Kamalakshi, a Dasi, arrives as part of dowry when Dorasani Janaki marries into the "Gadi" of Jayasimha. As the custom provides, she becomes a readily available in-house female to appease the lust of men, besides performing household chores. Nature takes its course, she becomes pregnant. Juxtaposing the celebrations that herald the pregnancy of Dora's sister with the anguish of Kamalakshi to retain her child, she realises that as a servant she has no right to have a child of her own. Dorasani orders her to terminate the pregnancy.

एक दिन अचानक

हिन्दी/105 मिनट

निर्माण : राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम और दूरदर्शन, **निर्देशन/पटकथा** : मृणाल सेन **मुख्य अभिनेता** : डाक्टर श्रीराम लागू **मुख्य अभिनेत्री** : शबाना आज़मी **सह-अभिनेता** : अर्जुन चक्रवर्ती **सह-अभिनेत्री** : उत्तरा बावकर **छायांकन** : के.के. महाजन **ध्वनि आलेखन** : बी.के. चक्रवर्ती **संपादन** : मृण्मयत चक्रवर्ती **कला निर्देशन** : गौतम बोस **वेशभूषा** : मनुदत्त **संगीत निर्देशन** : ज्योतिष्का दासगुप्ता

एक अवकाश प्राप्त शिक्षा शास्त्री एक दिन अचानक कहीं गायब हो जाता है। बहुत तेज वर्षा हो रही है जब वर्षा कुछ कम होती है तो वह घूमने के लिए बाहर निकल जाता है। काफी समय बीतने पर भी वह वापस नहीं आता उसके बच्चे तथा पत्नी अपने आपसे पूछने लगते हैं क्या उन्होंने कोई गलत व्यवहार किया, क्या वह उनसे नाराज था। प्रत्येक व्यक्ति के इस तरह से सोचने पर वह खोया हुआ आदमी पर्दे पर आता है और पिछली घटनायें हमारे सामने प्रकट होने लगती हैं। फिर हम वर्तमान में लौटते हैं और इस तरह उस व्यक्ति के साथ परिवार जनों के सम्बन्धों का ताना-बाना उभरता रहता है। पिछली घटनायें क्रमानुसार हमारे सामने नहीं लाई जातीं। इस तरह लोगों के अन्दर की कहानी हमारे सामने आती है।

Hindi/105 mts.

EK DIN ACHANAK

Producer: National Film Development Corporation and Doordarshan **Director/Screenplay Writer:** Mrinal Sen **Leading Actor:** Dr Shriram Lagoo **Leading Actress:** Shabana Azmi **Supporting Actress:** Uttara Baokar **Cameraman:** K.K. Mahajan **Audiographer:** B.K. Chaturvedi **Editor:** Mrinmoy Chakraborty **Art Director:** Goutam Bose **Costume Designer:** Manu Dutt **Music Director:** Jyotishka Dasgupta.

Suddenly one day he disappears. The retired academician watches the rain falling incessantly. As the downpour subsides, he goes out for a walk to come back in an hour. Time passes. He does not return. His children and wife become introspective and look back. Were they unkind to him? Was he dissatisfied with them? At every introspection the lost man appears on the scene and the narrative moves from present to the past, to the present again—all fragmented encounters between him and the others. All that happened in the past freely intermingles, not necessarily in chronological order. And thus emerges an internal story, hitherto unknown.

इन विच एन्नी गिव्स इट दोज वन्स

अंग्रेजी/112 मिनट

निर्माण/निर्देशन: प्रदीप कृष्ण **पटकथा/मुख्य अभिनेत्री:** अरून्धती राय **मुख्य अभिनेता:** अर्जुन रैना **सह-अभिनेता:** रोशन सेठ **सह-अभिनेत्री:** हिमानी शिवपुरी **छायांकन:** राजेश जोशी **ध्वनि आलेखन:** इन्द्रजीत नियोगी **संपादन:** ए. त्यागराजु, **कला निर्देशन:** अरून्धती राय/रवि कैमल **वेशभूषा:** विवेका कुमारी

''गिविंग इट टू दोज वन्स'' यह मुहावरा दिल्ली विश्वविद्यालय में अपना सामान्य काम करने के लिए प्रचलित है। लेकिन नई दिल्ली के स्थापत्य कला विद्यालय के एक छात्र आनन्द ग्रोवर, जिसे एन्नी कहा जाता है, के लिये इसका मतलब हेरा-फेरी करना और गलत रास्ते पर चलना है। एन्नी और उसके दूसरे साथी किताबी दुनिया से निकल कर व्यावहारिक दुनिया में पांव रखने वाले हैं। कुछ लोगों के लिए कागजों पर लकीरें खींचने और पेड़-पौधे बनाने के संसार से निकल कर सीमेंन्ट और इस्पात की दुनिया में पहुँचना सजह स्वाभाविक है। लेकिन कुछ छात्रों के लिए यह परिवर्तन ना तो आसान है और ना तर्क पूर्ण ही। शोध लेख की जांच करने वाला दल अंमित रूप से यह पता लगाता है कि किस छात्र को पास करना है या फेल करना है। स्टूडियो का डायेक्टर यमदूत भी इसी मौके पर पुराने बदले लेता है।

इस फिल्म में परम्परागत ढंग से कहानी को चित्रित नहीं किया गया लेकिन फिर भी यह एन्नी की कहानी है।

English/112 mts.

IN WHICH ANNIE GIVES IT THOSE ONES

Producer/Director: Pradip Krishen **Screenplay Writer/Leading Actress:** Arundhati Roy **Leading Actor:** Arjun Raina **Supporting Actor:** Roshan Seth **Supporting Actress:** Himani Shivpuri **Cameraman:** Rajesh Joshi **Audiographer:** Inderjit Neogi **Editor:** A. Thyagaraju **Art Director:** Arundhati Roy/Ravi Kaimal **Costume Designer:** Viveka Kumari

"Giving it to those ones" is Delhi University slang for doing one's usual act. In the case of Annie, nickname for Anand Grover, a student at the architecture school in New Delhi, it means being a bit of a bungler, a sort of misguided visionary. Someone who has lost his way. Annie and his classmates are poised to graduate from college into real life. For some, the transition—from the world of pretty drawings and palm trees in plan, to the world of cement and steel—is an easy, logical culmination. For others it is neither easy nor logical. The Thesis Jury is the final do-or-die that determines whether a student graduates or repeats the whole year. It is also the time when Yamdoot, the studio director, settles old scores.

"Those Ones" does not tell a conventional story yet it is a story of Annie.

किचि स्मृति किचि अनुभूति

उड़िया/87 मिनट

निर्माण: के. जगदेश्वरी **निर्देशन:** मनमोहन महापात्र **पटकथा:** नन्दलाल महापात्र **मुख्य अभिनेता:** हेमन्त दास **मुख्य अभिनेत्री:** सुजाता आनन्द **सह-अभिनेता:** रन्जन पटनायक **सह अभिनेत्री:** वर्षा प्रियदर्शनी **छायांकन:** अरुण मिश्र **ध्वनि आलेखन:** संजय पाठक/नाथन **संपादन:** गदा पुटी **कला निर्देशन:** बंचनिधी पटनायक **संगीत निर्देशन:** शान्तनू महापात्र

आदिकन्द साठ वर्षीय अवकाश प्राप्त व्यक्ति है जिसे उसकी पत्नी अपनी बेटी कुनी के लिए वर ढूंढने के लिए बार-बार कहती रहती है। कुनी का दिलीप से प्रेम है और वह उससे विवाह करना चाहती है। आदिकन्द का छोटा लड़का सत्य कम्प्यूटर की शिक्षा लेना चाहता है। सबसे बड़ा बेटा नित्यानन्द भुवनेश्वर में नौकरी करता है और वहीं रहता है। आदिकन्द अपना अधिकतर समय माधव के साथ बिताता है, जो विधुर है। वे दोनों अपने अतीत को याद करते हुए अपने-अपने परिवारों की उलझनें एक दूसरे को बताते रहते हैं। सत्य कमप्यूटर की पढ़ाई के लिए भुवनेश्वर चला जाता है। आम के बाग में घूमते हुए आदिकन्द को माधव की कही हुई ये बात याद आती है, जिन्दगी में सब कुछ अस्थायी होता है और कुछ भी स्थायी नहीं होता। अचानक उसे बच्चे के रूप में सत्य की आवाज सुनाई देती है जो उसे अपनी ओर बुला रहा है। वह कल्पना और यथार्थ को सामने देखकर भ्रमित हो जाता है।

Oriya/87 mts.

KICHI SMRUTI KICHI ANUBHUTI

Producer: K. Jagadeswari **Director:** Manmohan Mahapatra **Screenplay Writer:** Nandalal Mahapatra **Leading Actor:** Hemant Das **Leading Actress:** Sujata Anand **Supporting Actor:** Niranjan Patnaik **Supporting Actress:** Barsha Priyadarshini **Cameraman:** Arun Misra **Audiographers:** Sanjay Pathak/Nathan **Editor:** Gadadhar Putty **Art Director:** Banchanidhi Patnaik **Music Director:** Santanu Mahapatra

Adikanda, a retired man in his 60s, is nagged by his wife to find a match for daughter Kuni who is in love with Dilip and plans to marry him. His younger son, Satya, is interested in pursuing computer studies. The eldest son, Nityanada, works and stays in Bhubaneswar. Adikanda spends his time in the company of Madhab, a widower, and they share their cherished moments of the past and concerns for their families. Satya leaves for Bhubaneswar for computer studies. One day Madhab breathes his last. While wandering all alone in the mango groove. Adikanda is reminded of what Madhab used to say—all is transient and nothing is permanent. Suddenly he hears the voice of child Satya calling out to him, and is baffled by the imaginary and the real.

कोलाहल

असमिया/118 मिनट

निर्माण/निर्देशन/पटकथा: डाक्टर भबेन्द्र नाथ सैकिया **मुख्य अभिनेता:** अरुण नाथ **मुख्य अभिनेत्री:** रानू देवी ठाकुर **सह-अभिनेता:** बिद्युत चक्रवर्ती **सह-अभिनेत्री:** चेतना दास **बाल कलाकार:** प्लावन बारदोलोई **छायांकन:** कमल नायक **ध्वनि आलेखन:** पीयूष कान्ती राय **संपादन:** निकुन्ज भट्टाचार्य **कला निर्देशन:** पथिक बरुआ **संगीत निर्देशन:** मुकुल बरुआ **गीत:** स्वर्गीय दुर्गेश्वर शर्मा

इस फिल्म में अधेड़ उम्र की एक औरत किरण की कहानी है जो पूरी तरह अपने बेटे मोती पर निर्भर है। मोती वहाँ से गुजरने वाले ट्रकों से अनाज इकट्ठा करता है। किरण का पति विनोद काम धन्धे की तलाश में किसी और शहर में चला गया। एक चौकीदार किरण से प्यार जताता है और स्थानीय दादा भी उसे लालच देता है लेकिन किरण उनके बहकावे में नहीं आती। एक दिन मोती ट्रक के नीचे आ कर मर जाता है। ट्रक का मालिक किरण के पास चावल की एक बोरी भेजता है जिस पर मोती के खून के धब्बे पड़े होते हैं। ट्रक का क्लीनर बादल, किरण की मदद करने और उसके साथ शादी करने की इच्छा प्रकट करता है। उधर किरण को ये खबर मिलती है कि उसका पति विनोद किसी और स्त्री के साथ रहने लगा है, इससे उसका दिल टूट जाता है। उसे अपने चारों ओर अंधेरा दिखाई देता है लेकिन वह हिम्मत बटोरकर बादल को बुला लेती है।

Assamese/118 mts.

KOLAHAL

Producer/Director/Screenplay Writer: Bhabendra Nath Saikia **Leading Actor:** Arun Nath **Leading Actress:** Runu Devi Thakur **Supporting Actor:** Bidyut Chakraborty **Supporting Actress:** Chetana Das **Child Artiste:** Plaban Bardoloi **Cameraman:** Kamal Nayak **Audiographer:** Piyush Kanti Roy **Editor:** Nikunja Bhattacharjee **Art Director:** Phatik Barua **Music Director:** Mukul Barua **Lyricist:** Late Durgeswar Sarma.

To keep the pot boiling, Kiron, a middleaged housewife, is entirely dependent on her son, Moti, who picks up foodgrains from the passing trucks. Her husband, Binod, had gone off to another town, supposedly in search of a job. Bravely, she resists the advances of a watchman and the proposal of a local dada to become her "temporary guardian." One day Moti is crushed to death. The truck owner sends her a bagful of rice stained with Moti's blood. The truck cleaner, Badal, offers to support and marry her. The news of Binod living with another woman dismays her. Her world had almost collapsed yet she picks up courage and sends for Badal. After all, life, another name for compromise, has to be lived.

मैं जिन्दा हूँ

हिन्दी/105 मिनट

निर्माण : राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम, दूरदर्शन **निर्देशन/पटकथा :** सुधीर मिश्र **मुख्य अभिनेत्री :** दीप्ती नवल **सह-अभिनेता :** पंकज कपूर, कुलभूषण खरबन्दा, अलोकनाथ **सह-अभिनेत्री :** सुष्मिता मुखर्जी **बाल कलाकार :** रावी गुप्ता **छायांकन :** राजेश जोशी **ध्वनि आलेखन :** अजय मुंजाल **संपादन :** रेणु सलूजा **कला निर्देशन :** पार्थ सेनगुप्त **वेशभूषा :** मधुश्री दत्ता **संगीत निर्देशन :** सारंग देव **गीत:** जावेद अख्तर

बीना को, जो कि एक अनाथ व्यक्ति है, पता चलता है कि उसका पति क्लर्क के रूप में अपनी नौकरी से दुखी है और कुछ नया करने के सपने देखता है। एक दिन वह अचानक लापता हो जाता है। पुलिस परिवार को ये सलाह देती है कि उसे मरा हुआ ही मान लिया जाए। बीना अपने सास-ससुर तथा परिवार के अन्य लोगों के भरण पोषण के लिए नौकरी करने लगती है। शुरू में घर वाले उसके नौकरी करने का विरोध करते हैं लेकिन धीरे-धीरे वह सारे घर को सम्भाल लेती है। कुछ दिन बाद उसका एक और आदमी रवि से प्रेम हो जाता है, घर वाले चुपचाप देखते रहते हैं क्योंकि वह घर छोड़ने की धमकी देने लगती है। तभी एक दिन आलोक वापस आ जाता है। घर के लोगों का रवैया एकदम बदल जाता है। वे आलोक को बताते हैं कि वे तबाह हो गये हैं। रात को आलोक बीना से कहता है कि इतने दिन गायब रहने का उसे बहुत अफसोस है और वह सब कुछ ठीक कर लेगा। सवेरे बीना इस स्वार्थी परिवार को छोड़ देती है और रवि को फोन पर बताती है कि वह घर छोड़कर उसके पास आ रही है।

Hindi/105 mts.

MAIN ZINDA HOON

Producer: National Film Development Corporation/Doordarshan **Director/Screenplay Writer:** Sudhir Mishra **Leading Actress:** Deepti Naval **Supporting Actors:** Pankaj Kapur/Kulbhushan Kharbanda/Aloknath **Supporting Actress:** Sushmita Mukherjee **Child Artiste:** Raavee Gupta **Cameraman:** Rajesh Joshi **Audiographer:** Ajay Munjal **Editor:** Renu Saluja **Art Director:** Partho Sen Gupta **Costume Designer:** Madhu Shree Dutta **Music Director:** Sharang Dev **Lyricist:** Javed Akhtar

Beena, an orphan, discovers that her husband, Alok, the only bread-winner in the family, is tired of his dreary job and seeks adventure. One day he disappears. The police tell the family to accept him as dead. To support her in-laws, Beena takes up a job. Slowly she starts asserting herself and sets the house in order. The inevitable happens. She is romantically involved with another man Ravi. The family silently resigns to it. Then one day Alok is back. The family takes a total turnabout. They tell Alok that they were on the verge of ruin. At night Alok tells Beena that he was sorry and would try to make amends. In the morning Beena walks out on the selfish family, phones up Ravi to give him the news of her quitting.

मनु अंकल

मलयालम/110 मिनट

निर्माण: जॉय थामस **निर्देशन:** डैनिस जोसेफ **पटकथा/गीत:** शिबू चक्रवर्ती **मुख्य अभिनेता:** मम्मुट्टि **मुख्य अभिनेत्री:** लिससी **सह अभिनेता:** त्यागराजन **मुख्य अभिनेत्री:** के.पी.ए.सी. ललिता **बाल कलाकार:** सीनोया/अमित/संदीप **छायांकन:** जयंत विसेंट **ध्वनि आलेखन:** सम्पत **संपादन:** के. संकुन्नी **कला निर्देशन:** साबू प्रावदास **वेशभूषा:** एम.एम. कुमार **संगीत निर्देशन:** श्याम **पार्श्व गायक:** एम.जी. श्रीकुमार **पार्श्व गायिका:** चित्रा

चार बच्चों का दल घूमने फिरने के लिए जाता है। इनमें रेणु, शंकु, डैनी और एकुरू शामिल हैं। जिनकी उम्र पाँच से बारह साल के बीच है। वे एक म्यूजियम जाते हैं। वहाँ उन्हें एक जीप दिखाई देती है जिसके बोनट पर चाँदी का बना एक घोड़ा लगा हुआ है। एकरू को एक आदमी दिखाई देता है जो मार्तण्ड वर्मा के राज मुकुट के सामने किसी चीज से छेड़खानी कर रहा है। मनु ने, जिसे बच्चे प्यार से मनु अंकल कहते हैं, मार्तण्ड वर्मा की शाही तलवार चुराने की कोशिश को विफल कर दिया। लुटेरों के साथ लड़ाई में रेणु और शंकु के दादा मारे जाते हैं। खादर नाम के एक अनाथ लड़के की मदद से चारों बच्चे उस जगह पहुँचते हैं जहाँ लुटेरे चुराई गई प्राचीन वस्तुओं को बेच रहे होते हैं। ये बच्चे नौकाओं को बाँध देते हैं जिससे लुटेरे भाग नहीं सकते और मनु की मदद से वे लुटेरों को पकड़ लेते हैं।

Malayalam/110 mts.

MANU UNCLE

Producer: Joy Thomas **Director:** Dennis Joseph **Screenplay Writer/ Lyricist:** Shibu Chakravarthi **Leading Actor:** Mamootti **Leading Actress:** Lissy **Supporting Actor:** Thyagarajan **Supporting Actress:** K.P.A.C. Lalitha **Child Artiste:** Sonia/Amith/Sandeep **Cameraman:** Jayanan Vincent **Audiographer:** Sampath **Editor:** K. Sankunny **Art Director:** Sabu Pravadas **Costume Designer:** M.M. Kumar **Music Director:** Shyam **Male Playback Singer:** M.G. Sreekumar **Female Playback Singer:** Chithra

Four children, called "Gang of Four"—Renu (10), Sanku (12), Dany (11) and Ekru (5)—go for sightseeing, At a museum they spot a jeep with a small silver horse fixed at the bonnet. Ekru sees a man tinkering with something in front of the Crown of Marthanda Varma. Immediately after the Crown is stolen. An attempt to steal the Royal Sword of Marthanda Varma is foiled by Manu, lovingly called Manu Uncle. In the action against the robbers, the grandfather of Renu and Sanku is killed. With the help of an orphan boy, Khader, the children reach the shore where the robbers are selling the stolen antiques. By tying the boats, they make the robbers' escape impossible and overpower them.

पिरवी

मलयालम/110 मिनट

निर्माण: एस. जयचन्द्रन नायर **निर्देशन/वेशभूषा:** शाजी एन. करुण **पटकथा:** एस. जयचन्द्रन नायर/रघुनाथ पलेरी/शाजी **मुख्य अभिनेता:** प्रेमजी **मुख्य अभिनेत्री:** अर्चना **सह-अभिनेता:** सी.वी. श्रीरामन/मुल्लेने **सह-अभिनेत्री:** कृष्णा मूर्ति **छायांकन:** सन्नी जोसेफ **ध्वनि आलेखन:** कृष्णन ऊन्नी **संपादन:** वेणु गोपाल **कला निर्देशन:** देवन करुवत्तुमाना **संगीत निर्देशन:** जी. अरविन्दन

एक बूढ़ा व्यक्ति चकयार गांव के बस स्टाप पर अपने बेटे रघु के आने का इन्तजार कर रहा है। रघु शहर में इंजीनियरी पढ़ता है। आखरी बस आकर भी चली जाती है लेकिन रघु नहीं आता। चकयार घर लौट जाता है। अखबारों में खबर छपती है कि रघु तथा दो आदमी सरकार विरोधी गाना गाने के लिए गिरफ़ार कर लिये गये है। चकयार रघु को छुड़ाने के लिए त्रिवेन्द्रम जाता है। गृह मंत्री जो कभी पढ़ाई-लिखाई के लिए चकयार के परिवार पर निर्भर हुआ करता था, उसे पुलिस के महानिदेशक के नाम एक पत्र देता है। चकयार को पता चलता है कि रघु को गिरफ़ारी के थोड़ी देर बाद ही रिहा कर दिया गया था। चकयार की बेटी को इसमें कुछ गड़बड़ दिखाई देती है और वह सच्चाई का पता लगाने के लिए त्रिवेन्द्रम जाती है। उसे मालूम होता है कि रघु को जेल में पीटा गया जिससे हो सकता है उसकी मृत्यु हो गई हो। जब वह गांव वापस जाती है तो उसका बाप पागल हो चुका होता है और वह इस तरह आचरण करता जैसे रघु उसे निकट ही दिखाई दे रहा हो।

Malayalam/110 mts.

PIRAVI

Producer: S. Jayachandran Nair **Director/Costume Designer:** Shaji N. Karun **Screenplay Writers:** S. Jayachandran Nair/Raghunath Paleri/Shaji **Leading Actor:** Premji **Leading Actress:** Archana **Supporting Actor:** C.V. Sreeraman/Mullene **Supporting Actress:** Krishna Moorthy **Cameraman:** Sunny Joseph **Andiographer:** Krishnan Unni **Editor:** Venugopal **Art Director:** Devan Karuvattumana **Music Director:** G. Aravindan

Chakyar, an old man, waits at a village bus stop for the arrival of his son, Raghu, an engineering student. The last bus from the city unloads a motley group of people but Raghu is not there. Chakyar trudges back home.

The newspapers report the arrest of Raghu and two others for singing an anti-Government song. Chakyar travels to Trivandrum to seek Raghu's release. The home minister, once dependent on Chakyar's family for his education, gives him a letter for the inspector-general of police who tells him that Raghu was released soon after his arrest. The daughter, suspecting foul play, goes to Trivandrum to find out the truth. She discovers that Raghu was tortured in the lock-up and was probably dead. Back home, she finds her father mentally deranged and behaving as if he were seeing Raghu beside him.

कयामत से कयामत तक

हिन्दी/उर्दू/165 मिनट

निर्माण : नासीर हुसैन फिल्मस **निर्देशन :** मंसूर खान **पटकथा :** नासिर हुसैन **मुख्य अभिनेता :** आमिर खान **मुख्य अभिनेत्री :** जूही चावला **सह-अभिनेता :** राजन जुत्शी **छायांकन :** किरण देवहंस **ध्वनि आलेखन :** मनोहर बंगेरा **संपादन :** जफर सुल्तान **कला निर्देशन :** शिबू **वेशभूषा :** सोनिया **संगीत निर्देशन :** आनंद मिलिन्द/चित्रगुप्त **गीत :** मजरुह सुल्तानपुरी **पार्श्व गायक :** आदित्य नारायण **पार्श्व गायिका :** अल्का याज्ञिक

एक छोटे से गांव में मामूली सी घटना ठाकुर धनराज सिंह और ठाकुर रणधीर सिंह के बीच दुश्मनी का कारण बन जाती है। ये कटुता इतनी गहरी हो जाती है कि नफरत का जहर अगली पीढ़ी तक भी पहुँचता है। कुछ साल बाद धनराज के बेटे राज और रणधीर की बेटी रश्मि एक दूसरे को चाहने लगते है। दोनों का प्रेम बहुत आगे बढ़ जाता है लेकिन उनके माँ बाप आपसी दुश्मनी के कारण उन्हें भी एक-दूसरे से घृणा करने की सीख देते हैं। कड़े विरोध के बावजूद प्रेम में डूबे राज और रश्मि एक-दूसरे से जुदा ना होने की कसमें खाते हैं।

Hindi/165 mts.

QAYAMAT SE QAYAMAT TAK

Producer: Nasir Husain Films **Director:** Mansoor Khan **Screenplay Writer:** Nasir Husain **Leading Actor:** Aamir Khan **Leading Actress:** Juhi Chawla **Supporting Actor:** Rajan Zutshi **Cameraman:** Kiran Deohans **Audiographer:** Manohar Bangera **Editor:** Zafar Sultan **Art Director:** Shiboo **Costume Designer:** Sonya **Music Director:** Anand/Milind/Chitragupta **Lyricist:** Majrooh Sultanpuri **Male Playback Singer:** Udit Narayan **Female Playback Singer:** Alka Yagnik

A certain small incident in a small village became the root cause of enmity between the families of Thakur Dhanraj Singh and Thakur Randhir Singh. It took on so bitter shades that it continued to send shockwaves of hatred and bloodshed into the next generation as well. ... Several years later, fate brought young people together—Dhanraj's son Raj and Randhir's daughter Rashmi. Drawn irresistibly together, their romance ignited long-simmering passions and the two feuding families tried to force the young lovers to accept a heritage of mutual hatred. Despite strict opposition, Raj and Rashmi, driven by force of emotions, continue to plan their life together.

राख

हिन्दी/150 मिनट

निर्माण: आसिफ नूर **निर्देशन/पटकथा:** आदित्य भट्टाचार्य **मुख्य अभिनेता:** आमिर खान **मुख्य अभिनेत्री:** सुप्रिया पाठक **सह-अभिनेता:** पंकज कपूर **सह-अभिनेत्री:** नैना बलसावर **बाल कलाकार:** अहमद **छायांकन:** संतोष सिवन **ध्वनि आलेखन:** हरीश व्यास **संपादन:** ए. श्रीकर प्रसाद **कला निर्देशन:** विनेश गांधी **वेशभूषा:** चिनू भट्टाचार्य **संगीत निर्देशन:** रंजीत बरोट

इक्कीस साल का युवक आमिर नीता नाम की एक लड़की से प्रेम करता है। नीता व्यावहारिक किस्म की लड़की है जो जिन्दगी में आगे बढ़ना चाहती है। एक बार रात को दोनों घर लौट रहे होते हैं तो रास्ते में कुछ लोग नीता से बलात्कार करते हैं। आमिर मन मारकर चुपचाप ये दृश्य देखता रहता है और कुछ कर नहीं पाता। उसके मन में अन्याय के खिलाफ लड़ने की इच्छा और बहुत गहरा क्रोध उमड़ता है। वह पुलिस सब-इंसपैक्टर कपूर के पास पहुँचता है जिसने नीता के सामूहिक बलात्कार का दृश्य देखा था लेकिन उस समय वह ड्यूटी पर नहीं था। कपूर आमिर को दिलासा देता है कि वह उसकी मदद करेगा। वे दोनों मिलकर बलात्कार करने वालों का सफाया करने की योजना बनाते हैं। नीता अपनी जिन्दगी धीरे-धीरे नये सिरे से शुरू करने लगती है लेकिन आमिर हिंसा के दलदल में फंस जाता है।

Hindi/150 mts.

RAAKH

Producer: Asif Noor **Director/Screenplay Writer:** Aditya Bhattacharya **Leading Actor:** Aamir Khan **Leading Actress:** Supriya Pathak **Supporting Actor:** Pankaj Kapur **Supporting Actress:** Naina Balsawer **Child Artiste:** Ahmed **Cameraman:** Santosh Sivan **Audiographer:** Harish Vyas **Editor:** A. Sreekar Prasad **Art Director:** Vinesh Gandhi **Costume Designer:** Chinu Bhattacharya **Music Director:** Ranjit Barot

For Aamir, 21, the only colour to his otherwise mundane life is his obsession for Neeta, a pragmatic career woman. One night, on their way back home, Neeta is gang-raped. Amir, watching helplessly, can do nothing about it. Possessed by impotent rage and a sense of injustice, he feels he is being torn apart. Ironically, he turns to sub-inspector Kapur who during the off-duty hours was a silent witness to the frightful incident. Kapur has promised to help Aamir who now feels he has a friend. Together, they set about eliminating their common enemy—the dreaded rapists. Neeta has decided to reconstruct her life, slowly but painfully. Aamir slips into the vortex of terrifying violence, a road to certain doom.

रुद्र वीणा

तेलुगु/170 मिनट

निर्माण: के नगेन्द्र बाबू **निर्देशन/पटकथा:** के. बालचन्दर **मुख्य अभिनेता:** चिरंजीव **मुख्य अभिनेत्री:** शोभना **सह-अभिनेता:** प्रसाद बाबू **सह-अभिनेत्री:** सुमीत्रा **छायांकन:** रघुनाथ रेड्डी **ध्वनि आलेखन:** पानूडु रंगन **संपादन:** गणेश और कुमार **कला निर्देशन:** मोहनम **वेशभूषा:** कृष्णा **संगीत निर्देशन:** इलयाराजा **गीत:** श्रीवेनेल्लआ सीताराम शास्त्री **पार्श्व गायक:** के.जे. येसुदास/एस.पी. बालसुब्रमण्यम/नसगुरु बाबू **पार्श्व गायिका:** चित्रा

क्या किसी कलाकार को अपने आस-पास हो रही घटनाओं के प्रति सामाजिक रूप से जागरूक होना चाहिए, इस बात को लेकर शास्त्रीय संगीतकार गणपती शास्त्री और उनके लड़के सूर्यम में मतभेद है। सूर्यम ने भी शास्त्रीय संगीत की शिक्षा पाई है। सूर्यम हमेशा गरीबों की मदद करने को तैयार रहता है। बाप बेटे में वैचारिक मतभेद के कारण आपसी सम्बन्ध बिगड़ जाते हैं। सूर्यम एक गांव में जा कर रहने लगता है और ग्रामीण उत्थान के काम में लग जाता है। उस के प्रयासों के कारण गांव में ना कोई अपराध होता है और ना ही वहाँ पुलिस थाना बनता है। गाँव में कोई राजनीतिक पार्टी भी नहीं है। सूर्यम का सम्मान करने के लिए प्रधानमंत्री गांव में आने का कार्यक्रम बनाते हैं। सूर्यम की इस आदर्श सामाजिक चेतना से प्रभावित होकर गणपति शास्त्री भी समाज सेवा के लिए तैयार हो जाते हैं।

Telugu/170 mts.

RUDRA VEENA

Producer: K. Nagendra Babu **Director/Screenplay Writer:** K. Balachander **Leading Actor:** Chiranjeev **Leading Actress:** Shobhana **Supporting Actor:** Prasad Babu **Supporting Actress:** Sumitra **Cameraman:** Raghunath Reddy **Audiographer:** Pandurangan **Editor:** Ganesh and Kumar **Art Director:** Mohanam **Costume Designer:** Krishna **Music Director:** Ilaiya Raja **Lyricist:** Sirivennela Seetharama Sastry **Male Playback Singers:** K.J. Yesudass/S.P. Balasubrahmaniam/Nagoor Babu **Female Playback Singer:** Chithra.

Should an artiste be socially conscious of the things happening around him?

The issue is the bone of contention between Ganapathi Sastri, a classical musician, and Sooryam, his son, trained in classical music. Sooryam, sensitive to the world around him, always goes to the help of the poor. The "ideological" conflict strains their relations. Sooryam settles in a village and devotes himself to rural upliftment. As a consequence, the village has no crime, no police station and no political party. The Prime Minister is scheduled to visit the village to honour Sooryam.

Moved by the exemplary social consciousness of Sooryam, Ganapathi Sastri offers himself to do his mite for the society.

रुगमिणी

मलयालम/110 मिनट

निर्माण: एस.सी. पिल्लै/गिगी अब्राहम **निर्देशन:** के.पी. कुमारन **पटकथा:** के.पी. कुमारन/माधवी कुट्टी **मुख्य अभिनेता:** नेडु मुडि वेणु **मुख्य अभिनेत्री:** मवेलिकरा पोन्नम्मा **सह-अभिनेता:** अशोकन/मधुरीमा **सह-अभिनेत्री:** लिजी **बाल कलाकार:** कुमारी अंजु **छायांकन:** के.जी. जयन **संपादन:** वेणु गोपाल **कला निर्देशन:** आर.एस. मुधु **वेशभूषा:** इग्नेशियस **संगीत निर्देशन:** देवराजन

रुगमिणी बारह साल की मासूम लड़की है। उसका सौतेला पिता उसके साथ बलात्कार करता है। रुगमिणी की माँ उसे शहर के एक वेश्यालय में लाती है जहाँ वह स्वयं रहा करती थी। रुगमिणी जल्दी ही वहाँ की दूसरी लड़कियों से हिल-मिल जाती है। सीता अपना पेट दबा कर हँसती है और सफेदी किये हुये मकानों की चर्चा करती है, जिस तरह के अपने पिता के मकान में वह रहा करती थी। एक और वेश्या राधा अपने प्रेमी को याद करती है जो अब भी उसे खत लिखता है। सरस्वती एक विवाहिता है जो अपनी कमाई का पैसा अपने पति को दे देती है। उसका पति महीने में एक बार उसे मिलने आता है। एक और वेश्या मीरा है, जो अपने आप को कृष्ण की दीवानी मीरा समझती थी। वेश्यालय की मालकिन सत्याबाई इन लड़कियों को अपनी बेटियों की तरह मानती है। वहाँ सभी खुश हैं लेकिन उस इमारत का मालिक अदालत से इन लोगों को बेदखल करने का आदेश ले आता है। सत्याबाई सड़क के किनारे बैठी हुई आते-जाते वाहनों को निहार रही है और उसे लड़कियों ने घेर रखा है तथा चारों ओर सामान बिखरा हुआ है।

Malayalam/110 mts.

RUGMINI

Producer: S.C. Pillai/Gigy Abraham **Director:** K.P. Kumaran **Screenplay Writers:** K.P. Kumaran/Madhavi Kutty **Leading Actor:** Nedumudi Venu **Leading Actress:** Mavelikara Ponnamma **Supporting Actor:** Asokan/Madureema **Supporting Actress:** Lizy **Child Artiste:** Kumari Anju **Cameraman:** K.G. Jayan **Editor:** Venugopal **Art Director:** R.S. Madhu **Costume Designer:** Ignatius **Music Director:** Devarajan

Rugmini, a 12-year-old innocent girl, molested by her step father, is brought to a city brothel by her mother who herself was an inmate there. Rugmini immediately makes friends with the other inmates of the house. Sita, used to clutching her stomach whenever she laughs, talks of white-lime washed houses she used to live in at her father's; Radha, jilted by her lover still continues writing love letters to her; Saraswati, a married woman, who gives away her earnings to her husband who visits her once every month; and Meera, who always thought herself to be the divine Meera in love with Lord Krishna. Satyabai, the brothel Madam, who considers the inmates as her daughters. Circumstances take a happy turn and everyone of them is happy at a bright prospect but the landlord has taken out a decree for eviction. Huddled with her girls and surrounded by luggage, Satyabai is sitting on the roadside watching the traffic go by.

सलाम बाम्बे

हिन्दी/113 मिनट

निर्माण: राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम/मीरा बाई फिल्म्स/टेलीविजन **निर्देशन:** मीरा नायर **पटकथा:** सुनी तारापुरवाला **मुख्य अभिनेता:** नाना पाटेकर **मुख्य अभिनेत्री:** अनीता कंवर **सह-अभिनेता:** रघु **सह-अभिनेत्री:** चन्द्रा **बाल कलाकार:** शफीक सैयद/हंसाविट्ठल **छायांकन:** संदीसिसेल **ध्वनि आलेखन:** जुवान रिडरिग **संपादन:** बैरी अलैक्ज़ेंडर ब्राऊन **कला निर्देशन:** नितीन देसाई/नितीश राय **वेशभूषा:** मिच एप्स्टीन **पार्श्व गायिका:** विजय श्री

इस फिल्म में बम्बई में गलियों में घूमने वाले उन बच्चों का जीवन दर्शाया गया है जो आवारागर्दी और इधर-उधर का काम करके जिन्दगी गुजारते हैं। दस साल का लड़का कृष्ण किसी अनजान कस्बे में अपने घर जाने के लिए बस पकड़ता है लेकिन वह बहुत बड़े शहर बम्बई में जा पहुँचता है। वह जिस जगह पहुँचता है वहाँ ग्रांड रोड रेलवे स्टेशन के बाहर कूड़े के ढेर से कुछ दूर लड़कों की एक मंडली रहती है। नशीली चीजों का सेवन करने वाला चिल्लम, कृष्ण का खास दोस्त बन जाता है। चिल्लम बाबा के लिए नशीले पदार्थ बेचता भी है। बाबा स्टेशन के सामने एक वेश्या रेखा और उनकी छः साल की लड़की मन्जू के साथ रहता है। तभी इन लोगों के बीच एक युवती आ पहुँचती है जिसे वेश्या बनाने के लिए लाया गया है। कहानी के अन्त में कृष्ण को एकदम बदला हुआ दिखाया गया है। वह भोले-भाले ''मुन्डू'' की बजाए रोबदार और चालाक लड़के के रूप में आमने आता है।

Hindi/113 mts.

SALAAM BOMBAY

Producer: NFDC/Mirabai Films/Doordarshan **Director:** Mira Nair **Screenplay Writer:** Sooni Taraporewala **Leading Actor:** Nana Patekar **Leading Actress:** Anita Kanwar **Supporting Actor:** Raghu **Supporting Actress:** Chandra **Child Artistes:** Shafiq Syed/Hansa Vithal **Cameraman:** Sandi Sissel **Audiographer:** Juan Rodrigue **Editor:** Barry Alexander Brown **Art Director:** Nitin Desai/Nitish Roy **Costume Designer:** Mitch Epstein **Music Director:** L. Subramaniam **Female Playback Singer:** Vijay Shree.

The film incorporates the different worlds of street children in Bombay who survive precariously and ingeniously by doing whatever they can. Krishna, a ten-year-old boy, stranded in a strange town, boards a bus to go back home. Instead, he finds himself in the big city of Bombay. The world he inhabits as Chaipau consists of a gang of boys who live outside Grand Road station, next to the garbage dump. A drug addict, Chillum, who sells drugs for Baba, is Krishna's special friend. Baba lives opposite the station with Rekha, a prostitute, and their six-year-old daughter, Manju. Into this world arrives a young girl to be initiated into prostitution. ... The end shows Krishna a different, changed man. From an innocent "Mundoo" he has grown up into an angry and streetwise boy.

तृषाग्नि

हिन्दी/90 मिनट

निर्माण/निर्देशन/पटकथा: नबेन्दु घोष **मुख्य अभिनेता:** नाना पाटेकर **मुख्य अभिनेत्री:** पल्लवी जोशी **सह-अभिनेता:** आलोक नाथ **छायांकन:** मलय दास गुप्त **ध्वनि आलेखन:** आश्विन बलसावर **संपादन:** अफाक हुसैन **कला निर्देशन/वेशभूषा:** गौतम सेन **संगीत निर्देशन:** सलिल चौधरी **गीत:** योगेश **पार्श्व गायिका:** आशा भौंसले

सरीपुट नगर में भीषण तूफान आता है। केवल बौद्ध विहार की एक मंजिल तथा चार व्यक्ति इस विनाश लीला से बच जाते हैं। ये हैं एक सन्यासी पितुमित्त, उसका शिष्य उच्छन्द तथा दो बच्चे निर्वाण और इति। बीस वर्ष बीत जाते हैं, निर्वाण और इति एक दूसरे से प्रेम करने लगते हैं। एक दिन उच्छन्द ने इति को स्नान करते देखा तो वह उसके रूप पर मोहित हो गया। उसके मन में आध्यात्मिक संघर्ष छिड़ गया। निर्वाण ने तपस्या के बल पर सांसारिक इच्छाओं को त्याग कर उपसम्पद (सन्यास) का पद प्राप्त कर लिया लेकिन उस पर इति के रूप का जादू समाप्त नहीं हुआ था और वह पुनः इच्छाओं के संसार में लौट आया। उन दोनों को बौद्ध विहार से निष्कासित कर दिया गया। उस सब से जीवन में इस तरह एक और तूफान हलचल मचाने लगता है।

Hindi/90 mts.
TRISHAGNI

Producer/Director/Secreenplay Writer: Nabendu Ghosh **Leading Actor:** Nana Patekar **Leading Actress:** Pallavi Joshi **Supporting Actor:** Alok Nath **Cameraman:** Moloy Dasgupta **Audiographer:** Aswyn Balsawar **Editor:** Afaque Husain **Art Director/Costume Designer:** Gautam Sen **Music Director:** Salil Chowdhury **Lyricist:** Yogesh **Female Playback Singer:** Asha Bhonsle

A fierce storm wiped out the city of Sariput leaving behind only one storey of Buddhist Vihara and four surviving human beings—Pitthumitta, the monk; Uchanda, the disciple; and two children, Nirvana and Iti. Twenty years pass. Love flowered between Nirvana and Iti. The wet charm of Iti, when Uchanda saw her bathing one day, haunt him. A spiritual struggle waged within him. Renouncing worldly desires and by his tapasya, Nirvana won Upasampada ("monkhood"). But Iti worked her charms on Nirvana and swayed him back to desire. Both of them fall from the grace and are turned out of the monastery. Another storm wipes out all of them.

वैशाली

मलयालम/137 मिनट

निर्माण: एम.एम. रामचन्द्रन **निर्देशन/संपादन:** भारतन **पटकथा:** एम.टी. वासुदेवन नायर **मुख्य अभिनेता:** संजय मित्रा **मुख्य अभिनेत्री:** सुपर्णा आनन्द **सह-अभिनेता:** बाबू एंटोनी **सह-अभिनेत्री:** गीता **छायांकन:** मधु अंबट **ध्वनि आलेखन:** लक्ष्मी नारायण **कला निर्देशन/वेशभूषा:** पी. कृष्ण मूर्ति **संगीत निर्देशन:** रवि **गीत:** ओ.एन.वी. कुरूप **पार्श्व गायिका:** चित्रा

अंग देश में कई बार यज्ञ करने के बावजूद बारह वर्षों तक बारिश नहीं हुई। राजगुरु सुझाव देते हैं कि विशेष यज्ञ करने के लिए जंगल में रह रहे एक युवा सन्यासी ऋषिश्रृंग को बुलवाया जाए। राजा की अवैध संतान वैशाली को इस सन्यासी को मुग्ध करने के लिए चुना जाता है। वैशाली की माँ मालिनी, जो कि प्रसिद्ध देवदासी है, अपनी बेटी को सन्यासी को रिझाने के कठिन काम के लिए इस शर्त पर भेजने को सहमत होती है कि राजा वैशाली को अपनी पुत्री के रूप में स्वीकार कर लेंगे। ऋषिश्रृंग के पिता के क्रोध को झेलती हुई और कई तरह की कठिनाईयों का सामना करती हुई वैशाली सन्यासी को अपने रूप जाल में बांधने में सफल हो जाती है। ऋषिश्रृंग यज्ञ करता है, जिससे बारिश हो जाती है। लोग बहुत प्रसन्न होते हैं। सबसे अधिक खुशी मालिनी को होती है क्योंकि पन्द्रह वर्षों से उसके मन में छिपी इच्छा पूरी होने का समय आ गया है।

Malayalam/137 mts.

VAISALI

Producer: M.M. Ramachandran **Director/Editor:** Bharathan **Screenplay Writer:** M.T. Vasudevan Nair **Leading Actor:** Sanjay Mitra **Leading Actress:** Suparna Anand **Supporting Actor:** Babu Antony **Supporting Actress:** Geetha **Cameraman:** Madhu Ambat **Audiographer:** Laxmi Narayan **Art Director/Costume Designer:** P. Krishna Moorthy **Music Director:** Ravi **Lyricist:** O.N.V. Kurup **Famale Playback Singer:** Chithra

In spite of many yaganas, for 12 years it had not rained in Angadesha. The Rajguru suggests to get Rishyashringa, a young ascetic, living among the denizens of the jungle, to perform a special yagna. Vaishali, illegitimate daughter of the king, is chosen to tempt the ascetic. Malini, a famous devdasi, mother of Vaishali, agrees to send her daughter on the near-suicidal mission only if the king would acknowledge Vaishali as his daughter.

Braving the fury of Rishyashringa's father and overcoming many odds, Vaishali traps the ascetic who had not till then set eyes on a woman. Rishyashringa performs the yagna and it rains. The people are happy. Malini is the happiest—after 15 years her cherished hope will be realised.

वसुन्धरा

हिन्दी/138 मिनट

निर्माण/निर्देशन/पटकथा/संपादन/कला निर्देशन: अशोक आहूजा **मुख्य अभिनेता:** नसीरुद्दीन शाह, **मुख्य अभिनेत्री:** नीना गुप्ता **सह-अभिनेता:** बैंजामीन गिलानी/टोम अल्टर/विजय कश्यप/राजा बुन्देला/मोहन महर्षि **छायांकन:** राजन कोठारी **ध्वनि आलेखन:** पैडी/करनैल/अशोक शुक्ला/एस.पी. रामनाथन **संगीत निर्देशन:** उत्तम सिंह

विदेशों में बसी भारतीय मूल की एक युवती ईचिता पर्यावरण के बारे में अनुसंधान करने के लिए हिमालय पर्वत पर जाती है, उसके साथ पश्चिमी वातावरण में पला उसका दोस्त जेफ भी है। अनुसंधान के दौरान ईचिता की तीन व्यक्तियों से मुलाकात होती है। इनमें से एक है युवा और गतिशील एस.डी.एम. जो चूने की बड़े पैमाने पर की जा रही खुदाई के कारण पर्यावरण के नुकसान को रोकने की कोशिश कर रहा है। दूसरा है चूने की खदान के मालिक का लड़का जो प्रकृति को धन कमाने का साधन मानता है। तीसरा है गांव का युवा प्रधान जिसे प्रकृति से बहुत लगाव है। चूने की खदान में भयंकर दुर्घटना होती है जिसके लिए खदान का मालिक व उसका लड़का सीधे जिम्मेदार है। जेफ उस जगह को छोड़कर चला जाता है। एस.डी.एम. कागजी कार्रवाई ही में उलझा रहता है। केवल प्रधान ही हिम्मत से काम लेता है और उच्चतम न्यायालय में अपील करके चूने की खुदाई को रुकवाने में सफल हो जाता है।

Hindi/138 mts.

VASUNDHARA

Producer/Director/Screenplay Writer/Editor/Art Director: Ashok Ahuja **Leading Actor:** Naseeruddin Shah **Leading Actress:** Neena Gupta **Supporting Actor:** Benjamin Gilani/Tom Alter/Vijay/Kashyap/ Raja Bundela/Mohan Maharishi **Cameraman:** Rajen Kothari **Audiographers:** Paddy/Karnail/Ashok Shukla/S.P. Ramanathan **Music Director:** Uttam Singh.

Ichhita, a young girl of Indian origin, is on a brief visit to the Himalayas to do ecological research. She is accompanied by her friend, Jeff, from the affluent West. During her research she meets three other people: a young dynamic SDM trying to stop the damage to the environment by widespread quarrying for limestone; the quarry owner's son who looks upon Nature as a source of financial gain; and a young Pradhan whose life is directly related to Nature. A serious quarrying accident takes place for which the quarry owner and his son are directly responsible. Jeff deserts the place. The SDM is caught up in red-tapism. Only the Pradhan's brave efforts culminating in his appeal to the Supreme Court succeed in putting a stop to the harmful mining.

कथासार :
गैर-कथाचित्र

SYNOPSES:
NON-FEATURE
FILMS

बिफोर माई आईज

केवल संगीत/23 मिनट

निर्माण: संपादन: ललिता कृष्ण, **निर्देशन/पटकथा:** मणि कौल **छायांकन:** पीयूष शाह **ध्वनि आलेखन:** पद्मनाभन

इस फिल्म में कश्मीर घाटी की प्राकृतिक छटा को बड़े सुन्दर ढंग से चित्रित किया गया है। फिल्म में संवाद या कमेंन्ट्री का सहारा लिये बिना घाटी की प्रकृति के विविध आयामों को दर्शाया गया है।

BEFORE MY EYES

23 mins.

Producer/Editor: Lalitha Krishna **Director/Screenplay Writer:** Mani Kaul **Cameraman:** Piyush Shah **Audiographer:** Padmnabhan

A "filmscape" study of the Kashmir Valley without any commentary or dialogue and "without rendering the natural dimensions of the valley to identifiable holiday commodities."

चिट्ठी

हिन्दी/32 मिनट

निर्माण: मैसर्स सिनेमार्ट फाउंडेशन **निर्देशन:** सुहासिनी मुले **पटकथा:** तपन बोस, **छायांकन:** सलीम शेख, **ध्वनि आलेखन:** पी.एल. मूर्ति **सम्पादन:** जय प्रकाश दिवान, **मुख्य अभिनेत्री:** रचना श्रीवास्तव, **बाल कलाकार:** आषु श्रीवास्तव

एक युवा दुल्हन ने शादी से पहले झूठ बोलते हुए ये कहा कि वह पढ़ी लिखी है। लेकिन उस समय उसे अपमानित होना पड़ता है जब वह अपने पति की चिट्ठी नहीं पढ़ पाती और उसके ससुर को दूसरों के पास जा कर पत्र पढ़वाना पड़ता है। इसके बाद वह लिखना पढ़ना सीखने का फैसला करती है। इस फिल्म में ग्रामीण लोगों में निरक्षरता की समस्या पर प्रकाश डाला गया है और यह दिखाया गया है कि अनपढ़ लोगों को अपने पत्र दूसरों से पढ़वाने में किस तरह परेशानी का सामना करना पड़ता है।

CHITTHI

Hindi/32 mins.

Producer: Cinemart Foundation **Director:** Suhasini Mulay **Screenplay Writer:** Tapan Bose **Leading Actress:** Rachna Srivastava **Child Artiste:** Aasu Srivastava **Cameraman:** Salim Sheikh **Audiogrpaher:** P. L. Murthy **Editor:** Jai Prakash Diwan

A young bride, who before her marriage had lied that she was literate, is embarrassed when she can't read her husband's letter and her father-in-law had to depend on others to have it read for him. She decides to learn the three Rs.

डिस्पोजेशन

33 मिनट

निर्माण: भारतीय फिल्म तथा टेलीविजन संस्थान पुणे, **निर्देशन:** एन.एच. प्रसाद, **मुख्य अभिनेत्री:** डमां बरदोलोइ सिंह **छायांकन:** वसन्त कुमार **ध्वनि आलेखन:** पी.एस. रामटेके, **सम्पादक:** दिलीप पन्डा

यह एक प्रायोगिक/डिप्लोमा फिल्म है जिसमें एक औरत तथा पोलिथीन की एक खाली थैली का चित्रण किया गया है जो अलग-अलग रूप धारण करती है, उड़ कर अलग-अलग स्थानों पर जाती है, आग का शिकार बनती है और आंशिक रूप से जल जाती है। कूड़ा करकट बटोरने वाला एक व्यक्ति जली थैली को उठा कर कारखाने में भेज देता है जहाँ उसे नया आकार दे दिया जाता है।

DISPOSSESSION

33 mins.

Producer: Films and Television Institute of India, Pune **Director:** N.H. Prasad **Leading Actress:** Uma Bardolaoi Singh **Cameraman:** Vasanth Kumar **Audiographer:** P.M. Ramteke **Editor:** Dilip Panda

An experimental/diploma film about a woman and an empty polythene bag which takes different shapes, flies off to different places, catches fire and is partly burnt. A garbage collector picks up the burnt bag and sends it to the factory to take a new form.

द डुयो

अंग्रेजी/20 मिनट

निर्माण/निर्देशन पटकथा: सनत कुमार दास गुप्ता, **छायांकन:** तपन बगालरी, **ध्वनि आलेखन:** दुर्गा मित्रा, **संपादन:** प्रशांत डे, **संगीत निर्देशन:** पार्थसेन गुप्त

इस फिल्मू में भारत में कांच और शीशे के उद्योगों में निर्माण कौशल की परम्परा तथा धरोहर को चित्रित किया गया है। फिल्म में इस उद्योग के अतीत तथा हाल के वर्षों में इसमें हुये विकास को भी दर्शाया गया है।

THE DUO

English/20 mins.

Producer/Director/Screenplay Writer: Sanat Kumar Das Gupta **Cameraman:** Tapan Bagalri **Audiographer:** Durga Mitra **Editor:** Prosanto Dey **Music Director:** Partho Sen Gupta

The film traces the heritage and tradition of craftsmanship in ceramic and glass making industries in India, their growth and development in the past and the phenomenal progress they have made in recent times.

कनक-पुरन्दर

कन्नड़

निर्माण: गिरीश कर्नाड (फिल्म प्रभाग के लिए),
निर्देशन: गिरीश कर्नाड, **छायांकन:** ए.के. बीर, **सम्पादन:** सुरेश अर्स **संगीत निर्देशन:** भास्कर चन्दावरकर

इस फिल्म में कर्नाटक के दो सन्त कवियों के जीवन को चित्रित किया गया है। पुरन्दर दास एक निर्धन ब्रहाण था और कनक एक चरवाह था। इन दोनों ने मध्य काल में भक्ति आंदोलन चलाया जो समूचे देश में फैल गया। पुरन्दर दास ने कर्नाटक संगीत को जन्म दिया और उन्हें कर्नाटक संगीत पितामह कहा जाता है।

KANAKA-PURANDARA

Kannada

Producer: Girish Karnad (for Films Division) **Director:** Girish Karnad **Cameraman:** A.K. Bir **Editor:** Suresh Urs **Music Director:** Bhaskar Chandavarkar

The film tells the story of Purandaradasa, a pennyless Brahmin, and Kanaka, a shepherd, the saint-poets who spearheaded in Karnataka a revolution called Bhakti, which spread across mediaeval India like a lit fuse. Purandaradasa laid the foundation of Karnatik music and is known as Karnatik Sangeet Pitamaha.

लछमी

हिन्दी/17 मिनट

निर्माण: के.के. गर्ग (फिल्म प्रभाग के लिए) **निर्देशन:** ओम प्रकाश शर्मा
पटकथा: प्रताप सिंह बिष्ट **छायांकन:** एच.आर. डोरेस्वामी
ध्वनि आलेखन: शुभाशीभ चौधरी **संपादन:** फूलचन्द
संगीत निर्देशन: वरुण कुमार गुप्त

लछमी एक ग्रहणी है जो जवानी में ही बीमार और बूढ़ी लगने लगती है। सात साल में उसके तीन बच्चे पैदा हो गये हैं और चौथा पेट में है। तीन बच्चों को पालने में उसकी सारी सेहत खराब हो गई है और जीवन में दुख और उदासी छा गई है। क्या कोई डाक्टर उसे उसकी सेहत लौटा सकता है।

LACCHMI

Hindi/17 mins.

Producer: K.K. Garg (for Films Division) **Director:** Om Prakash Sharma **Screenplay Writer** P.S. Vist **Cameraman:** H.R. Doreswamy **Audiographer:** Subhashibh Chaudhary **Editor:** Fulchand **Music Director:** Varun Kumar Gupta

Lacchmi, a housewife, looks sick and aged before her age. In seven years she has given birth to three children and the fourth is on the way. Bringing up three children has taken its toll. She has lost her health and happiness. Can a doctor help her regain them?

मा ऊरू

तेलुगु/55 मिनट

निर्माण: बी. रामचन्द्र राव, **निर्देशन/पटकथा/कला निर्देशन/संगीत निर्देशन:** बी. नरसिंग राव, **छायांकन:** ए.के. बीर, **ध्वनि आलेखन:** अरुण शर्मा, **सम्पादन:** डी. राजगोपाल, **वेशभूषा:** सुदर्शन.

इस फिल्म में ग्रामीण जीवन की यादों को चित्रित किया गया है। गांव वालों के रीति-रिवाज, खेत वास्तुशिल्प, गोबर के ढेर और लोक कलाकारों को जीवन के लिए कलाकृतियां बनाते तथा कला के लिये जीते हुये दर्शाया गया है।

MAA OORU

Telugu/55 mins.

Producer: B. Ramachandra Rao **Director/Screenplay Writer/Art Director/Music Director:** B. Narasinga Rao **Cameraman:** A.K. Bir **Audiographer:** Arun Sharma **Editor:** D. Rajagopal **Costume Designer:** Sudarshan

The film is a fond caress of the fathomless memories of village life, its ethos, its outlying fields, architecture, cow-dung heaps, the folk artistes in their daily chores of living to perform and performing to live.

मोर दैन ए सक्सैस स्टोरी (समाचार चित्र संख्या-129)

अंग्रेजी/15 मिनट

निर्माण: यश चौधरी, **निर्देशन:** बीरेन दास, **छायांकन:** के.बी. नायर, **संगीत निर्देशन:** रघुनाथ सेठ, **संपादन:** प्रभाकर शिंदे, **ध्वनि आलेखन:** एफ.ए. वारिस/जे.एम. रामटेके।

इस फिल्म में चार विद्यार्थियों की सफलता की कहानी को चित्रित किया गया है। इनमें से एक बम्बई की एक गन्दी बस्ती में रहने वाला बच्चा, दो नेत्रहीन भाई तथा एक लड़की है जो ब्लड कैंसर से पीड़ित है,ये चारों बच्चे अदम्य साहस का परिचय देते हैं तथा भाग्य से लोहा लेते हुए सफलता प्राप्त करते हैं।

NEWS MAGAZINE NO. 129

MORE THAN A SUCCESS STORY

English/15 mins.

Producer: Yash Chaudhary (for Films Division) **Director:** Biren Das **Cameraman:** K.B. Nair **Audiographers:** F.A. Waris/J.M. Ramteke **Editor:** Prabhakar Shinde **Music Director:** Raghunath Seth

The film highlights the success story of four students—a slum dweller from a suburb of Bombay, two blind brothers and a girl suffering from blood cancer. The four children show indomitable courage to brave the misfortune and battle against all odds.

निर्णय

हिन्दी/12 मिनट

निर्माण: बी.आर. शैंडगे (फिल्म प्रभाग), **निर्देशन:** आर.आर. स्वामी, **कार्टून:** आर.आर. स्वामी/वी.एस. शंकरदास/अरूण बालसराफ, **छायांकन (कार्टून):** एम.एस. गंगाधर, **ध्वनि आलेखन:** जे.एम. रामटेके/संजय खराड़े, **संगीत निर्देशन:** रघुनाथ सेठ, **संपादन:** यू.एच. नागवेकर।

इस फिल्म में वास्तविक पात्रों और कार्टूनों के मेल से पुरुषों तथा महिलाओं की नसबन्दी का चित्रण किया गया है। इसमें यह भी दिखाया गया है कि औरत के पेट में किस तरह बच्चा आता है और किस तरह से नसबन्दी से गर्भ धारण को रोका जाता है।

NIRNAY

Hindi/12 mins.

Producer: B.R. Shendge (for Films Division) **Director:** R.R. Swamy **Animators:** R.R. Swamy/V.S. Shankardas/Arun Balsaraf **Cameraman** (Animation): M.S. Gangadhar **Audiographers:** J.M. Ramteke/Sanjay Kharade **Editor:** U.H. Nagwekar **Music Director:** Raghunath Seth

Combining live and animated characters, the film deals with male and female sterilisation, how the conception takes place in female body and how sterilisation prevents the conception.

रिकन्सट्रक्टिव सर्जरी लेप्रोसी (हैन्ड)

अंग्रेजी/14 मिनट

निर्माण/पटकथा: डा. जाल मेहता, **निर्देशन:** अनिल रेवंकर, **छायांकन:** भरत नेरकर, **सम्पादन:** अर्चना, **संगीत निर्देशन:** पी.पी. वैघनाथन

इस फिल्म में कुष्ठ रोग से आई अपंगता को ठीक करने के लिए ऊंगलियों और अंगूठे की रिकन्सट्रक्टिव सर्जरी की तकनीक का बहुत सरल और रोचक तरीके से परिचय दिया गया है। इस तरह की सर्जरी से कोढ़ के दाग दूर करने तथा कुष्ठ रोगियों को समाज में सम्मान का स्थान दिलाने में मदद मिलेगी।

RECONSTRUCTIVE SURGERY LEPROSY (HAND)

English/14 mins.

Producer/Screenplay Writer: Dr Jal Mehta **Director:** Anil Revankar **Cameraman:** Bharat Nerkar **Editor:** Archana **Music Director:** P.P. Vaidyanathan

The film details, in a simple and vivid manner, the procedures and innovations in techniques of reconstructive surgery of fingers and thumb for the correction of leprous deformities. Reconstructive surgery will not only help overcome the stigma but also rehabilitate the leprosy patients.

स्क्रोल पेंटर्ज ऑफ बीरभूम (पटूआ)

अंग्रेजी/17 मिनट

निर्माण: दिलीप घोष, **निर्देशन/पटकथा/संगीत:** राजा मित्रा, **छायांकन:** कमल नायक **सम्पादन:** बुलु घोष, **कला निर्देशन:** शतदल मित्रा

इस फिल्म में बंगाल के गांवों में कागज के पटुओं पर चित्रकारी की प्रक्रिया को दर्शाया गया है। फिल्म में इस लोक कला के विभिन्न पहलुओं के रंग तथा कुचि को बनाने के तरीकों की भी जानकारी दी गई है।

SCROLL PAINTERS OF BIRBHUM (PATUA)

English/17 mins.

Producer: Dilip Ghosh **Director/Screenplay Writer/Music Director:** Raja Mitra **Cameraman:** Kamal Nayek **Editor:** Bulu Ghosh **Art Director:** Satadal Mitra

The film depicts the process of preparation of typical paintings on paper scrolls in different stages, and mode of painting and making of colours and brushes, in rural Bengal.

सीड्स आफ होप

अंग्रेजी/23 मिनट

निर्माण: ईको मीडिया **निर्देशन:** शेखर दतात्री/रोमुलुस व्हीटकर **छायांकन:** शेखर दतात्री **संपादन:** शेखर दतात्री/रेवती मुखर्जी **संगीत निर्देशन:** नादक

इस फिल्म में और अधिक पेड़ लगाने तथा बनों का बेहतर प्रबन्ध करने की सीख दी गई है। इन दोनों वस्तुओं का और कोई विकल्प नहीं है और मनुष्य के लिये अमूल्य खजाने हैं।

SEEDS OF HOPE

English/23 mins.

Producer: Eco Media **Directors:** Shekar Dattatri/Romulus Whitaker **Cameraman:** Shekar Dattatri **Editors:** Shekar Dattatri/Revati Mukerjee **Music Director:** Nadaka

The film is a practical plea for planting more trees and management of forests which are key to mankind's survival. Besides being irreplaceable, the two treasures are too valuable to be squandered away.

द स्टोरी आफ टिबल्यू

इदु भाषा/60 मिनट

निर्माण/निर्देशन/छायांकन: सन्तोष सिवन (फिल्म प्रभाग के लिए) **संपादन:** उन्नीथन राजशेखर **कला निर्देशन:** अन्यी लिप्पो **संगीत निर्देशन:** जार्ज

इस फिल्म में ये दिखाया गया है कि सात वर्ष की चंचल आदिवासी लड़की टिबल्यू की क्षमता और समझदारी को किस तरह मोड़ दिया जाता है कि वह पड़ाई लिखाई तथा खेल कूद में रुचि लेने लगती है और वह दूसरों के लिए आदर्श बन जाती है फिल्म की कहानी हास्य व्यंग की शैली में प्रस्तुत की गई है।

STORY OF TIBLU

Idu language/60 mins.

Producer/Director/Cameraman: Santosh Sivan (for Films Division) **Editor:** Unnithan Rajasekhar **Art Director:** Anyi Lippo **Music Director:** George.

How the energies and intelligence of a seven-year-old naughty tribal girl, TIBLU, are channelised to make her take keen interest in studies and games and present her as a model student for others to follow is the film's theme, narrated in an humorous style.

वाईसिज फरोम बलियापल

अंग्रेजी /43 मिनट

निर्माण: मैसर्स विक्टर प्रोडक्शनुस **निर्देशन:** वसुधा जोशी/रंजन पालित **छायांकन:** रंजन पालित, **संपादन:** महादेव शी, **ध्वनि आलेखन:** सुरेश राजमणि

इस फिल्म में उड़ीसा के गांव बलियापल के लोगों के जोरदार और अहिंसक विरोध को दर्शाया गया है। सरकार ने इस गांव को मिसाइल परीक्षण क्षेत्र बनाने की योजना तैयार की। गांव के लोगों ने अपनी इस पुश्तैनी भूमि पर रहने और अपने अधिकार को जताते हुए गांव को खाली करने का सामूहिक विरोध किया।

VOICES FROM BALIAPAL

English/43 mins.

Producer: Vector Productions **Director:** Vasudha Joshi/Ranjan Palit **Audiographer:** Suresh Rajamani **Cameraman:** Rañjan Palit **Editor:** Mahadev Shi

A forthright and non-violent protest by the villagers of Baliapal, a village in Orissa, which the government planned to convert into a missile testing range. Collectively, the villagers refuse to be evicted and assert their right to live on their ancestral land.

Compiled by the Directorate of Film Festivals; designed and produced by the Directorate of Advertising and Visual Publicity, Ministry of I&B, Government of India, and printed at Nu Tech Photolithographers, New Delhi